# राजनीतिक घेराव

# राजनीतिक घेराव

लेखक: अंशुमन भगत, बालाजी मिश्रा

**प्रकाशक**

ऑथर्स ट्री पब्लिशिंग हॉउस

Authors Tree Publishing House
W/13, Near Housing Board Colony
Bilaspur, Chhattisgarh 495001
Published By Authors Tree Publishing 2022

**Copyright © Ansuman Bhagat, Balaji Mishra 2022**
**All Rights Reserved.**

ISBN: 978-93-91078-86-7

भाषा: हिंदी

सर्वाधिकार: अंशुमन भगत, बालाजी मिश्रा

प्रथम संस्करण: 2022

मूल्य:₹449/- प्रति

---

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि लेखक या प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनःप्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्द बंद या खुले किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के खरीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनःप्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने की पद्धति अपनाने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलैक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटो कॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के लेखक या प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

# राजनीतिक घेराव

लेखक

अंशुमन भगत | बालाजी मिश्रा

# सारांश

लेखक अंशुमन भगत और बालाजी मिश्रा ने राजनीति के हर क्षेत्र में उसके प्रभाव को इस पुस्तक में दर्शाया है क्योंकि राजनीति एक ऐसा विषय है जिस पर अलग-अलग लोगों के भिन्न विचार होते है, राजनीतिक घेराव यह पुस्तक लोगों की सोच और उनके भावनाओ को समझकर लिखा गया है। यह पुस्तक किसी व्यक्ति या किसी एक राजनीतिक दल का समर्थन नहीं करता है इस पुस्तक का लिखने का एकमात्र उद्देश्य यही है कि राजनीतिक विषय पर लोग अपने खुद के विचार और भावना को खुलकर समाज में सामने ला सके।

इस विषय से संबंधित प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति की सोच और उनके विचार को प्रकट किया गया है जो समय के अनुसार राजनीति के विषय पर लोगो के भीतर पनपता है, किस प्रकार लोग सरकार द्वारा किए कार्यो को आंकते हैं और सरकार के प्रति लोगों की क्या भावना होती है? इन सभी मुद्दों का बड़े बारीकी से उल्लेख किया गया है।

लोगो की सरकार के प्रति उनकी सोच कहां तक सही है और कहां गलत, इसी के साथ देश में चल रहे कई ऐसे मुद्दे हैं जो हमेशा से चर्चा का विषय तो ज़रूर रहा है किंतु इसपर कभी समाधान नहीं निकलता और यह सिर्फ जनता के जहन मे केवल एक विचार बनकर रह जाता है इन्हीं भिन्न विचारों को "राजनीतिक घेराव" पूस्तक का रूप दिया गया है ताकि राजनीति को हर कोई करीब से जान सके।

आज बात करे किसी क्षेत्र की या किसी भी व्यक्ति की, तो वह कहीं न कहीं राजनीति से जरूर घिरा हुआ होता है। चाहे आम आदमी हो या कोई प्रसिद्ध हस्ती, इस पुस्तक में ऐसे अनेकों मुद्दे पर जिक्र किया गया है जो एक तरीके से समाज में बदलाव ला सकता है एक व्यक्ति अपना कीमती वोट अपने भरोसेमंद नेता को जिताने के लिए डालता है क्योंकि उनसे उन्हें कई उम्मीदें होती है, जो समाज की भलाई और विकास को महत्व दे सके। ऐसे एक नहीं करोड़ों होते हैं जो उम्मीद करते हैं कि हमारे देश में एक ईमानदार सरकार आ जाए। जो नागरिकों के हित में फैसले ले सके, जिससे देश की जनता के साथ देश भी तरक्की करें किंतु ऐसा नेता या ऐसी सरकार आपकी उम्मीदों पर खरी ना उतरे तो उस वक़्त उस आम जनता के जहन मे सरकार के प्रति किस प्रकार की भावना जन्म लेती है? और सही मायने मे वास्तविकता क्या होती है? इस विषय पर काफी बारीकी से पुस्तक में उल्लेख किया गया है साथ ही अब तक के राजनीतिक सफर पर भी प्रकाश डाला गया है ताकि हर व्यक्ति को अच्छे से ज्ञात हो कि देश की शुरुआती दौर की राजनीति और वर्तमान की राजनीति से इस देश में क्या-क्या बदलाव हुए हैं। देश में कई बदलाव करने हैं और धीरे-धीरे दिख भी रहा है किंतु हमें राजनीति को बदलना होगा और यह जरूरी भी है ताकि इस देश को एक अच्छा नेता और एक अच्छी राजनीतिक दल मिल सके। यह कैसे होगा? इसका वर्णन भी इस किताब में विस्तार से किया गया है, बदलाव हर कोई चाहता है किंतु आगे कोई नहीं आना चाहता। यह पुस्तक उन जैसों को प्रेरणा देगी जो इस विषय को लेकर गंभीर है और सही मायने में समाज और देश की तरक्की देखना चाहते हैं और यह मुमकिन है। हर कोई गांधी नहीं बन सकता किंतु सभी की एकता और सकारात्मक विचार से बदलाव की क्रांति लाई जा सकती है। जो देश की तरक्की के लिए अत्यंत आवश्यक है।

# लेखक-परिचय

**लेखक - अंशुमन भगत**

अंशुमन भगत 21वीं सदी के एक प्रसिद्ध युवा लेखक हैं जिनका नाम लेखन के क्षेत्र में जमशेदपुर की प्रसिद्ध हस्तियों में सबसे पहले आता है। इसके साथ ही अंशुमन अपनी लेखनी तथा सरल और सुंदर विचारधारा के लिए भी जाने जाते हैं। अंशुमन भगत देश के पहले साहित्यकार हैं जिन्होंने राज्य सरकार से लेखकों के हक और उनकी आजीविका के लिए आवाज उठाई थी। उन्होंने अब तक चार किताबें लिखी हैं और ये सभी किताबें वर्ल्ड वाइड वेब पर बेस्टसेलिंग किताबों की श्रेणी में शामिल है अब तक की लिखी गई इनकी चार पुस्तकें हैं- योर ओन थॉट (2018), बेस्ट इंस्पिरेशनल कोट्स (2020), आर्ट ऑफ मेकिंग साइड इनकम (2021) और एक सफर में (2021)। झारखंड के जमशेदपुर में जन्में अंशुमन की गिनती बेस्टसेलिंग भारतीय लेखकों में होती है। अंशुमन भगत जिन्हें बचपन से ही लिखने का शौक था और मुंबई जाकर उन्होंने कुछ साल फिल्म इंडस्ट्री में कास्टिंग डायरेक्टर के तौर पर काम किया। शुरुआत में वह अभिनेता बनने के लिए मुंबई गए थे, लेकिन कहा जाता है कि जहां चाह होती है वहां राह होती है और आज वह लेखन के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य करते दिख रहे है। अंशुमन भगत की किताब "एक

सफर में" के लिए उन्हें बहुत प्रशंसा मिली है और उन्हें उनके लेखन के लिए कई सम्मानों से सम्मानित भी किया गया है। साथ ही अंशुमन भगत को साहित्य में अमिट छाप छोड़ने के लिए MyGov द्वारा उनकी सराहना भी की गई है।

अंशुमन भगत ज्यादातर स्वयं सहायता प्रेरक (सेल्फ हेल्प मोटिवेशनल) किताबें लिखते हैं। यही वजह है कि वे तेजी से युवाओं के बीच लोकप्रिय हुए हैं। अंशुमन भगत के विचार केवल किताबों तक सीमित नहीं है बल्कि इनके विचार सोशल मीडिया पर भी काफी लोकप्रिय हैं, वे अपने विचारों को सरल और सुंदर भाषा में लिखते हैं जो सबकी समझ में आ जाती है। उनकी किताबें युवाओं को प्रेरित करती है जिससे प्रेरणा पाकर लक्ष्य निर्धारित करना आसान हो जाता है और इससे आत्मविश्वास बढ़ता है। आज के समय में बहुत कम युवा ऐसा कर रहे हैं कि वे दूसरे युवाओं को प्रेरणा दें। खासकर लेखनी की बातें करें तो मनोरंजन के दृष्टिकोण से किताबों की कमी नहीं लेकिन जब बात मोटिवेशन की आती है तब ये संख्या कम नज़र आती है। क्योंकि टेक्नोलॉजी के इस दबदबे के ज़माने में इंसान खुद से दूर होता जा रहा है और आने वाले समय में यह टेक्नोलॉजी हमारे जीवन पर हावी ना हो जाए इसलिए अंशुमन भगत अपने सार्थक प्रयासों से युवाओं के मन में सकारात्मकता भर रहे हैं जो आज के युवाओं के लिए बहुत जरुरी है।

## लेखक - बालाजी मिश्रा

युवा लेखक "बालाजी मिश्रा" पिछले ४ वर्षो से लेखनी के छेत्र मे अपने रुचि को बढ़ावा दे रहे है, मुंबई स्थित "बालाजी मिश्रा" पेशे से "फ्रीलांसिंग कंटेंट राइटर" के रूप मे काम कर रहे है, अब तक उन्होंने कई विषयों पर अपने विचारों को लोगो के बीच रखा है इसी के साथ ही उन्होंने अपनी पहली पुस्तक "आइडीयोलॉजि ऑफ़ फेमस पर्सोनालिटी" प्रकाशित की है।

बालाजी मानते है, एक लेखक अपने भीतर यह इच्छा रखता है कि उसके कलम द्वारा लिखे शब्दो से समाज मे बदलाव हो, और इसी उम्मीद से एक लेखक अपने विचारों को एक पुस्तक का स्वरूप देता है, आज लेखन के क्षेत्र मे भले शोहरत ना हासिल हो किंतु किसी लेखक के लिए उसके कलम द्वारा लिखे विचारों की सराहना ही उसके लिए शोहरत होती है।

# राजनीति पर अन्य लेखकों के विचार।

**पद्मा मिश्रा, मीडिया प्रभारी (सहयोग)**

राजनीति- मेरी राय में!

मेरे विचार से "राजनीति कूटनीति का पर्याय है, लेकिन यदि कूटनीति राष्ट्र हित में और राजनीति जनहित में हो, तो उस राष्ट्र का विकास अवश्यंभावी है"

पहले हमारे सामने हमारे आदर्श राजनेता हुआ करते थे,जिनकै जीवन मूल्यों को हम अपनाने की कोशिश करते परंतु अब कुछ मुट्ठी भर नेताओं को छोड़कर राजनीति में ऐसा कोई नहीं बचा जो हमारा आदर्श बन सके, राजनीति अब वो दलदल बन गई है जिसमें हर कोई लिप्त नहीं होना चाहता,, मैं व्यक्तिगत रूप से दूरी बनाए रखती हूं, राजनीति में केवल अनिवार्य परिवर्तन और सूचनाओं के अतिरिक्त छल कपट,छल छंदों की राजनीति आम आदमी को भटका रही है,समाज हित में लिया गया कोई भी फैसला,, कोई कानून,लागू होने से पहले ही राजनीति का शिकार हो कर दलगत राजनीति में बदल जाता है, किसी अच्छे निर्णय का श्रेय सभी दल लेना चाहते हैं, परंतु जब देश संकटों के दौर से गुजर रहा हो तब भी एकता कहीं नजर नहीं आती,, मैं स्वयं स्वतंत्रता सेनानी के परिवार से हूं, और तत्कालीन राजनीति को बहुत बचपन से सुना है,जाना है क्योंकि मेरे बाबा गांधीवादी नेता थे, सत्ता के मोह से परे, केवल देश हित की सोचने वाले लोगों में शामिल,,,,आज की राजनीति और जन नेताओं से कहीं

मेल नहीं खाते,, इसलिए आज की राजनीति से कोसों दूर रहना अच्छा लगता है, हां अपने मताधिकार का समुचित उपयोग करती हूं,, सरकार के हर उचित निर्णय का समर्थन कर खुशी भी व्यक्त करती हूं,, मैं किसी दल या पार्टी की बात नहीं अपने देश की बात करना चाहती हूं,यह मेरी व्यक्तिगत राय है, जैसे अपवाद हर जगह होते हैं वैसे ही हमारे देश में भी कुछ मुट्ठी भर राजनेता सचमुच आदरणीय हैं,,

लोकतंत्र की रक्षा उत्कृष्ट राजनीति और समर्पण की भावना से ही की जा सकती है,, मैं अपनी कुछ पंक्तियां वर्तमान राजनीति की दशा और दिशा पर व्यक्त करती हूं ---

अन्याय यहां सांसें लेता है बार बार,
और सत्य हारता राजनीति के वारों से,
खो गई अहिंसा आज देश की धरती से,
रंजित है मां के चरण रक्त की धारों से,

देश फिर से अपने शिखर को पा सके,, यही आज हरदेशवासी की कामना है।

**संदीप मुरारका, लेखक**

झारखंड का राजनीतिक घेराव: असंभव!

अंशुमन कहता है राजनीति पर लिखो! पर क्या लिखूं ! झारखंड की बात करूं, तो दिशोम गुरु शिबू सोरेन पर लिखना होगा। उन गुरुजी पर, जिन्होंने आदिवासी नेताओं की राजनैतिक तलवार को नई धार दी। झारखंड राज्य के गठन में जिनके योगदान को चाहकर भी कमतर नहीं किया जा सकता। किंतु उनको धराशायी करने के लिए क्या नहीं किया गया! मुख्यमंत्री रहते

हुए ना केवल शिबू सोरेन को हार का स्वाद चखना पड़ा बल्कि तीन बार मुख्यमंत्री बनने के बावजूद वे मात्र 10 महीने कुर्सी पर बैठ पाए। वहीं आरएसएस के कैडर रहे मधु कोड़ा को निर्दलीय चुनाव लड़ना पड़ा, जीता भी और निर्दलीय विधायक रहते हुए 23 महीने सूबे के मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज होने का अनूठा रिकार्ड बनाया।

वनांचल राज्य की पक्षधर रही भाजपा ने झारखंड गठन के बाद विधायकों के अंकगणित को जब अपने पक्ष में देखा तो केंद्रीय राज्य मंत्री बाबुलाल मरांडी को सूबे का राज संभालने दिल्ली से रांची रवाना कर दिया, किंतु वे मात्र 28 महीने ही कुर्सी संभाल पाए। जिस भाजपा ने बाबुलाल जी को झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री बनने का गौरव प्रदान किया, उसी भाजपा से बाबुलाल जी का मोह 2006 में टूट गया और उन्होंने अलग दल झाविमो का गठन कर डाला, फिर ना जाने कौन सा विवेक जागा और 14 वर्षों के वनवास के बाद वे फिर भाजपा में शामिल हो गए।

महज 22 वर्ष के झारखंड ने 14 बार कुर्सी का हस्तांतरण देखा। यह अलग बात है कि 6 ही नेता सत्ता की रोटी को अलट पलट कर सेंकते रहे; बाबुलाल मरांडी - 1 बार , शिबू सोरेन - 3 बार, अर्जुन मुंडा - 3 बार, मधु कोड़ा - 1 बार, रघुवर दास - 1 बार और हेमंत सोरेन - 2 बार। अफसोस इस बात का नहीं कि रघुवर दास को छोड़कर कोई भी अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाए, अफसोस इस बात का है कि इस खनिजगर्भा भूमि को तीन बार राष्ट्रपति शासन भी झेलना पड़ा। इन 22 वर्षों में राजभवन ने 10 महामहिमों को बदलते देखा और उनमें भी चार ने राष्ट्रपति शासन के जरीये सूबे को मनचाहा हांका।

राजनीति की प्रयोगशाला बन चुके झारखंड का विकास किस तेजी से हुआ, यह बयां करना मुश्किल है किंतु यहां का बजट बड़ी तेजी से विकसीत हुआ। जहां वर्ष 2001-02 में झारखंड का बजट 7,101 करोड़ रुपये था, आज वर्ष 2022-23 में चौदह गुणा बढ़कर 1, 01,101 करोड़ रुपए पहुंच चुका है। अंशुमन! तुम्हें याद होगा कि झारखंड का पहला बजट सरप्लस था, जबकि आज का बजट कर्ज व ब्याज में डूबा हुआ है।

शायद इसीलिए अंशुमन चाहते हैं कि राजनीतिक घेराव पर लिखा जाए। पर किसको घेरोगे अंशुमन! जेएमए से पहली बार विधायक बने अर्जुन मुंडा को, जो बाद में भाजपा से 2,129 दिन मुख्यमंत्री रहे या सांसद विद्युत महतो को, जो विधायक तो रहे जेएमएम से, पर संसद के गलियारे में कमल फूल लेकर टहल रहे हैं। मैंने सुना है कि आजसू का गठन 1986 में निर्मल महतो, प्रभाकर तिर्की और सूर्य सिंह बेसरा ने किया था, किंतु आजसू के नाम का सत्ता सुख किसने भोगा, सुदेश महतो ने !

कहो अंशुमन! किस किस पर इल्जाम लगाओगे और कितना घेरोगे! पूर्व सांसद या यूं कहूं कि चर्चित सांसद शैलेंद्र महतो को घेरने जाओगे तो रिश्वत कांड की चर्चा करने की जरूरत ही नहीं केवल उनकी बदलती आस्था और बदलते चक्र की चर्चा काफी है। झामुमो से भाजपा फिर आजसू फिर कांग्रेस फिर जदयू फिर भाजपा फिर झारखंड उलगुलान पार्टी और अभी पता नहीं किस पार्टी में हैं। इसी बीच कभी लेखक तो कभी स्वामी श्री साईं मूर्ति के नाम से आध्यात्मिक गुरु के रुप में अवतार, इतना ही नहीं उन्होंने 'लोक अधिकार मोर्चा' के नाम से एक अलग राजनैतिक दल का गठन भी किया था।

अंशुमन तुम भी तो झारखंड में जन्में हो! क्या दुःखी नहीं हो! मुझे पता है तुम ही नहीं हर झारखंडी तब तब शर्मिंदा होता है जब जब बात यहां की राजनीति की होती है। क्योंकि यहां के राजनेताओं की ना तो कोई नीति है और ना नीयत! ना तो यहां किसी नेता की किसी पार्टी विशेष के प्रति स्थायी आस्था है और ना सत्ता को चुनौती देने की क्षमता। यहां तो राजा पीटर जैसे नेता हैं, जो कभी तो मुख्यमंत्री रहते दिशोम गुरु शिबू सोरेन को विधानसभा चुनाव हराने का माद्दा रखते हैं और कभी एनआईए के द्वारा गिरफ्तार होकर वर्षों जेल की शोभा बढ़ाते हैं।

अंशुमन! क्या घेराव करोगे इनका, जो खुद का बचाव नहीं कर सकते। जनवरी 2005 में झारखंड के भगत सिंह कहे जाने वाले बेहद चर्चित जन नेता महेंद्र सिंह को गोलियों से भून दिया जाता है। वहीं मार्च 2007 में सांसद सुनील महतो को सरेआम सार्वजनिक मंच पर चढ़कर मार दिया जाता है। अक्टूबर 2007 में पूर्व मुख्यमंत्री बाबुलाल मरांडी के पुत्र अनूप मरांडी सहित उन्नीस लोगों का नरसंहार कर दिया जाता है। तो वहीं वर्ष 2008 में मंत्री रमेश सिंह मुंडा को गोली से छलनी कर दिया जाता है। अब कहो अंशुमन! जिस राज्य में विधायक, मुख्यमंत्री का बेटा, सांसद और कैबिनेट मंत्री की हत्या कर दी जाए, उस राज्य का क्या राजनीतिक घेराव करोगे मित्र!

अजी! झारखंड में राजनैतिक संगठनों के हालात यह है कि यहां जनाधारविहीन संगठनकर्ता पार्टी चलाया करते हैं। झारखंड एक ऐसा राज्य है जहां की जनता चुनावों में राजनैतिक पार्टियों के प्रदेश अध्यक्षों यानी पार्टी नेतृत्व को नकार दिया करती है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप बालमुचू और सुखदेव भगत को जनता चुनावी नदी के किनारे छोड़ चुकी है वहीं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष लक्ष्मण गिलुवा और दिनेशानंद

गोस्वामी चुनावी शतरंज में पीट चुके हैं और तो और जेडीयू के प्रदेश अध्यक्ष सालखन मुर्मु को तो ऐसी हार मिली कि वे अपनी सीट में 12वें स्थान पर चले गए थे। हां यह अलग बात है कि राजनीति की 'गिनीज बुक ऑफ इंडियन रिकार्ड्स' बनाई जाए तो उसमें कई पन्ने झारखंड को समर्पित कर देने होंगे। हमारे पास रिकार्ड्स भी अजीब हैं, चाहे निर्दलीय विधायक को मुख्यमंत्री बनाने का रिकार्ड हो या विधानसभा के एक टर्म में चार चार मुख्यमंत्री बनाने और राष्ट्रपति शासन झेलने का रिकार्ड अथवा मुख्यमंत्री रहते चुनाव हारने की हैट्रिक बनाने का रिकार्ड। मुख्यमंत्री रहते झारखंड के चुनावी मैदान में शिबू सोरेन, अर्जुन मुंडा और रघुवर दास, तीनों को शिकस्त मिली। हालांकि सबसे कम उम्र का मुख्यमंत्री देने का रिकार्ड भी इसी राज्य ने बनाया है।

अंशुमन यह झारखंड है! जिस अलग राज्य के गठन के लिए हजारों लोगों ने अपनी जवानी दांव पर लगा दी, उन्हें मिलते हैं तीन चार हजार रुपए और उन आंदोलनकारियों को चिंहित करने के लिए बनता है 'झारखंड आंदोलनकारी चिन्हितीकरण आयोग', जिसके सदस्य भोगते हैं लालबत्ती का सुख।

अंशुमन! राजनीतिक घेराव वहां संभव है जहां राजनेता हों या राजनीत हो किंतु जहां ना नीति हो, ना नियम, ना निगरानी, वहां किस का घेराव! इसकी विधानसभा की सालगिरह के मंच पर कवि कुमार विश्वास को लाखों रुपए देकर बुलाया जाता है और तुम्हारे जैसे स्थानीय साहित्यकारों को आमंत्रण तक नहीं भेजा जाता। झारखंड एक ऐसा राज्य है जो 22 वर्षों में साहित्य अकादमी का गठन ना कर सका। झारखंड ऐसा राज्य है जहां 32 जनजातियां हैं, इन सबकी भाषाएं अलग-अलग हैं, पर जनजातीय शोध व साहित्य प्रकाशन के लिए ना कोई स्कीम, ना सोच।

अब बताओ अंशुमन जब इतिहास ही नहीं लिखा जाएगा तो संस्कृति कैसे बचा पाओगे। इस राज्य की राजनीति को कितना घेरोगे अंशुमन! कितना घेर पाओगे। कितना सफल हो पाओगे। असंभव!

**अन्नी अमृता, पत्रकार**

सब कहते हैं कि राजनीति एक कीचड है या फिर दलदल है और इस वजह से अच्छे लोगों को इसमें नहीं जाना चाहिए, मगर सब ऐसा सोचेंगे तब देश चलेगा कैसे? अगर अच्छे लोग नहीं आएंगे तो राजनीति पुराने ढर्रे से बदलेगी कैसे? वैसे भी सदियों से राजनीति शब्द का इस्तेमाल दांव पेंच के रुप में किया जाता है जबकि इसका मतलब देश सेवा होनी चाहिए, बदलते समय के साथ राजनीति भी बदली है। आखिर राजनीति में इसी समाज से तो लोग जाते हैं, कोई आसमान से तो आता नहीं, बदलते समाज की छाप राजनीति में भी है। जिस तरह समाज में आज धन का बोलबाला दिखता है, लोग धन के पीछे पागल हैं वैसे ही राजनीति भी पैसे और छल का खेल हो चली है.इसे बदलने की जरुरत है। राजनीति में अच्छे और ईमानदार लोगों को आना चाहिए और लोगों को इस आगमन का स्वागत करना चाहिए।

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | एक प्रधानमंत्री | 19 |
| 2. | पत्रकारिता पर दाग | 43 |
| 3. | युवा और राजनीति | 47 |
| 4. | राजनीति पर लोगों के अलग-अलग विचार | 53 |
| 5. | राजनीति और साहित्य | 62 |
| 6. | बदलाव | 86 |

# अध्याय - 1

# एक प्रधानमंत्री

आज भारत को आजादी मिले 75 साल बीत चुके हैं, और तब से भारत ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं, भारत ने पूरी दुनिया को दिखाया है कि गिरकर फिर अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाता है। आज हमारे देश में सब कुछ है, एक परिपूर्ण व्यवस्था है, जिसके कारण देश प्रगति की ओर बढ़ रहा है। अगर हम देश की उन्नति और लोगों की समृद्धि की बात करें तो यह पूरी तरह से वहाँ की राजनीति पर निर्भर करता है। कई अन्य देशों में जहाँ तक राष्ट्रपति की मुख्य भूमिका होती है, वहीं हमारे भारत देश में प्रधानमंत्री के कार्य के अनुसार उन्हें बड़े ओहदे पर देखा जाता है। पूरे देश को चलाने की जिम्मेदारी एक प्रधानमंत्री पर होती है, उनके फैसलों पर ही देश अमल करता है, एक प्रधानमंत्री जनता का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने जाने के बाद पार्टी के चेहरे के रूप में आ सकता है, लेकिन जब वह प्रधानमंत्री बनता है, तो उनकी प्राथमिकता देश की जनता और देश के मुद्दों पर होती है। एक प्रधानमंत्री यूं ही प्रधानमंत्री नहीं बन जाता

है, अपने जीवन में कई परिस्थितियों को देखकर और लोगों के दिलों में अपनी छाप छोड़ने के बाद ही उस ओहदे तक पहुँचता है। अधिक आबादी वाले देश भारत में लोग किसी नेता के काम और उस नेता को परख कर ही उन्हें उस कुर्सी पर बैठाते हैं, क्योंकि बहुत से लोग उनसे अपनी उम्मीदें रखते हैं, उन्हें विश्वास होता है कि यह नेता आगे चलकर हमारे देश को सुख समृद्धि वाला देश बनाएगा। हमारे देश के लोग राजनीति के विषय पर हमेशा गंभीर रहते हैं, चाहे ट्रेन यात्रा हो या चाय की दुकान, जहाँ मौका दिया जाता है, वे राजनीति के विषय पर अपनी-अपनी राय रखते हैं। लोग सही गलत में फर्क करना भी जानते हैं, विकास और रोजगार हर क्षेत्र के सभी लोगों तक पहुँचे, हर गली, हर घर, चौराहों तक बिजली पहुँचे, राजनीति से जुड़े ये मुद्दे हमेशा जनता के मन में रहते हैं, कुछ का मानना है कि उनके द्वारा कार्य किया जा रहा है, तो कुछ का मानना है कि वे काम नहीं कर रहे है। इस पर लोगों की अलग-अलग राय है, इसमें सबसे बड़ी जिम्मेदारी राजनेताओं की होती है, हर मंत्री की होती है, केवल प्रधानमंत्री ही हर समस्या का समाधान नहीं कर सकते। एक प्रधानमंत्री के साथ पूरे मंत्रिमंडल का विस्तार होता है, जिसे अपने-अपने कार्य क्षेत्र के अनुसार जिम्मेदारियाँ दी जाती है। देश की जनता का भरोसा और उनकी उम्मीदों पर ख़रा उतरना पड़ता है, क्योंकि सरकार बनाना और गिराना भी उनके हाथ में है। यही लोग तय करते हैं कि अगली बार किसे लाना है, इसलिए किसी भी देश की

राजनीति, वहाँ के लोगों पर टिकी होती है। यहाँ कुछ छुपाए नहीं छुपता, एक न एक दिन वह सब जनता के सामने आ ही जाता है।

देश के प्रधानमंत्री केवल अपने फैसलों के बारे में नहीं सोचते है, अगर प्रधानमंत्री चाहे तो देश के कई ऐसे मुद्दे हैं, जिन्हें चुटकियों में खत्म कर सकते हैं, लेकिन उसके लिए भी उन्हें सहमति लेनी पड़ती है। अपने विपक्षी दलों से और अपने सलाहकारों से, उस फैसले को बड़े बारिकी से समझना पड़ता है, जरूरी नहीं कि उनके फैसलों से देश का हर व्यक्ति खुश हो। किसी एक तबके के लोगों को दुखी भी होना पड़ता है। हालात बिगड़ने जैसे माहौल उत्पन्न हो सकते है, इसलिए कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जिन्हें रोका नहीं जा सकता, उन मुद्दों पर बात नहीं की जाती है, क्योंकि वे इसके पीछे के कारण और उनके परिणामों से अवगत होते हैं। और कुछ असामाजिक तत्व इस बात को गलत तरीके से जनता के सामने पेश कर एक नेता की छवि खराब करने की कोशिश करते हैं, विपक्षी दलों को इस बात का ज्ञान होने के बावजूद एक प्रधानमंत्री पर निशाना साधते हैं। वैसे तो यह राजनीति का हिस्सा है, आज कोई है, तो कल कोई और सत्ता में होगा, आज के लोग अच्छी तरह से जानने लगे हैं कि कौन सही हैं? और कौन गलत हैं? एक प्रधानमंत्री सिर्फ एक व्यक्ति या उसके समर्थकों का प्रधानमंत्री नहीं होता है। प्रधानमंत्री बनने के बाद यह नहीं सोचता कि मैं केवल अपने समर्थकों का विकास करूँगा, उनके ऊपर पूरे देश की जिम्मेदारी होती है। वे अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी समझते हैं कि मुझे देश की हर जनता के साथ-

साथ हर विपक्ष के लोगों के साथ आगे बढ़ना है। एक प्रधानमंत्री के जीवन भर का अनुभव और उस ओहदे तक पहुँचने की संभावनाओं को वह खुद समझता है और उस ओहदे पर ही उन्हें उनकी जिम्मेदारी और व्यवहार का अनुभव होता है, उन्हें अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए हर संभव कदम उठाना पड़ता है।

यदि हम माननीय नरेंद्र मोदी जी की जीवनी पर प्रकाश डालें और उनकी अब तक की यात्रा को समझें, तो ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने जीवन में हमेशा भारत की सभ्यता और संस्कृति को महत्व दिया है, उनके व्यक्तित्व में महान चरित्र का अनुभव होता है, उनके जीवन में शिष्टाचार और उनके स्वभाव से आज भारत के सभी नागरिक इनसे प्रेरणा लेते हैं। कुछ का मानना है कि लोग वही देखते हैं, जो वे दिखाते हैं, किंतु कुछ लोग केवल व्यक्ति के विचारों को अनुभव करके ही उनके बारे में सब कुछ जान लेते हैं।

मोदी जी बचपन से ही सभी जिम्मेदारियों को बखूबी समझते थे और उन्होंने उसे निभाया भी। वह पढ़ाई के साथ-साथ अपने पिता की चाय की दुकान को संभालते घर में अपनी माताजी के काम में उनका हाथ बंटाते। लोगों की माने तो मोदी जी में बचपन से ही देश प्रेम और कुछ कर गुजरने का जज्बा था, इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने 8 साल की उम्र में ही अपने जीवन का सबसे बड़ा फैसला लिया, वे एक कार्यकर्ता के रूप में आर.एस.एस से जुड़ गए। उन्हें उनकी जगह जैसे

उसी वक्त मालूम पड़ी हो, मानों उन्हें पहले से ही अनुभव हो गया हो कि आर.एस.एस एक ऐसा माध्यम है, जिस राह पर चलकर उन्हें देश की सेवा करने का मौका मिलेगा।

आर.एस.एस यानि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जिसकी स्थापना 27 सितंबर 1925 को लगभग 95 वर्ष पहले हुई थी और आज भी सक्रिय है, यह संगठन हिंदू राष्ट्रवादी संगठन है जो पूरे विश्व का सबसे बड़ा संघ माना जाता है, इसकी विचारधारा कुछ इस प्रकार है, जैसे सामाजिक मूल्यों को बनाए रखना और हमारी संस्कृति एवं आदर्शों को बढ़ावा देना। इस संघ ने देश के अनेकों मुद्दों पर अपने विचार खुलकर रखें, कई आंदोलन भी किए, देखा जाए तो देश की कई समस्याओं को सुलझाने में लगभग इस संघ का भी योगदान रहा है।

उनकी हिंदुत्ववादी सोच और इस संघ की कार्यप्रणाली भी काफी विवादों में रहती हैं, उनके कदमों ने कई अन्य धर्मों को निराश किया है, भारत एक घनी आबादी वाला देश है, न केवल क्षेत्रफल में, बल्कि विचारों के मामले में भी, यहाँ किसी के कार्य से हर कोई खुश नहीं हो सकता, सरकार को सबका समर्थन चाहिए, तभी वह स्थायी सरकार बना सकती है, शायद इसीलिए आर.एस.एस हमेशा निशाने पर रहता है, इससे पहले की सरकार ने आर.एस.एस. का कभी समर्थन नहीं किया, क्योंकि उन्हें अपने वोट बैंक से मतलब है, न कि देश के मुद्दों से।

आज की मौजूदा सरकार में भी विपक्षी नेता, उन्हें आर.एस.एस की विचारधारा वाली सरकार कहते हैं और उन्हें देखकर कुछ पड़ोसी देश भी यही बात दोहराते हैं, वैसे आर.एस.एस हमेशा देश को एकजुट करने की बात करता आया है, देश को तोड़ने की नहीं। 100 साल से चली आ रही, इस संस्था की विचारधारा को अगर कोई मानता भी है तो, इसमें कोई बुराई नहीं है और अगर है भी तो देश की जनता तय करेगी, न कि कोई नेता नरेंद्र मोदी, जिन्होंने आज पूरी दुनिया में अपने नाम को रोशन किया है। इससे भारत का गौरव बढ़ा है और इससे भारत की जनता अच्छी तरह समझती है कि आज भारत की छवि पहले से बेहतर है।

भले ही इस संगठन को हिंदूवादी और फासीवादी संगठन के रूप में वर्णित किया गया है, कई लोग इसकी आलोचना करते हैं, लेकिन देश की एक बड़ी आबादी इस संगठन को अपना विश्वास देती है, बस राजनीतिक तुष्टिकरण के कारण इस संगठन की छवि खराब हो गई है, फिर भी लोग क्या सोचते हैं, यह उन तक सीमित है, और किसी को इस पर आपत्ति नहीं होनी चाहिए, हमारे देश के लोग अच्छी तरह जानते हैं कि क्या सही है? और क्या गलत है?

अगर इस पर कोई आपत्ति होती तो, देश की जनता मोदी जी की लोकप्रियता का सबसे बड़ा कारण नहीं बनती। आज पूरा देश उन पर आशा रखता है, जबकि वह आर.एस.एस. से जुड़े थे। यदि इस संघ की

विचारधारा देश के लिए घातक होती तो, अब तक देश में उथल-पुथल मच गई होती, लेकिन इन 8 वर्षों के अंतराल में देश की जनता ने केवल विकास देखा है और देश को बढ़ते देखा है।

आज भारत एक ऐसे मुकाम पर पहुँच गया है, जिसकी कीमत हर देश समझता है, मोदी जी के किए गए कामों की दुनिया भर में तारीफ हो रही है, कोरोना काल के समय को हटा दें तो। अगर यह कोरोना काल जैसा समय न होता तो, हमारे देश की अर्थव्यवस्था, अब तक के भारतीय इतिहास में सबसे अच्छी स्थिति में होती। आज कई लोग सरकार का बहाना बताते हैं, लेकिन यह भी सच है कि न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में लोग आर्थिक मंदी से त्रस्त हैं, केवल सरकार को दोष देना गलत है।

आज नरेंद्र मोदी अपने कर्मों से यहाँ तक पहुँचे हैं, उनके काम को देखकर ही जनता ने उन्हें प्रधानमंत्री बनाया है, राजनीति में शामिल होने के बाद उन्हें देश की भी सेवा करनी है, ऐसा मन उन्होंने बना लिया था। एक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने राजनीति में अपना कदम रखा। उन्होंने जनता की हर संभव मदद की है, इसी काम को देखकर उनकी पार्टी ने उन्हें गुजरात के मुख्यमंत्री का प्रबल दावेदार माना, लगातार गुजरात के मुख्यमंत्री बने रहें, उन्होंने गुजरात का सूरते-हाल बदल कर रख दिया, कई निवेशक और कई प्रोजेक्ट के साथ गुजरात को एक नया रूप दिया, जिससे उनकी वाहवाही पूरे विश्व भर में हुई।

देखते-देखते मुख्यमंत्री से आज पूरे देश के प्रधानमंत्री बन गए और वही काम करने का तरीका दिख भी रहा है, इसमें समय जरूर लगेगा, लेकिन यह भी समझना जरूरी है जो सरकार भी कहती है कि 60 साल का कचरा साफ होने में वक्त तो लगेगा ही, धीरे-धीरे सब सही होगा। मोदी जी के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री रहते, उन पर कई आरोप लगाए गए, चाहे वह गुजरात दंगे हों या हिंदुत्व की सोच, उन सभी आरोपों पर प्रधानमंत्री ने हमेशा चुप्पी साधी है। कभी खुद इस बारे में सफाई नहीं दी, वक्त के साथ-साथ सभी को पता चल ही गया कि आरोप केवल उनके आत्मविश्वास को गिराने के लिए था, लेकिन इन सभी के बावजूद उनके लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई, उन पर लोग आज भी उतना भरोसा रखते हैं, जितना पहले देश में उनकी लहर यानी मोदी लहर कभी कम नहीं हुई, आज भी "हर-हर मोदी घर-घर मोदी" के नारे लगाए जाते हैं।

मौजूदा सरकार में अब तक मोदी जी को एक अहम शख्सियत के तौर पर देखा जाता रहा है, अगर 2014 के चुनाव की बात करें तो, मोदी जी पूरे भारत के सामने मुख्य चेहरे के तौर पर आए, उनके गुजरात मॉडल और देशभक्ति वाली सोच ने लोगों को बहुत प्रभावित किया था। मानों पूरे देश में मोदी के नाम की लहर हो। मोदी अब तक एक ऐसे राजनेता हैं, जिन्होंने भारत की जनता को इतना प्रभावित किया है कि आज उन्हें कोई विपक्ष भी मोदी जी को नज़रअंदाज नहीं कर सकता।

मोदी जी गुजरात होते हुए, वाराणसी क्षेत्र से चुनाव जीतकर सबके बीच में हैं, उस समय ऐसा लग रहा था कि मानों भाजपा ने नहीं मोदी ने अकेले चुनाव लड़ी हो, लोकप्रियता के मामले में उन्होंने देश दुनिया भर के कई दिग्गज नेताओं को पीछे छोड़ दिया है। लोग यह सोचते हैं जो मोदी के पक्ष में है और कुछ जो नहीं हैं, उनकी सोच बिल्कुल विपरीत है।

ऐसे लोग मोदी को दबंग नेता के रूप में देखते हैं, उन्हें तानाशाह मानते हैं, आज भी दंगों के दाग हैं जो कई लोगों के जहन में हैं। आज से 20 साल पहले हुए गोधरा रेल हादसे में कई हिंदुओं को जिंदा जलाया गया था, उस वक्त तो पूरा देश आक्रोश में था। गुजरात में दंगे हुए, आपस में हिंदू मुसलमान एक-दूसरे के खून के दुश्मन हो गए। दंगों में 1,000 से ज्यादा लोगों ने अपनी जान गवाई थी। पूरा विपक्ष मोदी सरकार पर हमले बोल रहा था, उन पर दंगों को रोकने के लिए कोई कदम ना उठाने का आरोप था। मोदी जी उस वक्त सभी की आलोचनाओं का शिकार हो रहे थे, जिसके कारण उनकी कई तरह की निष्पक्ष जाँच की गई, जिसमें बाद में उन्हें सभी आरोपों से मुक्त कर दिया गया, लेकिन आज भी कई लोग उन दंगों के लिए मोदी को जिम्मेदार मानते हैं।

वो लोग समझते हैं कि मोदी हमेशा हिंदुओं के समर्थन में हैं, मोदी जी को मुसलमानों को देखना पसंद नहीं है, लेकिन मोदी जी ने हमेशा कहा है कि लोगों को उनके धर्म के अनुसार बाँटना गलत है, धर्म

से ऊपर मानवता है और आज देखे तो मोदी जी ने "तीन तलाक" जैसे कानून लाकर पूरी तरह स्पष्ट कर दिया है कि मोदी जी सभी के साथ चल रहे हैं। "एक भारत श्रेष्ठ भारत" मंत्र के साथ चलकर उन्होंने यह साबित किया है और पूरे विश्व को यह संदेश दिया है कि हमारा भारत एकता, अखंडता और अपनी संस्कृति के लिए अद्भुत है, और यह सही भी है, हमारे देश में राजनीति के कारण ही लोग बँटते है, लेकिन वास्तविक जीवन में हिंदू हो, मुस्लिम हो या ईसाई, सभी एक दूसरे के साथ प्रेम पूर्वक रहते हैं।

और बात अगर दंगों की करें तो, उन्हीं नेताओं द्वारा भेजे गए भाड़े के गुंडे ऐसी स्थिति में आग में घी डालने का काम करते हैं, जो पूरी मानवता पर कलंक का कारण बनता है, चाहे जिसने भी दंगा किया हो, उससे देश का नुकसान होता है, लेकिन इन सबके लिए किसी एक व्यक्ति को जिम्मेदार ठहराना गलत है, जो लोग मोदी के बारे में ऐसा सोचते हैं, उन्हें फिर से सोचना चाहिए और हमेशा अफवाहों से दूर रहना चाहिए। जिसने अपने जीवन में अपना सब कुछ कुर्बान कर देश की सेवा की हो, देश को सर्वोपरि माना हो, वह कैसे देश में अशांति ला सकतें हैं, मोदी जी ने हमेशा लोगों से एक सा व्यवहार किया है, धर्म के आधार पर नहीं।

मोदी नाम आज के समय में युवाओं में लोकप्रिय हैं, देश के युवा, मोदी जी को बहुत पसंद करते हैं और यह बात मोदी जी के लिए

बहुत महत्वपूर्ण है, आज देश के युवा आधुनिक तकनीकों से जुड़े हुए हैं, जिससे उन्हें सब कुछ आसानी से समझ में आ जाता है। इसलिए मोदी सरकार ने हमेशा टेक्नोलॉजी को बढ़ावा दिया है, जिससे देश के युवा बहुत प्रभावित हैं और मोदी जी सोशल मीडिया के जरिए युवाओं से संपर्क भी करते हैं, इसलिए उन्हें युवाओं में काफी लोकप्रिय माना जाता है, अब कुछ लोगों का मानना है कि तकनीकी क्षेत्र में ही देश को आगे ले जाकर, वे युवाओं को अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हैं, यह उनकी राजनीति का एक हिस्सा है, उन्हें लगता है कि देश के युवा गलत राह में बढ़ रहे हैं, उन्हें गुमराह करके मोदी अपने फायदे के लिए बस इस्तेमाल करना जानते हैं।

अगर हम ध्यान दें, तो यह सोच गलत है, आज पूरी दुनिया तकनीकी क्षेत्र में खुद को आगे बढ़ा रही है, यह समय की भी जरूरत है, भले ही वे अपने काम और लोगों तक अपनी मन की बात पहुँचाने के लिए अगर तकनीक का सहारा लेते भी हैं तो, यह आज के हिसाब से लोगों तक पहुँचने का जरिया है। देश अगर तकनीकी क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है तो, यह देश के विकास में अहम योगदान देगा। यही किसी देश की तरक्की का कारण होता है, बात आकर्षित करने की हो, तो यह जनता पर छोड़ना चाहिए, क्योंकि गुमराह करना और गुमराह होने में काफी फर्क है। यह जनता पर निर्भर करता है कि वह अपनी सरकार के बारे में क्या सोचते हैं, आज के वक्त कोई शख्स गुमराह नहीं होता ,वह हर खबर से वाकिफ होता है।

पिछले 2 वर्षों में कुछ ऐसा हुआ है, जिसने न जाने इतने सारे जीवन को प्रभावित किया। कोरोना वायरस ने अपना तांडव इस तरह दिखाया कि हर भारतीय को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा, इस महामारी ने मानों सभी के जीवन पर अपना दुष्प्रभाव डाला। इस अदृश्य महामारी के कारण लाखों लोगों की जानें गई। कई लोग इसके शिकार हुए, जिसके चलते सरकार ने लॉकडाउन जैसे कदम उठाए। इस महामारी के दौरान भी सभी ने मोदी जी के बातों का पालन किया और उनकी लोकप्रियता उनके द्वारा लगाए गए पहले जनता कर्फ्यू के दौरान पता चली।

यह पूरे भारत के लिए एक गंभीर स्थिति थी, कौन जानता था कि यह लॉकडाउन पूरे साल जारी रहेगा। जिससे उद्योग, शिक्षा और रोजगार पर सीधा प्रभाव पड़ा, सभी मजबूर थे, मानों कुछ करने की उम्मीद ही नहीं रह गई थी। प्रत्येक व्यक्ति को अपना परिवार चलाना था, आय का कोई स्रोत नहीं था, जैसे कि गरीबों के साथ-साथ एक सामान्य वर्ग के घर में भी खाने तक की समस्या उत्पन्न होने लगी थी। लोग फिर भी आज मोदी जी के द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन कर रहे थे और इस सरकार ने गरीबों की हर संभव मदद की। वर्क फ्रॉम होम और ऑनलाइन पढ़ाई जैसी चीजें हमारे बीच आयी। जिससे राहत मिली, लेकिन जहाँ जीवन धीरे-धीरे बेहतर हो रहा था, वहीं देश की अर्थव्यवस्था पटरी से उतर रही थी, लेकिन सरकार ने दुनिया की सबसे बड़े राहत कोष की घोषणा की, जो 20 लाख करोड़ का था। जहाँ तक मदद पहुँच सकी,

वहाँ तक लोगों को मदद पहुंचाई गई। इतनी घनी आबादी वाले देश भारत में कोरोना ने पैर पसारना शुरू कर दिया था, मानों हर दिन की शुरुआत बुरी खबर से ही होती थी।

यह वक्त लड़ने का था, जिसे सभी भारतीयों ने मिलकर लड़ा, शायद यही कारण है कि इस महामारी ने उतना नुकसान नहीं किया, जितना अन्य देशों को उम्मीद था, नुकसान कम भी नहीं हुआ, आज मध्यम वर्ग गरीब, और गरीब ज्यादा गरीब हो गया है। आज हमने दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण अभियान से करोना महामारी पर काबू पा लिया है और मोदी सरकार के नेतृत्व में देशभर में मुफ्त टीकाकरण का अभियान चलाया गया। जिससे कम समय में 100 करोड़ से अधिक लोगों को टीका लगाया गया। सब कुछ ठीक तो हुआ, लेकिन क्या देश की अर्थव्यवस्था ठीक होगी, यह अटकलें सभी के मन में थी और हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सबसे बड़ी परीक्षा रही, क्योंकि उनके लिए और हमारे देशवासियों के लिए एक नए युग की शुरुआत थी।

महामारी ने हमारे जीवन में काफी क्षति पहुंचाई, इस महामारी ने शुरुआती समय में भी अपना कहर दिखाया और जाते-जाते देश की अर्थव्यवस्था को चरमरा कर रख दिया। उस समय में हर देशवासी इस महामारी से परेशान था और न सिर्फ इस महामारी से बल्कि इस महामारी से हुए नुकसान से भी परेशान था। मंहगाई ने अपना रंग इस कदर दिखाया कि हर भारतीय दंग रह गया। महँगाई ने मध्यम वर्ग और गरीबों को भी

झकझोर कर रख दिया। पेट्रोल ने आज तक की सबसे महंगी दर को छू लिया।

आज भारत में बड़े तबके के लोग गरीबी रेखा में जीते हैं, इन लोगों की सोच यह होती है कि जमीन, मंदिर और कानून लाकर पेट नही भरा जा सकता और यह सोच उनकी सही भी है इससे पहले भी इस पुस्तक में इसका उल्लेख किया जा चुका है कि हर सोच सही है। किसी को सरकार का काम पसंद है तो किसी को नहीं। हमारा देश घनी आबादी वाला देश है और यहाँ लोग भिन्न-भिन्न विषयों पर भिन्न-भिन्न सोच रखते हैं, रोजगार और भुखमरी देश की सबसे बड़ी समस्या रही है, भुखमरी में भारत हमेशा आगे रहता है, यह समस्या हमारे देश को सबसे बड़ी क्षति पहुँचाता है, और यहाँ गरीब हर वक्त हर परिस्थिति में भूख से लड़ते हैं, ना इन के पास रोजगार होता है और ना ही पेट भरने के लिए एक दिन का पर्याप्त खुराक, ना तो इन लोगों की आवाज सरकार तक पहुँचती है और ना सरकार इनकी खोज करने का प्रयास करती हैं, यह आज से नहीं सदियों से चला आ रहा है, कई लोगों के पास इतना खाना है कि उन्हें फेंकना पड़ता है और कई लोगों को एक वक्त का निवाला भी नसीब नहीं होता हैं। सबसे बड़ी समस्या जानते है क्या है? हमारे देश में जात-पात और भेद-भाव। इन सब कारणों की वजह से लोग आज भी पिछड़ते जा रहे हैं, उनके लिए अवसर का कोई रास्ता नहीं होता है और उन्हें इतना नीचा दिखाया जाता है कि इनके अंदर कुछ करने की उम्मीद भी मानों खत्म सी हो जाती है। जैसे कि हमारे समाज में आज भी यही

चल रहा है, यह सबकी नजर के सामने होता है किंतु इसे नजरअंदाज कर दिया जाता है। क्यों इन लोगों तक सरकार की मदद नहीं पहुँच पाती? क्यों ऐसे लोग जो भूख से लड़ते हैं, रोजगार के लिए भटकते हैं? वे लोग सरकार की सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं, ऐसे में भला यह लोग सरकार के बारे में अच्छा कैसे सोच सकते हैं। ये लोग सरकार के प्रति संवेदना दिखाने की श्रेणी में आते हैं, लेकिन इसके पीछे का कारण जानना भी जरूरी है, क्योंकि इस तरह के मुद्दे को निशाना बनाकर किसी सरकार या पार्टी की छवि खराब की जाती है।

आज भी बहुत से लोग शिक्षा से वंचित हैं, जिनके पास सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए ज्ञान नहीं है और सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि आज के घनी आबादी वाले देश में हर घर को सहायता प्रदान करना संभव नहीं है, लेकिन सरकार अपनी तरफ से सभी सार्थक प्रयास करती है, फिर भी बहुत से लोग सरकार द्वारा दिए गए सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

और आज सब कुछ ऑनलाइन के माध्यम से लोगों को उपलब्ध कराया जाता है, प्रचार के माध्यम से लोगों को अवगत कराया जाता है, इस जानकारी को सभी के लिए सुलभ बनाने का कार्य सरकार द्वारा किया जाता है, लेकिन कुछ लोग शिक्षा और समझ की कमी के कारण इससे वंचित हैं, हालांकि उनके नजरिए से सरकार अच्छी नहीं है, वे सरकार को कोसते हैं, अगर उनसे पूछा जाए तो वे सरकार द्वारा किए गए कार्यों से नाखुश रहते हैं, जिसका फायदा उठाकर कुछ विपक्षी नेता

राजनीतिक मुद्दे बनाकर दूसरों को गुमराह करने का भी कार्य करते हैं। तो कुल मिलाकर देश में अलग-अलग विचारों वाले लोग हैं, कुछ मौजूदा सरकार को पसंद करते हैं और कुछ नहीं। अब यह जनता पर निर्भर है कि अफवाहों पर विश्वास किया जाए या सच पर, हो सकता है कि लोगों ने उन्हें समझने में कुछ गलती की हो या सरकार की ओर से कोई गलती हुई हो। कितने घोटाले हुए, कितना भ्रष्टाचार हुआ और इतने सालों में सरकार की मौजूदगी में यह सब हो रहा है, इसकी जानकारी सभी को है, यह सारी जानकारी समाचारों के माध्यम से हमारे सामने आती रहती है, तो यह स्पष्ट है कि सब कुछ भारतीय राजनीति में मुमकिन है। कुछ लोग राजनीति में विश्वास पैदा नहीं कर पाते हैं, उन्हें लगता है कि सब कुछ गलत है, उनकी सोच सही है। अगर हम वर्तमान सरकार की बात करें तो आज तक हमारे बीच ऐसी कोई घटना नहीं आई है, तो यह भी लोगों को सोचने की जरूरत है। राजनीति हमेशा हमें अलग-अलग विचार रखने के लिए मजबूर करती है, यह आज तक किसी को भी पूरी तरह से समझ में नहीं आया है या यह कहें कि राजनीति हमें स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती है, हम किसी एक व्यक्ति या नेता को आशा की नजर से देखते हैं। लेकिन वहाँ एक पूरी पार्टी होती है, जहाँ राजनेता अलग-अलग काम करने का अपना-अपना तरीका अपनाते हैं।

इस मोदी सरकार में कई ऐतिहासिक फैसले लिए गए, जो भारत के इतिहास में हमेशा याद किए जाएँगे। ऐसे कई मुद्दों का समाधान किया गया। जिसकी भारतीय उम्मीद नहीं कर सकते थे। पहले की

राजनीति वोट बैंक की राजनीति थी। इस पुस्तक में लेखक किसी का पक्ष पर नहीं लिख रहे, यह सभी के विचार और अब तक के राजनीतिक सफर के गणित के हिसाब से कही गई हैं, जो दिखता है, वही इंसान समझता है। लेखक का मानना है कि लोगों से कोई भी बात अब तक छुपी नहीं है और यह सच लिखने में कोई बुराई भी नहीं। मौजूदा सरकार में जो हुआ वो पिछले 60 साल की सरकार नहीं कर पाई, हर कोई चाहता था और इस कदम का सभी को बेसब्री से इंतजार था।

हमारे देश में हर भारतीय को अपने देश से प्यार है और देश की भलाई के लिए उठाया गया हर कदम, हर भारतीय के लिए गर्व की बात है, सच तो यह है कि आज हर भारतीय मोदी जी के काम से खुश है और सभी चाहते हैं कि आगे आने वाले समय में उनके नेतृत्व में देश की उन्नति हो। देश का हर व्यक्ति यही चाहता है, जिस तरह देश में हर काम, हर योजना अपने मुकाम पर पहुँच रही है और इसका लाभ हर भारतीय तक पहुँच रहा है, जो पहले बहुत कम पहुँचता था, आज इस सरकार में हर परिवार खुश है, इस सरकार में हर भारतीयों को इंटरनेट से जोड़ा गया। आज हर व्यक्ति इंटरनेट सेवाओं का उपयोग कर सकता है। पूरी दुनिया में सबसे सस्ता नेट आज भारत में उपलब्ध है। हर भारतीय में इसे आराम से लेने की क्षमता हो सकती है और इंटरनेट के उपयोग से बहुत सी चीजें आसान हो गई हैं, सभी का बहुत समय बचता है, हमेशा लोगों से जुड़े रहते है, साथ ही हर जानकारी उनके लिए आसानी से उपलब्ध हो जाती है ताकि आज के लोग किसी भी बात से अनजान नहीं रहे और

अपने जीवन में हर मोड़ पर हर अतीत की घटनाओं और समाचारों से रूबरू हो सके। न जाने कितने भारतीयों ने इंटरनेट के माध्यम से अपना व्यवसाय शुरू किया, तो डिजिटल इंडिया के इस अभियान से हर भारतीय को फायदा हुआ है। आज के लोग कैशलेस व्यवहार रखते हैं, जो भ्रष्टाचार को रोकने में काफ़ी ज्यादा सहायक है। कई भुगतान डिजिटल रूप से लिए और दिए जा रहे हैं, आज के लोग अपना टिकट खुद बुक करते हैं, बिना लोगों से पूछे और बिना आश्रित हुए अपने प्रियजनों को पैसे भेज सकते हैं। जिससे आत्मनिर्भरता को नई राह मिलती है और काफी समय की बचत होती है, यह बदलाव नहीं तो क्या है? विकास नहीं तो क्या है? और आने वाले समय में इसके विकास को और सही ढंग से समझा जा सकेगा। लोगों के लिए अभी इसकी भविष्यवाणी करना मुश्किल है। जो अभी पूरा होना बाकी है, जिसका स्वरूप आने वाले समय में ही देखने को मिलेगा। इस सरकार का विजन बहुत दूर तक का है, यह उनके अब तक के सफर से पता चलता है, इस सरकार ने पहले भारत की अंदरूनी समस्याओं को जड़ से खत्म किया है, जो वर्षों से समस्या का विषय था, और दूसरा बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए कदम उठाए गए है।

हर भारतीय को सभी से डिजिटल रूप से जोड़ने के लिए कई परियोजनाओं को भी शुरू किया गया और इस कार्य को भी प्राथमिकता देनी चाहिए, क्योंकि इस युग के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को बदलना होगा। जब तक हम नहीं बदलेंगे, तब तक हम उस माहौल में असहज

महसूस करेंगे, क्योंकि आने वाले समय में आपको हर काम के प्रति जागरूक रहने की जरूरत है, इसके लिए इस सरकार ने सबसे पहले डिजिटल माध्यम को प्राथमिकता दी।

जिस देश का बुनियादी ढाँचा मजबूत है, वह देश दिन-दोगुना अपनी प्रगति की ओर बढ़ता है, और इसी बात को ध्यान में रखते हुए इस सरकार ने भी इस क्षेत्र में बहुत जोर दिया है, और कई परियोजनाओं को हरी झंडी भी दिखाई है, यह एक ऐसा काम है जिसमें बहुत अधिक वक्त लगता है। और इसकी शुरुआत हो जाना एक अच्छा संकेत है, यह रोजगार के नए अवसर प्रदान करेगा, निवेश के नए रास्ते खुलेंगे, इससे देश और देशवासियों का लाभ है, जो हर भारतीय अपने आने वाले समय में यह देखेगा।

आज यह सरकार लोगों को आत्मनिर्भर बनने पर बहुत जोर दे रही है, यह लोगों को खुद से सब कुछ करने के लिए प्रेरित कर रही है, हमें अपनी जरूरतों के लिए सभी चीजें तैयार करने की आवश्यकता है, जो लोग इसके बारे में जानते हैं, उन्हें दूसरों पर निर्भर नहीं रहना होगा। आज देश भी इसी रास्ते पर चल रहा है कि हमें अपनी जरूरतें खुद पूरी करनी चाहिए, ताकि देश की संपत्ति हमारे देश में ही बनी रहे, जिससे देश की अर्थव्यवस्था और मजबूत होगी। अर्थव्यवस्था का मजबूत होना हमारे हर भारतीयों की स्थिति का मजबूत होने जैसा है। आत्मनिर्भरता से आने वाले समय में हमारे देश और सभी भारतीयों को इसका सीधा लाभ

मिलेगा, जैसे हमारे पड़ोसी देश चीन ने आत्मनिर्भरता को नई राह दी और आज के समय में लोग इनका आयात करते हैं।

समय के साथ-साथ राजनीति बदलती है, यह हम सब ने देखा है, यहाँ सत्ता का बोलबाला रहता है, जिसकी सत्ता उसकी कुर्सी होती है। यदि हम पिछले 10-12 साल की राजनीति पर नजर डालें तो बहुत बदलाव हुए है, सिर्फ राजनीति ही नहीं, लोगों की सोच भी और अपने सरकार के प्रति विश्वास भी, इससे पहले कई प्रधानमंत्रियों ने अपने कार्यभार को संभाला था। लेकिन आज हमारे देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी लोगों के बीच एक बेहद लोकप्रिय प्रधानमंत्री बनकर उभरे हैं। न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में उनके नाम की चर्चा है, चाहे वह उनके काम करने के तरीके की वजह से हो या उनके द्वारा लिए गए फैसलों की वजह से, खैर यह कोई चर्चा का विषय नहीं है। बीजेपी गैर कांग्रेसी पार्टी की ओर से लगातार 60 वर्षों में लंबे समय तक प्रधानमंत्री पद पर बने रहना काफी नया है।

लोगों में बदलाव तो आया है लोग समझने में अब पहले के मुकाबले आज बेहतर हो गए हैं कि कौन सही है और कौन नहीं। मोदी एक ऐसा नाम है जो हमारे बीच आया और अब हर घर में बच्चों-बच्चों तक फैला है, मोदी जिन्होंने गरीबी को सामने से देखा शायद इसलिए देश का हर गरीब उनको समझता है और मोदी जी भी उनकी स्थिति को बखूबी जानते हैं। अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने कई ऐसे काम भी

किए, जिससे हर तबके के लोग खुश हैं। आज भी कई मीडिया सर्वे में मोदी जी सबसे कद्दावर और भरोसेमंद नेता के तौर पर नजर आते हैं और इससे साफ पता चलता है कि उनके काम का कितना असर है, जो सीधे लोगों पर पड़ा है। उनके कार्यकाल में हर तबके तक बिजली पहुँची है, हर घर में चूल्हा पहुँचा है और हर सड़क लगभग हर राज्य को जोड़ती है और ऐसे कई काम हैं, जिनसे आने वाली पीढ़ी अच्छी तरह समझ पाएगी, क्योंकि वे न केवल आज के बारे में सोचते हैं बल्कि अपने भविष्य के बारे में भी सोचते हैं। इनका विजन काफी दूर का है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र को उन्होंने काफी अहमियत दी है, जिससे देश में निवेशक बढ़े, हमारे देश के युवाओं को रोजगार मिले और हमारा देश तरक्की की राह पर बढ़ता रहे। यह सब उनकी दूसरों की सेवा का नतीजा है कि वह एक आम आदमी से प्रधानमंत्री बने।

कैसे चाय बेचते-बेचते इन्होंने राजनीति की तरफ अपना रुख किया? बचपन से ही लोगों की सेवा और देशभक्ति के प्यार ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है, नहीं तो बिना किसी पैरवी के यहाँ पहुँचना संभव नहीं है, यह जनता के हाथ में होता है, वे किसी पार्टी को वोट नहीं देते बल्कि एक सच्चे उम्मीदवार को वोट देते हैं।

आज हमारे देश में लगभग 70% आबादी हिंदू है और बाकी मुस्लिम, सिख, ईसाई हैं और आज हिंदू धर्म की अधिक जनसंख्या होने के बावजूद यह देश हिंदू राष्ट्र नहीं बन सका, यही हमारे देश की पहचान

है, एकजुटता और संस्कृति यह देश की धरोहर है और हमारा गौरव भी, जो हमें अन्य देशों में देखने नहीं मिलता है। बेशक, यहाँ बहुत से लोग सोचते हैं कि हमारा भारत देश एक हिंदू राष्ट्र बन जाए, यह सोचना तो लाजमी है, हर धर्म में ऐसे लोग सोचेंगे लेकिन इससे ऐसा भी हो सकता है, जिससे देश की एकता और अखंडता पर आँच आए, लोगों में मतभेद हो इसलिए कभी इस बारे में फैसला लिया ही नहीं गया, भले बहस और चर्चा हुई।

इस सरकार ने कई ऐसे बड़े फैसले लिए हैं, जिससे लोग सोचते हैं कि यह सरकार कट्टरपंथी हिंदुत्व की सरकार है, केवल हिंदुओं को प्राथमिकता देना ही इस सरकार का काम है और इस तरह के विचार रखना गलत नहीं है, हमारा भारत लोकतांत्रिक देश है, यहाँ लोग अपने विचार खुलकर लोगों के सामने रख सकते हैं, लेकिन हर सिक्के के 2 पहलू होते हैं और हमें दोनों पक्ष का समझना जरूरी होता है, तभी हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, लगभग 50 साल से भी ज्यादा समय से राम मंदिर की उलझनों ने हमारे समाज को जकड़ रखा था, कई बार हिंसक झगड़े देखने को मिले। कई नेताओं और कई महिलाओं ने अपना पक्ष रखा, मानों जो कोई इस राम मंदिर और बाबरी मस्जिद से जुड़ा था, उनकी संतानों की भी संतान हो गई, लेकिन कोर्ट और कचहरी के फैसलों का इंतजार मानों खत्म ही नहीं हो रहा था।

लेकिन यह बदलाव का समय था, मोदी सरकार द्वारा किए गए वादों में से एक जो राम मंदिर विवाद को हल करना था, यह एक दिन हल किया जाएगा, इसकी उम्मीद काफी कम थी और आज के समय न्याय प्रणाली ने उचित तथ्यों और मिले पौराणिक अवशेषों के आधार पर वहाँ राम मंदिर बनवाने का आदेश दिया गया। इतना ही नहीं उन धर्मों को मस्जिद बनाने के लिए अलग से जमीन भी दी गई क्योंकि यह आस्था का विषय था और लोगों की श्रद्धा इस मुद्दे से जुड़ी थी। अन्य धर्मों को इसका खेद तो हुआ लेकिन केवल उनके मन में और न्याय प्रणाली पर विश्वास दिखाते हुए, उन्होंने इस बात को स्वीकार किया। यही नहीं बल्कि तीन तलाक जैसे कानून लाकर, ना जाने कितनी भारतीय मुस्लिम महिलाओं का इंसाफ़ किया और विश्वास दिखाते हुए उन्होंने इस बात को स्वीकार किया। इसी के चलते कई महिलाओं ने अपने लिए आवाज उठाई, यह सरकार सबको साथ लेकर चली है और अब तक चलती आई है, सबका साथ सबका विकास अपने मंत्र के अनुसार और न केवल एक धर्म बल्कि सभी धर्मों के लिए बिना किसी भेदभाव के उचित निर्णयों के माध्यम से हित में कार्य किया है।

इस सरकार ने हमारे देश की पुरानी समस्या और अखंड भारत के सपनों को भी पूरा किया। कश्मीर मुद्दा, जो देश के लिए एक बहुत ही गंभीर मुद्दा बना हुआ था, अनुच्छेद 370 के कारण जो पहले के सरकार द्वारा लगाया गया, उसकी वजह से कश्मीर भारत का होकर भी नहीं था और माननीय नरेंद्र मोदी जी अपने शुरुआती समय में भी इस मुद्दे पर

अपनी आवाज उठाते थे। उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद उनकी यह इच्छा पूरी हुई, आज भारत का अपना अधिकृत कश्मीर है, जहाँ सभी अधिकार भारत सरकार के अधीन हैं और हर भारतीय चाहता था कि कश्मीर हमारा हो और इस सरकार ने इस सपने को पूरा किया है, आज भारत जवाब देना जानता है, अपना हक लेना जानता है और लोग भी मानते हैं कि यह सब काम हुआ है, लोग भी खुश हैं लेकिन क्या ये खुशियाँ काफी है..?

# अध्याय - 2

# पत्रकारिता पर दाग

मोदी सरकार के आने के बाद "गोदी मीडिया" का यह शब्द खूब लोकप्रिय होकर सबके सामने आया। मोदी विरोधी लोगों ने हमेशा "गोदी मीडिया" बोलकर सरकार पर निशाना साधा है, उनका मानना है कि मोदी सरकार हमेशा मीडिया का सहारा लेकर अपनी सरकार को बेदाग साबित करती है, देश की बेरोजगारी और महँगाई पर कभी मीडिया का ध्यान नहीं जाता, मीडिया मोदी के खिलाफ कोई कुछ नहीं बोलता, मोदी के डर से मीडिया हमेशा उनका साथ देता है, उनका यह भी मानना है कि पत्रकारिता में अब ईमानदारी नहीं रही। मोदी सरकार के इशारे पर वे फर्जी और भड़काऊ खबरें चलाते हैं, जिनका कोई आधार नहीं है। इन में सच्चाई नहीं बल्कि असत्य तरीके से लोगों को गुमराह किया जाता है।

ऐसे लोग कभी यह नहीं मानते कि मीडिया केवल अपने टी.आर.पी को बढ़ता देखना चाहती है और हमेशा ट्रेंडिंग चीजों को ही दिखाती हैं। मोदी एक लोकप्रिय शख्सियत हैं और लोग सिर्फ उन्हें देखना सुनना चाहते हैं, मीडिया पीछे की खबरें नहीं दिखाता बल्कि वर्तमान में जो चल रहा है, उसे दिखाता है। वर्तमान सरकार में मोदी सरकार है तो वह वही दिखाएंगे ना कि मनमोहन सिंह जी की सरकार के बारे में बताएंगे और रही बात बेदाग साबित करने की तो मोदी सरकार में आज तक कुछ ऐसी घटना सामने नहीं आयी है, जिन से उन पर दाग लग सकते हैं, आरोप लगाना और आरोप सिद्ध होना दोनों में काफी फर्क है, इस सरकार ने हमेशा खुद को प्रत्यक्ष रूप से लोगों के सामने रखा है इससे ऐसा कुछ साबित नहीं होता कि मीडिया मोदी के इशारों पर चलती है, अब यह लोगों पर निर्भर करता है कि वह सरकार के बारे में कैसे सोच रखते हैं।

देश के लोगों ने कई सरकार को गिरते उठते देखा है, देश की राजनीति में उथल-पुथल होना भी, जो भारत का पुराना इतिहास रहा है। किसी क्षेत्र से चुनकर आए विधायक राजनीति में प्रमुख किरदार निभाते हैं, सरकार गिरानी हो या सरकार बनानी, सब किसी विधायक पर ही निर्भर करता है। बात की जाए भूतपूर्व सरकार की तो कई बार राज्य में राजनीति में बड़ा बदलाव आया है, एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाकर समर्थन देना और मौजूदा सरकार का तख्तापलट हो जाना। लोगो ने यह काफी बार देखा हैं, कई लोग मानते हैं कि इस तरह की घटनाएं तब होती

हैं जब विधायकों की बोली लगती है, किसी अन्य पार्टी के नेता विधायकों की कीमत बता कर, उन्हें अपनी पार्टी की ओर खींचते हैं, उन्हें मीडिया और जनता से दूर अपने किसी रिजॉर्ट में रुका कर, उनसे मोलभाव किया जाता है, जो देश की जनता को पूरी तरह समझ में आता है।

मीडिया भारत के चार स्तंभों में से एक अहम स्तंभ माना जाता है, इनसे लोग उम्मीद करते हैं कि यह देश की हर सच्चाई को बड़ी बेबाकी के साथ दिखाएं और सरकार को भी मीडिया को स्वतंत्र रूप से अपना काम करने देना चाहिए, मीडिया जो दिखाती है, वही पूरा देश देखता है और उसे सच मान लेता है, क्योंकि देश में चल रहे बातों का ज्ञान उन जनता को भी होना जरूरी है। मीडिया और जनता के बीच का संबंध हमेशा से अटूट रहा है, इसलिए जरूरी है कि मीडिया अपने सच्चाई पर अटल रहे हैं और वही दिखाएं जो सच हो केवल टी.आर.पी और अपने विकास के लिए झूठी खबरों को या सरकार की तरफदारी यह सरासर देश की जनता के साथ धोखा है।

सरकार को मीडिया में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि भारत का संविधान यह कहता है कि मीडिया पूरी तरह स्वतंत्र होकर अपनी बात लोगों के सामने रख सकती है।

आज हम देख रहे हैं कि कुछ मीडिया केवल अपनी टी.आर.पी को बढ़ाने के लिए झूठ को भी ऐसे सच बनाकर दिखाते हैं,

जिस पर लोग आसानी से भरोसा कर लेते हैं, इससे अफवाहों को बढ़ावा मिलता है, लोग गलत भ्रम में जीते हैं लेकिन कहीं ना कहीं कुछ बुरा होता है, तो अच्छा भी होता है। लोगों को इसकी सच्चाई आज नहीं तो कल पता चलती है और उनकी वास्तविकता पूरी दुनिया के सामने आ जाती है, ऐसे मीडिया कर्मी की जरूरत इस देश को नहीं है और यह सरकार को भी समझनी चाहिए कि ऐसे मीडिया का अस्तित्व ही देश को गुमराह कराने और लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए होता है, तो ऐसे मीडिया कर्मियों का प्रसारण का सारा हक वापस लेना चाहिए।

## अध्याय - 3

# युवा और राजनीति

हमारा भारत युवा भारत है, जहाँ युवाओं की संख्या अधिक है, युवाओं में राजनीति के प्रति लगाव कुछ खास नहीं है, क्योंकि देश में क्या चल रहा है? देश की क्या स्थिति है? उससे उन्हें कुछ ज्यादा फर्क नहीं पड़ रहा, उन्हें मतलब है तो केवल अपने शैक्षणिक जीवन और अच्छे भविष्य से। यह भी सोचने वाली बात है कि अगर हमारी आज की पीढ़ी और आने वाली पीढ़ियां अगर देश की चिंता नहीं करते तो यह काफी बुरे संकेत है, क्योंकि हमारे देश को ऐसे नेता की जरूरत है जो देश को एक नए मार्ग की ओर ले जाए, ऐसे ही शिक्षित युवाओं की राजनीति में काफी हद तक जरूरत है, जो देश को अपनी योग्यता और देश प्रेम की चाहत से देश को एक नई ऊंचाइयों तक लेकर जा सके और हम देख रहे हैं कि युवक केवल यह सोचने में लगे हैं कि राजनीतिक एक ऐसा कीचड़ है, जिसमें जाकर केवल फंसना है, लेकिन अगर युवा आगे नहीं आएंगे

तो अपनी शक्ति के दम पर कुछ ऐसे नेता उस जगह आएंगे जहाँ से सिर्फ देश पीछे की ओर जाएगा।

सवाल यह है कि युवाओं को राजनीति में कैसे आने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, पहली बात तो यह है कि युवाओं में खुद के अंदर से आवाज आनी चाहिए, उन में एक नई क्रांति का संचार आना चाहिए और उनमें देश प्रेम होना चाहिए, जिससे उन्हें राजनीति में अपना कदम आगे लाने में कोई हिचकिचाहट ना हो, नहीं तो हमारी देश की बागडोर ऐसे लोगों के हाथ में होगी, जिन्हें खुद संभलने का होश नहीं होगा। उन्हें मतलब होगा तो केवल अपनी तिजोरी भरने से और यही अंतर होता है, एक शिक्षित और अनपढ़ व्यक्ति में, आज भारत की स्थिति यह है कि उन्हें समझ में आता ही नहीं कि अपना वोट कहाँ डालें, घंटों की लाइन और बिना किसी समझ से ऊबे हुए लोग, जहाँ मन किया उस बटन को दबा देते हैं, मतलब अपने ही चुने उम्मीदवार पर उन्हें भरोसा नहीं होता। एक युवा जिसे यह तक नहीं समझता कि अपना कीमती वोट कहाँ डालें किस जगह डाले वह युवा भला क्यों राजनीति में दिलचस्पी लेगा, सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि उन युवाओं के मन में बचपन से ही फिक्स कर दिया जाता है कि तुम्हें पढ़ लिखकर बस डॉक्टर, इंजीनियर, साइंटिस्ट बनना है, उन्हें यह नहीं सिखाया जाता कि देश के प्रति सेवा और सही राजनीति के माध्यम से तुम देश को एक नई दिशा दे सकते हो।

उन सभी माँ-बाप का कर्तव्य है कि बचपन से ही उन्हें उन बातों का भी आभास कराएं कि राजनीति भी एक ऐसा मंच है, जहाँ आप अपने देश प्रेम की भावना से अपनी काबिलियत देश की सेवा में दिखा सके, लोगों से यहाँ वोट लेकर अपना पद मिलने के बाद एक नेता कैसे सभी लोगों को पीछे छोड़ देता है, यह देश आज से नहीं भारत के शुरुआती राजनीति से देख रहा है,ऐसे में यह जरूरी हो गया है कि आज के युवाओं में राजनीति की प्रति यह सोच डाली जाए, जिससे देश का भला हो ,उनकी शिक्षा और समाज को आगे ले जाने की इच्छा बस अंदर ही नहीं बल्कि देश के किसी काम आ सके और यह हर युवा वर्ग का कर्तव्य है कि देश के हितों के बारे में सोचे देश में हो रहे भ्रष्टाचार सामाजिक संघर्षों को भी समझना होगा, उन्हें यह समझना होगा कि कौन सा नेता हमारे समाज हमारे क्षेत्र हमारे गॉव के लिए सही है, जो हमारे बारे में सोच सकता है हमें आगे बढ़ा सकता है या खुद राजनीति में उतर कर अपनी शैक्षणिक योग्यता कर्मठ रूप से देश की सेवा करने के लिए आगे आकर देश का भला कर सके।

उन्हें यह समझना होगा कि हजारों मील दूर रास्ता भी पहले अपने कदम से शुरू होता है और अंत में वह खुशी का अनुभव भी कराता है, जब आप अपने लक्ष्य को पूरा कर लेंगे। युवाओं पर ही देश के भविष्य की जिम्मेदारी होती है, केवल उनके माता-पिता ही नहीं देश भी उनसे एक उम्मीद करता है कि उनकी नई सोच से हम सबका विकास हो, यहाँ बड़े-बड़े ग्लोबल कंपनी के सीईओ बनने या बाहर देशों में बड़े

डॉक्टर इंजीनियर बनने तक भारत के युवाओं ने शत-प्रतिशत सिद्ध किया है।

अब जरूरत है, उनकी भागीदारी राजनीति में भी हो भारत की राजनीति उनकी नई सोच से कहीं ज्यादा बेहतर और देश के लिए फायदेमंद साबित होगी। कब तक यह देश ऐसे लोग चलाएंगे, जिनकी सोच पुरानी और उम्र काफी ज्यादा हो गई हो, युवा इस क्षेत्र में रुचि नहीं रख रहे, इस कारण ऐसे नेता है, जो देश की बाद में पहले अपने बारे में सोचते हैं, इसलिए हमें ऐसे युवाओं की जरूरत है, जिनकी सोच से भविष्य बेहतर हो सके, उन्हीं की सोच से देश को एक अच्छा राजनेता मिलता है। हमें यह समझना होगा कि युवा ही देश के भविष्य हैं और उन्हें राजनीति के प्रति लगाव हो तब जाकर इस देश की व्यवस्था ठीक की जा सकती है।

आज यही राजनेता युवाओं को प्रेरित नहीं बल्कि उनकी मजबूरी का फायदा उठा कर उनको गलत करने पर मजबूर करते हैं और उन्हें राजनीति का गलत मतलब सिखाते हैं। ऐसे में युवा राजनीति से दूर नहीं जाएँगे तो और क्या उन्हें ऐसे रास्ते पर धकेला जाता है, जो कि उन्हें साफ सुथरी राजनीति से दूर करती है। आज युवा कुछ पैसों के लिए राजनेताओं की रैली का शौक से हिस्सा बनते हैं, उनके लिए नारे लगाते हैं, उन्हें शराब और पेट्रोल के पैसे देकर बाइक्स की रैलियां करवाते है, उन्हें भले यह ना पता हो कि वह सही और गलत का साथ दे रहे हो,

लेकिन पैसे को अहमियत देकर वह देश की राजनीति को गंदा करने में पूरा सहयोग कर रहा है। ऐसे में हम कैसे उम्मीद करें कि देश के युवा आने वाले समय में देश की राजनीति को मजबूत और निष्पक्ष रखेंगे। सबसे पहले तो यह जरूरी है कि किसी तरह युवाओं में राजनीति के प्रति लगाव लाया जाए, उन्हें सही गलत का आभास कराया जाए। पैसों से ज्यादा देश की प्रगति महत्वपूर्ण है और यह तभी मुमकिन है, जब देश की राजनीति साफ होगी और यह केवल आज के युवा सोच सकते हैं। अपनी मजबूरी नहीं अपने हालात को समझना उनके लिए जरूरी है। अगर अपने हालात को वह अपनी मजबूरी बना लेंगे तो ऐसे में कुछ अच्छा सोचना गलत है, राजनीति को सही दिशा देने की आवश्यकता है और यह हर भारतवासी चाहते हैं, किंतु इसे बदलने की इच्छा काफी कम लोग रखते हैं।

हमारे देश के पास इतनी संप्रभुता और देशवासियों के अंदर इतनी काबिलियत है कि वह जो चीज ठान ले वह चीज कर सकते हैं, किंतु कहीं ना कहीं अपने अंदर झाँकने में और देरी कर देते हैं। अपने हालात को प्रॉब्लम बता कर, उस हालात से लड़ने के लिए अपना पूरा जीवन झोंक देते है और यही सबसे बड़ी कमजोरी है। अगर हमारा देश में शुद्ध राजनीति हो और युवाओं का रुझान राजनीति की ओर आकर्षित किया जाए, तो इस देश की तकदीर बदली जा सकती है। हमारा देश दोगुनी रफ्तार से आगे बढ़ सकता है, लेकिन युवा इस कदर अपने आप को राजनीति से पीछे रखता है। मानों राजनीति से उसका कोई दिलचस्पी

ही ना हो शायद इसी वजह से हमारे देश में बहुत ही कम युवा नेता है, अगर है भी तो वह भी परिवारवाद, जो कि पैसे और कुर्सी के दम पर राजनीति से लोगों पर धौंस जमाते हैं।

# अध्याय - 4

# राजनीति पर लोगों के अलग-अलग विचार

इन सब बातों में कितनी सच्चाई है, यह उन पार्टी के विधायक और मौजूदा सरकार को ही पता है, किंतु इससे जनता का भरोसा टूटता है, यह बातें ना भूतपूर्व सरकार के वक्त होती थी, बल्कि मौजूदा मोदी सरकार के वक्त भी देखी गई है, ऐसी घटनाएं, हमे राजस्थान और मध्य प्रदेश में भी दिखा है, वही नहीं बल्कि देश के अलग-अलग राज्यों में भी देखा गया है।

इन सब चीजों से देश की जनता का भरोसा टूटता है, वे अपने भरोसे से किसी उम्मीदवार को अपना कीमती वोट देकर, उन्हें चुनकर लाते हैं, उनसे आस लगाए रहते हैं, जब उन्हें पता चलता है कि हमारे द्वारा चुने कई नेता कुछ पैसों के लिए पार्टियां बदलते रहते हैं, ऐसे में जनता यह सोचती है, उन्हें देश और देश के लोगों से ज्यादा शोहरत से प्यार रहता है, जिससे साफ जाहिर होता है कि ऐसे नेता देश का विकास नहीं सोचता, यह सब एक भ्रष्टाचार नहीं तो क्या है? इसको भ्रष्ट रूप से

देखना गलत नहीं और हमारे मीडिया को खुलकर इस पर बात करनी चाहिए, जिससे हर किसी को इस बारे में मालूम पड़े, सभी को यह ज्ञात होता है कि राजनीति में चल क्या रहा है।

इन सब कारणों से देश की राजनीति और सरकार पर धब्बा लगता है, क्योंकि सब एक जैसे नहीं होते, जिन्हें शोहरत की लालसा होती है, वही इन सब चीजों का सहारा लेकर आगे बढ़ते हैं। अब तक हर सरकार में ऐसी घटनाएं हुई है, जिससे भारतीय राजनीति शर्मसार हुई पिछले सरकार की बात करें तो, वहाँ ऐसी घटनाएं होती रहती थी और देश की तरक्की भी, मानों ना के बराबर थी, देश में गरीबी दर और विकास दर बिल्कुल ना के बराबर था।

आज इस वक्त तो पूरा विश्व अपने आर्थिक हालात बेहतर करने में लगा है, लोग महँगाई को आसमान छूता देख रहे हैं। हर व्यक्ति के मन में यही संकोच रहता है कि क्या हम स्थिति से बाहर निकलेंगे। ऐसी स्थिति हमेशा हमारे जीवन में रहेगी, भारत देश भिन्न परिस्थितियों को झेल रहा है, अगर ऐसे ही चलता रहा तो आने वाले समय में आर्थिक मंदी से गुजरना पड़ सकता है। कई लोग इस स्थिति के लिए सरकार को जिम्मेदार बताते हैं, विपक्ष भी पूरी तरह सरकार को घेर रहा है और इस महामारी से लड़ने में सरकार पूरी तरह से विफल रहा ऐसे निशाने आए दिन विपक्ष की ओर से आते रहते हैं। विपक्ष में जब कोई राजनीतिक दल होता है तो, उन्हें देश की स्थिति लोगों की सोच से कोई

मतलब नहीं होता, उन्हें मतलब होता है तो, केवल सत्ता से सत्ता आने के बाद ही वे विकास और लोगों की सोचेंगे, लेकिन उस वक्त जो जनता को गुमराह किया जाता है, किसी सरकार के कामकाज को गलत बताया जाता है। यह असल में किसी को पता नहीं होता, उसके पीछे की वजह किसी को समझ नहीं आती, किंतु इस कदर लोगों के दिमाग में डाला जाता है कि हाँ यह गलत है, जिसे कई नागरिक असमंजस में रहते हैं, लेकिन उन हालात को अनुभव करने की आवश्यकता है, उन्हें यह समझना होगा कि, किस सरकार के कार्यकाल में कितना काम हुआ है? केवल एक प्रधानमंत्री के रूप में पूरे देश को देखा जाता है, प्रधानमंत्री देश के हालात पर नजर भी रखता है, और उसे खत्म या बेहतर करने के लिए हर संभव प्रयास भी करता है। आज तक के जितने भी प्रधानमंत्री देश को मिले, उन प्रधानमंत्री की ओर से कई ऐसे बड़े काम हुए है, जिससे देश आज भी उन्हें याद करता है, लेकिन क्या वह आम जनता के लिए फायदेमंद है या नहीं, यह सिर्फ जनता ही समझती है और इस पर लोग अपनी अलग-अलग सोच रखते हैं।

विपक्ष के इन निशानों से जनता गुमराह होती है, जनता को यह समझना जरूरी है कि विपक्ष केवल सत्ता के लालच में बोलने का काम करती है, वे बस यही चाहते हैं कि जिसकी सरकार है, उसे जनता के सामने उनके भरोसे को गिराया जाए। बात पक्ष-विपक्ष की नहीं है, सरकार का किया काम ही जनता के काम आता है और बात की जाए काम की तो जनता समझती है, आज परिस्थितियां जो भी है वह

महामारी के चलते हुआ ना की किसी सरकार के नाकाम कोशिशों के कारण और जो पिछले 50 वर्षों में हुआ उसे हर कोई जानता है।

क्या इन 50 वर्षों में देश के किसी भी नागरिक ने अनुभव किया, जो आज के मौजूदा सरकार में अनुभव कर रही है। यह अनुभव विकास का है, जो हर क्षेत्र, हर गॉव, हर लोगों तक पहुँच रहा है, पारिवारिक राजनीति जो आज तक पहले की सरकार में चल रहा था, उन्हें केवल अपनी सरकार चलाने से मतलब था, देश की आर्थिक सामाजिक विकास से कोई लेना-देना नहीं था, यह बात हर कोई समझ रहा है, हर कोई जानने की कोशिश कर रहा है कि क्यों भारत देश उस स्थान पर नहीं है, जहाँ भारत को होना चाहिए। हमारे देश के पास क्या नहीं है, यहाँ खनिज से लेकर प्राकृतिक संसाधन, यहाँ के लोगो में आत्मविश्वास सब कुछ है, लेकिन फिर भी देश की प्रगति, उस तरीके से नहीं हुई जो पिछले 10 वर्षों में हो रही है।

यह सोच हर उस व्यक्ति की है, जो देश की भलाई चाहता है। अब उन्हें विकास दिख रहा है, यह देश बढ़ता दिख रहा है, अब तक के इतिहास में कई आंदोलन कुछ आंतरिक और कुछ देश के लिए आंतरिक मामलों में ज्यादातर किसान आंदोलन देखे गए हैं, कुछ लोग जो मोदी समर्थक है, उनका मानना है कि देश में जिस वक्त जो किसान आंदोलन हुआ, इसका जिम्मेदार और कोई नहीं बल्कि मौजूदा सरकार है और लगभग वर्ष भर आंदोलन चलता रहा और यह मुद्दा हिंसा तक

भी उतर आया था, जिससे पूरा देश मानों किसानों को एक अलग रूप में देख रहा हो। यह सोची समझी चाल थी या फिर उन किसानों का गुस्सा? यह आज तक कोई नहीं समझ पाया, लेकिन हमारे देश में दो सोच रखने वाले लोग हैं, इनमें से एक तबका ऐसा सोचता है कि वह किसान सही कर रहा है और दूसरा यह सोच रहा है कि एक किसान एक आतंकवादी के रूप में आंदोलन कर रहा है, लेकिन सच्चाई क्या है, यह बात सभी को मालूम होनी चाहिए और जो सच है वही बात सभी के सामने आनी चाहिए।

किसानों की माँग यह थी कि, पिछले कानून को रद्द किया जाए और नए किसान कानून को लाया जाए, जिससे उनके और खरीददार के बीच कोई बिचौलिया ना आ पाए और इसका सीधा मुनाफा किसानों तक पहुँचे। भारत देश लोकतांत्रिक देश हैं, यहाँ हर किसी को अपनी बात रखने का मौका मिलता है, यहाँ आंदोलन भी होते हैं, यहाँ मोर्चे भी निकलते हैं, खुलेआम एक दूसरे के विरुद्ध भाषण भी होते हैं, लेकिन उसकी भी एक मर्यादा होती है, जो हमें किसान आंदोलन में नहीं दिखा, लोगों की सोच के हिसाब से वह घटना सही थी, किसी के लिए गलत भी दिल्ली लाल किले से तिरंगा उतार कर किसी और झंडे को लगाना, यह देश का अपमान है और सामाजिक एकता इससे भंग होती है। कोई भी आंदोलन करने वाला गुट अपने समाज के लिए अपने क्षेत्र के लिए आवाज उठाता है तो, उन्हें धैर्य रखने की जरूरत है, कई वर्ष लगते हैं, ऐसे कानून पारित होने में और उससे अधिक वक्त लगता है, उस जगह

दूसरा कानून लाने में, हर बार चीजों को समझना पड़ता है, तब जाकर कोई फैसला लिया जाता है। और वही हुआ मोदी सरकार ने नए कृषि कानून को पारित किया, लेकिन कुछ का मानना है, यह कानून लाना राजनीतिक चाल है, क्योंकि चुनाव नजदीक हैं, अब सच क्या है, यह सरकार और उन लोगों पर ही छोड़ ना सही होगा, जो ऐसा सोचते है, लेकिन कुछ ऐसे लोग भी है, जो सोचते हैं कि भले चुनाव के डर से ऐसा हुआ, लेकिन हुआ यही काफी है, मोदी सरकार में जितने भी अच्छे काम हुए हैं, उससे उनकी सरकार आने वाले समय में बनेगी, इसके लिए इस सरकार का अब तक का किया काम ही पर्याप्त है।

सरकार चाहे जिसकी भी हो, लेकिन उस सरकार द्वारा किए गए कार्यों से आम जनता तक फायदा पहुँचे, यही उद्देश्य से नागरिक अपना कीमती वोट एक उम्मीदवार को देते हैं, लेकिन फिर भी कहीं ना कहीं नागरिक संतुष्टि का अनुभव नहीं करते हैं, क्योंकि सरकार द्वारा उन्हें किसी भी तरह का फायदा नहीं होता, ऐसे में वह अपेक्षा कम और सरकार को कोसते ज्यादा है, इनमें से मुख्यतः मिडिल क्लास और युवा वर्ग ज्यादा होते है। एक मिडिल क्लास व्यक्ति अपने परिवार को चलाने के लिए दिन रात मेहनत करता है, उसमें भी वह व्यक्ति दुनिया भर के टैक्स महँगाई से परेशान रहता है, ऐसे में वह सरकार के बारे में कैसे अच्छा सोच सकता है, हर व्यक्ति चाहता है कि वह अपने जीवन में तरक्की करें, ना कि और नीचे गिरे, ऐसे में उनकी सरकार के प्रति आलोचना जायज है, लेकिन देखा जाए तो आलोचना ठीक है किंतु हमें

यह भी देखना चाहिए कि सरकार अपनी तरफ से हर प्रयास करती है, महँगाई बढ़ाना और घटाना यह देश की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है, सरकार के हाथ भी कुछ नहीं होता, वह चाहे तो महँगाई जड़ से ही खत्म कर दें लेकिन ऐसा करने से देश और आर्थिक मंदी से गुजरेगा, सरकार लोगों की भावना नहीं समझती, ऐसा नहीं है, हालात सामान्य होने पर वह सभी चीजें उनके सही कीमत पर भी उपलब्ध कराते हैं, हमें यह सोचना चाहिए कि हमारा देश एक परिवार की तरह है और सरकार परिवार का मुखिया, जिस तरह एक व्यक्ति अपना परिवार चलाने के लिए जो कुछ करता है, वही काम सरकार करती है पूरे देश को परिवार समझकर, अगर हम उस नजरिए से देखें तो शायद हमें उस बात का अनुभव हो।

लोग सोचते हैं, हमारे कर्ज माफ हो, पहले लोग कर्ज के लिए परेशान होते हैं कि हमें कोई कर्ज नहीं देता, जब सरकार सभी के लिए कर्ज लेने का द्वार खोल देती है तो, बाद में कहते हैं कि कर्ज माफ करो, फिर भी सरकार अपने तरफ से हर संभव कोशिश करती है, अब किसी के होते हैं तो किसी के नहीं, जिनके होते हैं, वह यह समझे कि वह पैसा एक तरह से नुकसान है, ना आपका ना सरकार का, यह देश का नुकसान है, कई लोग जिनका नहीं होता, ऐसे व्यक्ति सरकार को कोसने का कोई कसर नहीं छोड़ते, खासकर विपक्ष वह ऐसे मुद्दों का सहारा लेकर सरकार को बदनाम करते हैं, जिससे उनकी छवि लोगों की नजरों में खराब हो,

विपक्ष के पास कई बहाने होते हैं, किसी भी सरकार को बदनाम करने के लिए, चाहे पक्ष सरकार में विकास का कार्य क्यों ना कर रही हो।

कभी महँगाई, कभी धर्म या फिर जाति भेदभाव को लेकर सरकार को कोसते हैं, ऐसे में पक्ष वाली सरकार भी पीछे नहीं हटती और उनके कामकाज का हिसाब माँगने लगती है, राजनीतिक झगड़े तो होते रहते हैं, इससे आम जनता असमंजस में रहते हैं कि, क्या सही है और क्या गलत, उनके द्वारा चुने हुए लोगों से कुछ ऐसा सुनने मिलता है तो, लोगों का भरोसा और टूटता है, जिससे देश के नागरिकों की उम्मीद कमजोर पड़ने लगती है, इस बीच आम जनता इन सब में फंस कर रह जाती है, क्या देश में सरकार के प्रति अलग-अलग धारणा रखना जायज नहीं है? बिल्कुल जायज है! परिस्थिति के हिसाब से लोगों की सोच बन जाती है, आज जो वर्तमान सरकार है, जिसका चेहरा मोदी है, वे देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री है, आज लोगों के लिए सकारात्मक सोच है, इसका कारण उनके द्वारा किए गए कार्य हैं, उन्होंने देश के हर नागरिक तक अपने काम की छाप छोड़ी है।

युवाओं के लिए कोई फैसला लेना काफी आसान होता है, किसी भी सरकार को अच्छा बुरा पल-भर में सोच कर, उस पर अपनी अलग धारणा लोगो के समक्ष रखते है, इसका मुख्य कारण बेरोजगारी है और बेरोजगारी देश की सबसे बड़ी समस्या है, जिससे वर्तमान मोदी सरकार के प्रति इनकी सोच भी नकारात्मक होती दिखाई दे रही है, देश

के हर पहलुओं पर गौर करें तो, कहीं ना कहीं सरकार किसी क्षेत्र में पिछड़ी दिखाई देती है और बेरोजगारी मुख्य रूप से होती है, जिससे युवक काफी खफा रहते हैं और उनकी राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं रहती, जिससे सरकार इसे गंभीरता से लेने पर मजबूर हो जाती है, लेकिन फिर भी कहीं ना कहीं बहुत भारी संख्या में देश बेरोजगारी से जूझ रहा है, एक युवा जो अपनी शैक्षणिक योग्यता होने के बावजूद, एक नौकरी पाने के लिए इतनी तकलीफ उठाते हैं, जिन्हें अपने भविष्य को लेकर चिंता होती है, जो देश के भविष्य हैं, उनके बारे में सरकार क्यों नहीं कुछ सोचती, हर बेरोजगार युवा, सरकार की आलोचना करता है, वह भी मजबूर होते हैं, चाहकर भी कुछ कर नहीं सकते, इसके बावजूद कई युवा परिस्थिति को समझने का प्रयास करते हैं और यह सही समय आने का इंतजार करते हैं।

कुछ लोग बेरोजगारी को देश से जोड़कर देखते हैं, ऐसे लोग सोचते हैं कि देश की अर्थव्यवस्था जैसे-जैसे ठीक होगी, वैसे-वैसे देश का विकास होगा, जिससे बेरोजगारी को कम किया जा सकता है किंतु यह निर्भर करता है देश की सरकार पर, और वर्तमान में मोदी सरकार इसे कम करने के लिए कई ऐसे कदम उठा रही है, जिससे देश के युवाओं को भारी मात्रा में रोजगार मिले, मोदी सरकार में इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा काफी जोर से दिया गया है, सरकार कई विदेशी, देसी कंपनियों के साथ मिलकर काम कर रही है, जिससे देश के युवा रोजगार पा सके जिससे देश का भविष्य भी सुरक्षित रह सके।

इतना ही नहीं कई ऐसी योजनाओं की शुरुआत मोदी सरकार ने की है, जिससे देश के युवाओं तक लाभ पहुँच सकता है, जैसे स्टार्टअप इंडिया द्वारा युवा, अपनी प्रतिभा और कौशल के जरिए अपने भविष्य को संवार सकते हैं, इसमें सरकार की पूरी तरह सहयोग होती है, और ना जाने कितने युवा इस लाभ का फायदा उठाकर, अपने जीवन में आगे बढ़ रहे हैं, केवल कमी है तो, जानकारी कि, अगर सभी युवाओं तक इसकी जानकारी सही तरह से पहुंचाया जाए तो, कई युवा अपनी प्रतिभा को निखार सकते हैं, और बात करें रोजगार की तो, आने वाले समय में रोजगार की समस्या काफी हद तक कम होने की उम्मीद तो है, जिस प्रकार वर्तमान सरकार आगे भविष्य का सोचकर कार्य कर रही है, कई लोग ऐसा सोचते हैं कि, अभी से क्यों नहीं सभी को नौकरियां मिल रही है? क्यों यह बेरोजगारी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है?

लेकिन वास्तविकता यह होती है कि जिस प्रकार देश की आर्थिक स्थिति है, उसमें बड़े निवेशक बड़ी कंपनियों की देश में कमी दिख रही है और जो पहले से ही स्थिर रूप में थे, वह भी समय के साथ-साथ बंद हो रहा है, जिससे कई लोग बेरोजगार हो रहे हैं, पहले कि सरकार ने कभी इंफ्रास्ट्रक्चर को महत्व नहीं दिया और इसका विजन सिर्फ उनके चलने वाले कार्यकाल तक रहता था, लेकिन अब ठीक करने में वर्तमान सरकार को समय तो लगेगा ही और इस सरकार का विजन केवल कुछ साल का नहीं, बल्कि आने वाले भविष्य का है, और यह सब मुमकिन है, केवल और केवल मोदी जी के सोच के कारण राजनीति

नहीं देश के प्रति प्रेम ही किसी व्यक्ति को दिल से सोचने पर मजबूर करता है और यह हमें बीते 10 सालों में दिखा भी है, और आने वाले समय में भी दिखेगा।

कोई भी देश तब प्रगति की ओर बढ़ता है, जब उस देश के नागरिक उनके सरकार के साथ उनके काम को सहयोग करें, इससे सरकार को देश और देश की जनता के प्रति कुछ और अच्छा करने की प्रेरणा मिलती है, लेकिन हमारे देश में आज भी विभिन्न तरह के सोच रखने वाले लोग मौजूद हैं, जो सरकार को सहयोग भी करतें हैं, दूसरी तरफ यही लोग सरकार की आलोचना भी करतें हैं, वह भी तब जब कोई सरकार सही में अच्छा काम कर रही हो, लोग समझ नहीं पाते कि कौन हमारे लिए सही है? और कौन नहीं? हमारा देश सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहाँ विभिन्न प्रकार की सोच है, कहीं जाति को लेकर मतभेद होता है तो, कई धर्म के नाम पर, यह काफी शर्मनाक बात है कि, 21 वीं सदी में जहाँ हर कोई विकसित है, ऐसे जमाने में भी लोग जात-पात को लेकर बहस करते हैं, भारत ही ऐसा देश है, जहाँ लोग खुद से नहीं लोगों के बहकावे में आकर अपनी सोच को जन्म देते हैं, खुद के अनुभव को कभी अपने दिल से नहीं सोचते हैं, शायद यही कारण है कि देश में एकजुटता कहीं ना कहीं कमजोर पड़ रही है, हमे यह सोचना होगा कि हमारी सरकार को या हालात को, यह सब समझने के लिए लोगों के बहकावे में नहीं, खुद के दिल से सोचने की आवश्यकता है, तब जाकर हमें गलत सही के बीच का अंतर समझ में आएगा।

क्यों आज हर कोई सोचता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब तक के सबसे लोकप्रिय नेता है? तमाम विपक्षी दल साथ मिलकर केवल मोदी जी को गिराने का प्रयास करती रहती है, किसी भी तरह मोदी जी की छवि खराब हो जाए, ऐसे प्रयास हर रोज देखने को मिलता है, लेकिन लोगो की धारणा यह है कि भलाई करने वाले हमेशा सच्चाई के साथ अपना काम करते हैं पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ मोदी ने अब तक के कार्यकाल में अपना योगदान दिया है, आज देश में कई तरह की समस्याएं हैं, जो अभी तक हमें जकड़े हुए हैं, लेकिन सभी को यह उम्मीद भी जरूर है कि मोदी ने अब तक सब सही किया है, बाकी समस्याएं भी धीरे-धीरे कम होगी लोगों का उन पर विश्वास कई मायनों में यह सिद्ध करता है कि इतिहास के सबसे शक्तिशाली व्यक्तित्व की सूची में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल हो चुके हैं।

हमने आज तक कई नेताओं को देखा है, कई नेताओं के काम देखें है, कईयों के भाषण सुने, लेकिन अब तक की राजनीति के गणित के अनुसार लोग यही समझते हैं कि भाषण केवल वोट बैंक बढ़ाने के लिए होता है, मोदी ने भाषण के साथ-साथ उन वादों को भी पूरा किया है और उम्मीद है, बाकी वादे भी समय के साथ-साथ पूरे हो, यही पूरे देश की इच्छा है। समाज आज राजनीति के विषय पर अपनी सोच हर प्रकार से रखता है, लेकिन वह केवल उन तक ही सीमित रह जाती है, हमारी सोच, सरकार के प्रति आक्रोश रखने से सरकार को रत्ती भर भी फर्क नहीं पड़ता है, ऐसा क्यों होता है? इस पर कई लोग समझ नहीं पाते,

आखिर कैसे हमारी जरूरत, हमारी आवाज सरकार तक पहुँचे, क्या सरकार के कान नहीं है? या सुनकर भी नजरअंदाज किया जाता है, इस पर जितनी बहस की जाए, उतनी ही कम है।

आज हम सब राजनीतिक घेरे में बंधे हुए हैं, हमें यह मालूम होता है कि कोई नेता चुनाव आने पर क्या बोलेगा, किस मुद्दे को पकड़ कर लोगों को गुमराह करेगा, यह सब आज से नहीं सदियों से चली आ रही है, हमें आज तक ऐसी सरकार मिली ही नहीं, जो जनता के लिए हो, मौजूदा सरकार में हम महसूस तो कर रहे है, लेकिन कहीं ना कहीं कुछ गलत तो महसूस होता ही है, फिर भी कोई राजनीति पर बात नहीं करना चाहता, राजनीति को कैसे बदला जाए यह नहीं चाहता, सरकार भी खुद सत्ता के बचाव में राजनीति में फेरबदल करती रहती है और आम जनता यह सब से बेखबर कुछ कर नहीं सकते, लेकिन क्या बदलाव का समय नहीं आया? क्या हम इसे नजरअंदाज करना बंद कर सकते हैं?

आज हम देखते हैं कि संसद में गरीबों और देश की बात छोड़कर नेता अपने-अपने पार्टियों के बचाव में किसी भी हद तक गिर जाती है, यह भारतीय राजनीति में बहुत ही शर्मसार कर देने वाला समय होता है, हम जिसे समझते हैं कि यह नेता हमारे और हमारे देश के बारे में सोचेगा उसी नेता के पार्टी के कुछ लोग उस विश्वास और भरोसे को कमजोर कर देते हैं, ऐसी-ऐसी बातें करते हैं, जिसका ना तो विकास से और ना ही जनता से मतलब होता है, कई तो अभद्र भाषा का प्रयोग कर एक दूसरे को नीचा दिखाते हैं, लेकिन वास्तव में जो समस्या है, उस पर

कोई बात नहीं करना चाहता, उस पर ध्यान कोई देना ही नहीं चाहता, क्योंकि उनका काम भाषण देकर बस उस कुर्सी तक पहुँचना होता है, भले उन्हें उस कुर्सी की जिम्मेदारी और कार्य पता ना हो लेकिन यह जरूर पता होता कि जेब कैसे भरनी है, क्या ऐसे लोगों का राजनीति में होना सही है? विचार तो इस बात पर होना चाहिए कि ऐसे लोगों को भारी मतों से हम ही विजय कराते हैं, तो क्या कहीं ना कहीं यह हमारी ही गलती है कि हम पहचानने में गलती कर रहे हैं, बात कुछ भी हो इसे बदलने की आवश्यकता है, अन्यथा इससे केवल और केवल देश का नुकसान होगा।

एक चीज और बदलने की जरूरत है, जो कई वर्षों से चली आ रही है, सरकार के खर्चे जो खुद पर ही होने जैसा है, चुनाव के प्रचार हेतु हजारों रैलियां भाषणों के लिए कार्यक्रम क्या यह करना जरूरी है, वोट बैंक को बढ़ाने और पार्टी के प्रचार करने से देश का भला नहीं, देश के मौजूदा समय में नुकसान हो रहा है और हम जैसे लोग उस रैली-कार्यक्रम का हिस्सा बन जाते हैं, नारे लगाने लग जाते हैं, क्या यह करना जरूरी है? सरकार बस अपना काम ईमानदारी से करें तो अगले पांच साल बाद बिना प्रचार के भी उनकी सरकार बन जाएगी, यहाँ बात-बात पर रैली कार्यक्रम कराने से बस पैसों की बर्बादी करने जैसा है, यही पैसा बच्चों के लिए स्कूल अस्पताल जैसे देश के विकास कामों में लगाया जाए तो, देश कहाँ से कहाँ पहुँच जाएगा। लोग ही नहीं कहते कि हमारा देश सोने की चिड़िया है और आप भी है, बस उस चिड़िया को कैद में

रखे हुए हैं, पैसे खर्च किए जाते हैं, आज वोट के बदले नोट जैसी परंपरा हमारे देश में चल रही है, अगर यह सब बदलना है तो बदलाव पहले हमारे अंदर लाना होगा, तब जाकर राजनीति में जो गलत होता है, उसे हम ठीक कर सकते हैं और ठीक होने से काफी कुछ बदलेगा भी, ऐसा कानून लाया जाए कि नेता बनने के लिए पहले उनकी काबिलियत पर की नौकरी पाने के लिए कोई इंटरव्यू देता है, ठीक उसी तरह एक नेता को उस पद और योग्यता के आधार पर ही कुर्सी मिले, भले वह जनता द्वारा चुन कर आया हो, क्या पता उसने गुमराह किया हो, वोट खरीदे हो, अगर यह सब हुआ भी हो तो उस नेता को एक और चरण पार करना होगा, उसे उसकी योग्यता साबित करनी होगी।

और यह काम एक ऐसी कमेटी करेगी, जो देश और देश के लोगों का भला सोचती हैं, ऐसा करने से हमें उन नेताओं से छुटकारा मिलेगा, जो देश बाद में और जेब पहले वाली सोच रखते हैं और जो नेता योग्यता अनुसार कमेटी द्वारा भी चुनकर आता है, उससे पूरे देश को फायदा होगा, ऐसे में हर क्षेत्र और हर राज्य में होना चाहिए, जिससे वह दिन दूर नहीं कि भारत को विश्व शक्ति के रूप में देखा जाए, क्योंकि भारत देश मजबूत देश है, भारत के पास सब है, केवल राजनीतिक कारणों से देश अव्यवस्था और भारत आज तक एक्शन सेल देशों की गिनती में आता है, बल्कि भारत को विकसित राष्ट्रों होना चाहिए।

राजनीति पर ही देश के विकास का दारोमदार होता है और यही सरकार का मापदंड तय करती है कि उनकी योजना किस प्रकार है।

उनके कार्यकाल तक वह देश के लिए क्या कर सकते हैं एक प्रधानमंत्री जो सरकार मैं एक मुखिया ही नही बल्कि पूरे देश का मुखिया बनकर उस योजना को अंजाम तक पहुँचाने का प्रयास करता है, देखा जाए तो प्रधानमंत्री का औदा कई मायनों में लोगों के लिए महत्व रखता है, क्योंकि लोगों की आँख और देश की साँस एक प्रधानमंत्री के हाथ में होती है, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मौजूदा सरकार में वही कार्य कर रहे हैं, जैसे कि लोगों को अपेक्षा थी, लोगों को लगने लगा है कि मोदी ने अपने कुर्सी की दावेदारी अच्छे से सिद्ध की है और आने वाले 15 वर्षों तक इस कुर्सी के हकदार है।

यह सब अचानक से नहीं हुआ, एक समय उनके लिए ऐसा भी था कि, कई लोग इनके विरुद्ध खड़े थे, दंगाइयों को भड़काने में इनका नाम लाया जाता था, रेल हादसे में दोषी बताया जा रहा था और ना जाने आज भी कितने प्रकार के तानों से उन्हें सुनाया जाता है, उनके विरुद्ध कितनी आवाजें उठाई जाती है, इससे क्या सिद्ध होता है कि नरेंद्र मोदी अपना काम नहीं कर रहे हैं? बात चाहे जो भी हो लेकिन यह बात तो जरूर है कि इस कुर्सी पर बैठकर इतने बातो को नजरअंदाज हर कोई नही कर सकता, ये केवल वही कर सकता है, जिसे चिड़चिड़ापन हो जाए, क्रोध आ जाए, अगर जिसे नहीं आता तो यह समझना गलत नहीं होगा कि वह व्यक्ति देश प्रेमी है और यह औहदा इतना आसान भी नहीं है, जैसा कि कई लोग सोचते हैं, एक प्रधानमंत्री के पास आलीशान घर काफी पैसे अलग रुतबा होता है, लेकिन इस औहदा पर टिके रहना

कड़वे बोल से लड़ना और लोगों का आक्रोश, देश की समस्या, महँगाई को काबू करना, योजनाएं, यह सभी का बोझ एक प्रधानमंत्री पर होता है।

अगर सरल भाषा में कहा जाए तो विपक्ष-पक्ष को हर बड़े छोटे, देश-विदेश सभी को साथ लेकर चलना पड़ता है, सभी विचारों को सुनना और खुद के विचार का आँकलन कर किसी फैसले तक पहुँचना पड़ता है, क्योंकि फैसले से फायदा नुकसान दोनों बराबर है, भारत देश इतनी विविधताओं वाला देश है, जहाँ कभी कोई एक साथ खुश नहीं होता, चाहे कोई भी बात हो किसी एक तबके को निराशा होता ही है, बावजूद इसके काफी सोच समझकर कर प्रधानमंत्री अपना फैसला लेता है, देश के साथ-साथ कैसे विदेश नीति में अच्छा करना है, यह एक केवल प्रधानमंत्री जानता है और यह देश के लिए काफी जरूरी है, विदेश से अच्छे संबंध व्यापार और शांति समझौते से देश में आर्थिक और शांति दोनों एक समान बढ़ते हैं और एक प्रधानमंत्री यह बात बखूबी जानता है कि भले लोग क्यों ना कहें कि प्रधानमंत्री तो इन्हें घूमने के लिए बनाया था, हमें लेकिन लोगों को यह समझना होगा कि एक देश की प्रगति विदेश से अच्छे संबंधों से होती है।

देश में अधिकांश लोग राजनीति की ओर अपेक्षा भरी नजरों से देखते हैं, उन्हें बस विकास से मतलब होता है, लोगों की यह सोच सरकार को भी मजबूर करती है कि उनके लिए कुछ किया जाए, हालांकि यह सोच पहले से ही उनके अंदर जिम्मेदारी लेते वक्त होनी चाहिए, क्योंकि उन पर पूरे देश को विश्वास होता है।

हमारे देश की राजनीति कुछ इस प्रकार है कि देश में चल रहे लोगों की आपसी फूट को अपने वोट का माध्यम समझते हैं, जात-पात से हटकर राजनीति पूरी ही नहीं होती और ऐसे में देश की एकता पर कहीं ना कहीं सवाल उठते हैं, जब की भारत देश केवल और केवल यहाँ की संस्कृति और एकता के लिए जाना जाता है, सियासी नजरिए से देखा जाए तो किसी पार्टी या किसी नेता के लिए यह फायदेमंद तो जरूर होता है, लेकिन वास्तविक तौर पर देश का माहौल खराब होता है, ऐसे में हम जैसे लोगों को इस सावधान रहना होगा, हमे कहीं भी ऐसा लगे कि फूट डालो वाली राजनीति हो रही हो तो, तुरंत उस पर आवाज उठाना होगा, जिससे लोकशाही का अर्थ सही मायने में सत्य हो और इतिहास गवाह है कि लोकतंत्र की शक्ति से कई सियासी तख्तापलट हो चुके हैं।

लेकिन यह खुद के अंदर से होनी चाहिए, ना की किसी के बहकावे में आकर, क्योंकि हमारे देश में ही ऐसे अलगाववादी नेता है जो कि लोगों में नफरत फैलाकर देश का नुकसान करते हैं, किसी और के इशारे से चलना घातक सिद्ध हो सकता है, क्योंकि उसके पीछे भी कुछ ऐसा राजनीतिक चाल होता है, जिससे हम बेखबर होते हैं और बाद में हमारे ही पछतावे का कारण बन सकता है, राजनीति को समझना भी हर किसी के बस की बात नहीं, इसे समझने के लिए भी आपको एक नेता बनकर सोचना पड़ेगा, यह समझने का प्रयास जरूर करना पड़ेगा कि क्या सही है और क्या गलत, इतना तो हमें पता ही होना चाहिए कि किस सरकार में हमें किस तरह के काम देखने मिले, किस तरह फायदे हम तक

पहुँचे हैं, इतना ही काफी है, यह समझने के लिए कि कौन सी सरकार आपके लिए सही है और कौन सी गलत इसी में देश और देश की जनता का विकास है।

हम अक्सर देखते हैं कि मीडिया द्वारा दिखाए जाने वाली खबरें, बिना हाथ पैर के होते हैं, हमें केवल वही खबरें दिखाई जाती है, जो देश में चल रहे, गंभीर मुद्दों से हमारा ध्यान भटकाती है, जो समझने वाले लोग होते है, वह समझते है, किंतु आज भी देश में कई लोग भारी संख्या में है, जो अशिक्षित और राजनीति के बारे में कुछ ज्ञान नहीं रखते, जिससे देश में चल क्या रहा है, वे उससे बेखबर रहते हैं, और इससे देश में अधिकतर लोगों को गुमराह किया जाता है। मीडिया और राजनीति दोनों एक दूसरे के लिए ही होते हैं, यह सवाल आज भी लोगों के मन में है, यह पता चल पाना मुश्किल भरा होता है, क्योंकि एक तरफ हमें अच्छे कामों का परिणाम भी सरकार द्वारा दिखता है।

देश में कई बजट पास होते हैं और बजट में जिस तरह संसद में उत्साह और बड़ी-बड़ी घोषणाएं होती हैं, उसे देखने और सुनने वाली जनता बस यह सोचती है कि अब जाकर हमें फायदा पहुँचेगा, लेकिन हर बार की तरह बजट तो पास होता है, किंतु उसका असर आम जनता के जीवन पर बिल्कुल नहीं पड़ता। अगर कुछ होता भी है तो, उद्योगपतियों की टैक्स में कटौती महँगाई और ऐसे लोगों तक फायदा पहुंचाते हैं, जिन्हें जरूरत ही नहीं हो,ती ऐसे में मध्यम वर्ग हमेशा की तरह परेशान होता है। महँगाई कम नहीं होती, उसे बस रोकेंगे और समय

आने पर फिर उसी मूल्य के आगे महंगे दाम बढ़ाए जाएँगे, जिससे आमदनी तो उतनी ही होती है, खर्चे हर महीने बढ़ते जाते हैं।

देखा जाए तो महँगाई बढ़ती तो है, लेकिन कंपनी घाटे में नहीं जाती, बल्कि वह अपने प्रोडक्ट का दाम बढ़ाकर बेचती है लेकिन लोगों की आमदनी उतनी ही होती है, ऐसे में हमारी सरकार को समझना चाहिए कि बजट में मध्यम वर्ग गरीबों के बारे में सोचा जाए, इससे देश में सही मायने में सबका साथ सबका विकास होगा। हमारा भारत रक्षा बजट में जितने पैसे खर्च करता है, उसका 20% भी मध्यमवर्ग गरीबों के लिए आम बजट में खर्च करें तो देश की तरक्की में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा, क्योंकि मध्यमवर्गीय गरीब यह देश के मुख्य आधार स्तंभ है, क्योंकि यह वही लोग हैं, जो किसी उद्योग में अपनी मेहनत देकर उस उद्योग को आगे बढ़ाते हैं, नहीं तो ऐसे उद्योगों का कोई मतलब नहीं जहाँ काम करने वाले व्यक्ति ना हो देश की उन्नति में जितना योगदान उद्योगपतियों का होता है। उतना ही काम करने वाले व्यक्तियों का जो नियमित रूप से दफ्तर से घर, घर से दफ्तर बस यही उम्मीद से जाता है कि आने वाला भविष्य उसके और उसके परिवार के लिए खुशहाल हो, किंतु महँगाई भरे दौर में जहाँ पेट्रोल से लेकर घर के किराए सब्जी से लेकर बिजली के बिल, इन्हीं चीजों में अपनी आधी से ज्यादा तनख्वाह खत्म कर देने वाले, उन व्यक्तियों को यह समझ में नहीं आता की बचत किया जाए या अतिरिक्त खर्चे जैसे बच्चों का भविष्य या खुद का घर, यह तो बात रही, इनकी किंतु सरकार को इन जैसों के बारे में कुछ

सोचना होगा, इन के हित में भी बजट पास हो यह उम्मीद पूरा देश करता है और उम्मीद केवल सरकार पूरा कर सकती है और यह करना अत्यंत आवश्यक है।

देश की राजनीति कहीं ना कहीं, हर व्यक्ति के जीवन पर असर डालती है, इसके कई प्रकार है, जैसे किसी राज्य में किसी अन्य पार्टी की सरकार उनकी अलग विचारधारा कई मायनों में आम इंसान के जीवन पर अपना असर दिखाती है, अब वह असर अच्छा होता है या बुरा यह सरकार के कामकाज के तरीकों पर निर्भर करता है, हर क्षेत्र गॉव शहर के अनेकों ग्राम पंचायत, तहसील, जिला परिषद इन सभी कार्यालयों में आज भी लोग अपना काम करवाने किसी तरह की मदद यह कोई शिकायत लेकर पहुँचते हैं और आज भी कई राज्यों में लोगों से सुनने मिलता है कि हमारे यहाँ हर तकलीफों को सुना जाता है, उस पर हल निकाला जाता है, वहीं दूसरी ओर आज भी लोगों की शिकायत होती है कि उनकी बातों को सुना नहीं जाता, उनके साथ व्यवहार ठीक से नहीं हो पाता, कोई एक तकलीफ का हल निकलने में वर्षों लग जाते हैं,

और इसका मुख्य कारण है केंद्र और राज्य की अलग-अलग सरकारें, आज भी देश में कई लोग ऐसे हैं, जिन्हें केंद्र से मिले लाभ को नहीं उठा पाते, क्योंकि उनके राज्य में विपक्षी सरकार है, ऐसा क्यों करते हैं, इसका सीधा मतलब है कि कोई विपक्षी सरकार यह नहीं चाहती कि हमारे हाथों केंद्र की मदद, हम लोगों को दें, जिससे हमारी सरकार की छवि

खराब हो, लोग यह ना कहे कि आप की सरकार में यह सब कहाँ था, यह चाहते हैं कि लोगों को सरकार के विरोध में खड़ा कर सकें यह कहकर कि आप लोगों तक केंद्र किसी तरह की मदद कोई लाभ नहीं मुहैया करवा रहे, क्योंकि यहाँ हमारी सरकार है।

ऐसे में लोगों को इस राजनीति में जबरन घसीटा जाता है, जबकि उन्हें इन सभी चीजों से कोई लेना-देना नहीं होता, आज के इस बढ़ते भारत में लोगों की यह सोच होती है कि बढ़े तो सब के साथ या सब के बिना हमे बढ़ना तो होगा ही, किंतु राजनीति के जहरीले विचार इस कदर इनके मन में डाला जाता है कि कुछ लोग सरकार के विरोध में खड़े हो जाते हैं, जिससे देश का माहौल खराब होता है, भारत देश में आज भी यह समस्या है कि यहाँ लोग जात के नाम पर लोगों का ब्रेन वाश करते हैं, उन्हें अपनों के बारे में ही गलत अफवाह सुनने मिलती है, जैसे सरकार केवल ठाकुर और ब्राह्मणों के बारे में सोचती है या दलित, यादवों के बारे में सोचते हैं, ऐसी अफवाहों से देश की एकता संकट में आ सकती हैं, जहाँ हम देखते हैं कि हिंदू-मुस्लिम एक साथ हंसी-खुशी रहते हैं, लेकिन कुछ गलत खबरों के प्रचार द्वारा उन दो धर्मों में यह फैलाया जाता है कि हिंदू ने मुस्लिमों को मारा या मुस्लिमों ने मंदिरों पर हमला किया, इन सभी चीजों से नुकसान केवल देश का होता है वही फायदा केवल राजनीतिक दलों को होता है, वह भी कुछ समय के लिए किंतु जब देश की जनता सब समझती और जानती है तो हालात बदलने में जरा वक्त नहीं लगता और आज के समय में वह हो भी रहा है, लोग

समझने लगे हैं कि मौजूदा सरकार में ऐसी कोई भी घटनाएं नहीं होती जो पिछले साल की राजनीति में देखने मिली।

पहले के समय हम सुना या देखा करते थे कि राजनीति जो आज होती है, वह पहले नहीं होती थी, आज की तरह उस वक्त लोकतंत्र नहीं हुआ करता था, वह दौर था प्रजातंत्र का, जहाँ एक शासक के रूप में हर क्षेत्र में एक राजा अपने शासन से पूरे राज्य को चलाता था, उस समय में राजा एक तरफ से पूरे राज्य पर अपना मालिकाना हक जताता था, अपने मन के अनुसार किसी चीज पर कर (लगान) लगाना, कर (लगान) को हटाना जैसे नियम खुद बनाता था, जो इतिहास के पन्नों में हमारे बीच मौजूद है और आज का वक्त देखा जाए तो जहाँ बोलने को तो लोग भले कहते हो, हमारा देश लोकतांत्रिक है किंतु कहीं ना कहीं वही राजतंत्र की झलक आज लोग महसूस करते हैं।

और आज एक बड़ा वर्ग, ये सोचने पर मजबूर है की यहाँ आज सरकार एक राजा के तौर पर खुद को समझती हैं और कहीं ना कहीं लोकतंत्र का गला घोंटा जाता है, लोगों की आवाज दबाने की कोशिश होती है, यह सब भूतकाल और आज के समय में ज्यादा अंतर नहीं दर्शाता, कहीं ना कहीं उनके इस राजनीति करने के तरीकों से देश के लोकतंत्र पर बड़ा खतरा बन सकता है, सत्ता जिसकी उसी की लाठी और आम जनता उनकी गुलाम यह आभास, हमें पिछले कई वर्षों से देखने मिल रहा है, अपने फायदे के लिए देश के बारे में कुछ अच्छा न

सोचना इनके फितरत में ही था, जिससे देश कई मायनों में उस गति से आगे नहीं बढ़ सका जिस गति से भारत को आगे बढ़ना था।

मुख्य कारण यह है कि पारिवारिक राजवंश जो राजनीति में बस अपने लोगों को आगे करती है, परिवार के कुछ लोग मिलकर आगे आने वाले समय में उनके वंशज को देश की भविष्य की बागडोर का दावेदार समझते है, ऐसे में देश की प्रगति को कहीं ना कहीं तो ठेस पहुँचेगा ही और यह लोगों ने देखा भी है और यह वंशवाद केवल सत्ता के लालच में होते हैं, न केवल एक राज्य मे बल्कि अनेकों राज्य में आपको एक पूरे परिवार की वंशवादी राजनीति जिसने मिलेगी, यहाँ अपने बेटे भतीजे भाई को मंत्री विधायक बनाने की होड़ में, इस कदर अंधे हो जाते हैं कि वर्षों की गठबंधन को भी कुछ दिनों में तोड़ देते हैं और यह ऐसे खुलेआम होता है, जिसे जनता बखूबी जानती है, फिर भी यह लोग नहीं समझते कि मेरे पार्टी मेरे लोगों की छवि खराब हो रही है।

उन्हें बस सत्ता पाने की भूख होती है, और यह धर्म की राजनीति में काफी माहिर होते हैं, यह आपको तभी समझ आ जाएगा। जब चुनाव नजदीक हो, किसी एक कम्युनिटी का सहारा बनकर, बस लोगों की आँख में धूल झोकते हैं कि इन समुदायों और धर्मों के साथ नाइंसाफी या अन्याय हो रहा है, बल्कि हकीकत कुछ और ही होती है, इन्हें बस धर्म को हथियार बनाना आता है, जो समय आने पर चलाया जा सके और काफी हद तक इसमें लोग सफल होते हैं।

बीते सालों से इनके राज में देश इस कदर पीछे गया है कि इसे पूरी तरह उबरने में भी वक्त लग सकता है और यह मुमकिन है तो, सिर्फ और सिर्फ अच्छी राजनीति से ऐसे वंशवाद और अपनों की राजनीति को जड़ से खत्म करना होगा, जिससे कि देश आगे बढ़ सके और ऐसी वंश वादी राजनीति फिर कभी आगे ना हो।

हमारा देश लोकतांत्रिक देश के रूप में विश्व का सबसे बड़ा देश है और यहाँ सभी को एक समान समझा जाता है, बात करें राजनीतिक दल की तो उन्हें भी एक समान समझा जाता है, जो लोकतांत्रिक धरोहर को समर्पित होती है, किंतु कहीं ना कहीं इस लोकतंत्र के लिए खतरा बन रहे हैं, कुछ राजनीतिक दल अपने और अपने दल के फायदे के लिए देश के संविधान देश की लोकतांत्रिक शक्ति से भी समझौता कर लेते हैं और ऐसे लोग जो खुद के चरित्र को खो चुके हैं, वह देश के बारे में देश के लोगों के बारे में भला कैसे सोच सकते हैं ,कहीं ना कहीं हम भी इसके जिम्मेदार हैं, हमारी गलत सोच और गलत फैसलों से ही हम इन्हें कुर्सी तक पहुंचाते हैं और यही वंशवाद वाली राजनीति, हमें देखने मिलती है, जो दादा पोते भाई भतीजा वाली होती है।

यही लोग होते हैं, जो हमारे द्वारा चुनकर आते हैं और हम ही लोगों में धर्म के नाम पर जात के नाम पर आपसी रंजिश बढ़ाते हैं, यह सदी दर सदी चलता रहेगा, जब तक हम ऐसे वंशवाद वाली राजनीति को बढ़ावा देते रहेंगे, देश की जरूरत केवल और केवल एक साफ-सुथरी

राजनीति है, जिसे ना की आप जैसे लोग बल्कि पूरा देश एक साथ आगे बढ़ेगा, जात-पात, धर्म के नाम पर लड़वा रहे है, हमने बीते सालों में देखा भी है, बात की जाए, मौजूदा मोदी सरकार की तो ऐसी राजनीति अगर पहले से होती तो देश आज उस मुकाम पर होता, जिसकी बस कल्पना ही कर सकते है।

हमारे देश को चलाने वाली सरकार और विपक्ष के अन्य दलों को आप देखोगे तो यह जरूर अनुभव करेंगे कि यह लोगों की सोच धारणा सिर्फ यह होती है कि देश हमारा आगे कैसे बढ़े और विपक्ष ही नहीं बल्कि कई राजनीतिक दल है, जिनकी विचारधारा लोगों का विकास ही होती है और राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली समझे तो एक दूसरे से भिन्न होती है, लेकिन देश की प्रगति अपनों का विकास इनका लक्ष्य होता है तो ऐसे में यह लोग आपस में ही मिलकर कोई एक पार्टी का गठन कर सरकार क्यों नहीं बनाते?

जब सभी एक समान सोचते हैं, सभी लोग साथ मिलकर अपनी-अपनी योग्यता और अनुभव के अनुसार देश को क्यों नहीं प्रगति की ओर ले जाते हैं?

क्यों आज ये अपने अलग-अलग पार्टी की सरकार बनाने के लिए उतावले रहते हैं, यही लोग केवल एक दूसरे के कामकाज और कमी दिखाने का प्रयास करते हैं, ऐसा क्या है कि सरकार बनने से इन्हें स्वयं फायदा पहुँचेगा? यह सभी जानते हैं कि देश प्रेम का दिखावा करने

वाली राजनीतिक पार्टिया केवल अपनी सरकार बनने का सपना देखते हैं और ऐसा जिस दिन होगा तो उस दिन इनकी निस्वार्थ भावना स्वार्थ में बदल जाएगी और सभी देखते रह जाएँगे। अगर सभी दल एक साथ आकर देश चलाएं तो क्या इससे कभी समाज में कुछ नया बदलाव हो सकता है, क्या यह कभी साथ आएंगे तो, इसका जवाब है नहीं! हमारे देश में राजनीति का अर्थ है, एक ऐसी सत्ता जो गलत हाथों में आई तो देश 50 साल और पीछे चला जाएगा।

आज दुनिया के साथ-साथ भारत भी कदम से कदम मिलाकर चल रहा है, हमारा देश अंतरिक्ष, कृषि, आईटी और इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में खुद को योग्य साबित कर चुका है, यह समय की माँग थी, यह पीढ़ी की आवाज से युवाओं की जरूरत थी, जिससे उन्हें भी अपनी काबिलियत सिद्ध करने का मौका मिले, यह संभव केवल एक अच्छी राजनीति से होता है, अगर यह पहले से होता तो जरूर भारत विश्व शक्ति के रूप में सबके सामने होता और इसमें कोई शक करने जैसी बात नहीं है, क्योंकि भारत देश आज नहीं प्राचीन समय से ही विकसित देश था, समय-समय पर अंग्रेज मुगलों के शासन से हमारे देश को आधा खोखला कर दिया, जब देश आजाद हुआ तो समय के साथ-साथ भारत विकास की दिशा में आगे तो बढ़ा किंतु इसके साथ-साथ कई इतिहास को मिटाने का प्रयास हुआ और कई इतिहास मिटाएं भी गए, हम देखे तो भारत के नक्शे से कई इतिहास को मिटाया गया, लोग देश की

आजादी के बदले इतनी बड़ी कीमत चुका रहे थे, यह कभी किसी ने सोचा नहीं था।

लोग आज भी सवाल उठाते हैं कि क्यों उस वक्त की सरकार सख्त कदम उठाने में असफल रही, हमारे ही जमीन से अलग हुए हमारे लोग आज हमें आँख दिखाते हैं, जिससे आज के वक्त ऐसा अनुभव होता है कि भरे हुए घाव को कोई कुरेद रहा हो, लोगों को इसके प्रति आज भी क्रोध की भावना है, क्या ऐसी राजनीति आज के वक्त होती तो यह सब होता? अगर ऐसा होता तो यह बिल्कुल होना गलत था, क्योंकि ऐसी राजनीति से डर होता है कि फिर से हमे कही किसी चीज के बदले भारी कीमत चुकानी पड़े।

राजनीति है, जिसमें हमें भ्रष्टाचार दिखता है, आज भ्रष्टाचार पर कोई आवाज नहीं उठा रहा, लोगों को दिखता सब है, लेकिन एक-दो आंदोलन के बाद कुछ लोग शांत हो जाते हैं, भ्रष्टाचार वह कीड़ा है, जिससे किसी भी देश को खोखला किया जा सकता है।

सरकार द्वारा दिए ₹100, जनता तक पहुँचते-पहुँचते ₹1 हो जाता है, यहाँ के व्यापार हो या अंतरराष्ट्रीय व्यापार हर जगह भ्रष्टाचार होता है और कोई आवाज उठाया तो उसको भी दबाया जाता है, लोगों को इस के विरुद्ध खुलकर अपनी आवाज रखनी होगी, भ्रष्टाचार होता क्यों है, इसके पीछे की वजह हम हैं, हम ही हैं, जो इसका विरोध नहीं करते हैं, और जो भी कुछ राजनीति में होता है, वह सही ढंग से हमें

दिखाया भी नहीं जाता, जो उम्मीद हमें मीडिया से होती है, मीडिया उसमें आजकल विफल दिख रही है।

# अध्याय - 5

# राजनीतिक और साहित्य

राजनीति और साहित्य दोनों के रास्ते अलग है, किंतु राजनीति का साहित्य में हस्तक्षेप काफी चिंताजनक है, राजनीति हमेशा से साहित्य के क्षेत्र में अपने पैर पसारे रखा हैं। साहित्य से जुड़े कई क्षेत्रों के कलाकार कई राजनेताओं के इशारे पर समाज को गलत दिशा में ले जा रहे हैं। वे कलाकार जिन्हें लोग अपना रोल मॉडल मानते हैं, उन्हें अपने जीवन में एक आदर्श के रूप में देखते हैं, लेकिन कुछ कलाकार राजनेताओं के इशारे पर कुछ पैसे या पब्लिसिटी स्टंट के लिए अलग-अलग तरह के विज्ञापन करते हैं, उनके अनुसार भाषण और राजनीतिक दलों का पक्ष लेते हैं। जो किसी भी कलाकार को ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि साहित्य और राजनीति का मिश्रण एक तरह से समाज को आगे बढ़ाने के लिए होना चाहिए, न की समाज को गुमराह कर लोगो में गलत संदेश देने का कार्य किया जाए।

केवल यह लोग ही नहीं बल्कि अलग-अलग राज्य में बैठे धर्म के ठेकेदार भी ऐसी चीजों को बढ़ावा देते हैं, केवल एक क्षेत्र के नहीं विभिन्न क्षेत्रों के कलाकार धर्म के नाम पर आपसी बहस करते हैं, आपस में विद्रोह करते हैं, जिससे देश का माहौल खराब होता है, देश के लोग इन्हीं लोगों के इस रविये से असमंजस में रहते हैं, और उनमें से कुछ इनकी तरफ हो जाते हैं, उनके इस रवैये को अपनाकर उनकी ही तरह देश विरोधी बातें और लोगों में नफरत पैदा करते हैं, ऐसे लोग देश के भविष्य के लिए खतरा है, आज के कलाकारों को समझना होगा कि राजनीतिक सहयोग केवल उनके जीवन में तब तक है, जब तक उनके सहयोग करने वालों की सत्ता है, जिस दिन उनके सिर से हाथ हटेगा उस दिन ऐसे लोगों को आसमान से जमीन पर आने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा और तब उन्हें देश धुत कारेगा।

आज देश की राजनीति का यह हाल है कि कोई भी नेता इसलिए नेता नहीं बनता कि वह देश की सेवा कर सके, देश को प्रगति की ओर ले जा सके, बल्कि पारिवारिक सोच और उनके सिखाए राजनीतिकरण से उन लोगों के मन में बस यह इच्छा रहती है कि कैसे भी नेता बन जाऊँ और कम समय में ज्यादा से ज्यादा पैसे कमा सकूं, यही वजह है कि देश के विभिन्न जगहों पर आप गौर करेंगे तो देखेंगे कि विधायकों की बड़ी-बड़ी गाड़ियां होती है, बड़े बंगले होते हैं, ऐश आराम वाली जिंदगी होती है और उनके विरोध में कोई कुछ बोले तो उनके किराए के गुंडे उन्हें रोकने के लिए भी होते है, आखिर कहाँ से

आता है पैसा? इतनी संपत्ति का हिसाब इनसे कोई लेता भी है या नहीं? यह सवाल हमेशा से लोगों के मन में रहता है, बड़े-बड़े नेताओं विधायकों के पास शोहरतें इतनी होती है की वे अपने क्षेत्र का अपने इलाके का विकास कर सकें, किंतु अगर उन्हें विकास करना ही होता तो इतनी संपत्ति उनके पास नहीं होती, यह सारे जनता के ही पैसे हैं, जो विकास कामों में ना लगा कर खुद के लिए ऐश आराम की जिंदगी स्थापित करना यही उनका मकसद होता है।

साहित्य देश की संस्कृति है, जो हमारे देश के गौरव को बढ़ाती है और इस साहित्यिक क्षेत्र में किसी भी प्रकार का राजनीतिक हस्तक्षेप साहित्य को गंदा कर देता है। साहित्य क्षेत्र में लेखन, फिल्मी दुनिया, हस्तकला, नृत्य और कई तरह के कला से लोग देश विदेश में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा चुके है, बात की जाए लेखन क्षेत्र की तो एक लेखक कई प्रकार के होते हैं, कोई कहानियां लिखता है, कोई प्रेरणात्मक विचार लिखता है या फिर कोई उपन्यास लिखता है, इन सभी चीजों में एक चीज सामान्य है कि वे अपने लेखन से लोगों का मन मोह लेते हैं, कुछ अपनी लेखनी से मनोरंजन करते हैं, कुछ अपनी लेखनी से लोगों को प्रेरित करते हैं।

किसी जमाने में लेखक को एक मसीहा के तौर पर देखा जाता था और लेखक अपने आप में एक शख्सियत होती थी, लेकिन आज के वक्त लेखकों की गिनती केवल और केवल मनोरंजन के लिए देखी जाती

है, क्योंकि आज के लेखक समाज को बदलने के लिए नहीं बल्कि समाज को मनोरंजन दे सकें, इस उद्देश्य से लिखते हैं, वे ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि यह आज की पीढ़ी उसी चीज को पसंद करते हैं और कुछ लेखक तो किसी एक तरफ के गुणगान गाते हैं, राजनीतिक सहयोग से अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं। उसी प्रकार फिल्मी दुनिया में भी राजनीतिक और फिल्मी मिलाव देखा जाता है, लोग अभिनय छोड़कर राजनीति का रुख कर रहे हैं, किसी एक राजनीतिक दल के साथ मिलकर वह चुनाव लड़ते हैं और कुछ राजनेता कलाकारों से मिलकर, उन्हें चुनाव लड़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, आज कलाकार इस कदर अपने राह से भटक चुके हैं कि उन्हें भारत में रहना खतरे जैसा लग रहा है, असहिष्णुता न जाने कितने कलाकारों ने अब तक अपने बातों से जताया है, यह खुद कहते हैं, या लोगों द्वारा इनसे कहलाया जाता है, ये उन्हीं को पता, लेकिन इनका इस्तेमाल कर कुछ राजनीतिक दलों को इसका फायदा जरूर पहुँचता है।

# अध्याय - 6

# बदलाव

कोई भी नेता भले यह बोले कि मैं अपने शुरुआती जीवन में बहुत गरीब था, मैं यहाँ तक अपने मेहनत के बलबूते पहुंचा हूँ और लोगों के विकास के लिए यहाँ खड़ा हूँ,लेकिन वही गरीब नेता कुछ आने वाले सालों में कैसे तीन चार गाड़ियों का मालिक, एक बड़ा घर और अलग-अलग जगह प्रॉपर्टी का मालिक बन जाता है, यह किसे मालूम...? इन सभी का ज्ञात हमे तब मालूम पड़ता है, जब समय के साथ आने वाली सरकार या विपक्षी दल ईडी इनकम टैक्स के छापे पड़वाकर लोगों का सत्य उजागर करती है, यह समझना बहुत ही मुश्किल है कि कैसे इन नेताओं के बातों का हम विश्वास करें, कैसे हम इन लोगों के कहने पर हम अपने जीवन में बदलाव लाएं, कुछ समय के लिए यह लोग हमें आशा तो देते हैं, किंतु यही लोग सही समय आने पर उन आशाओं का गला घोट देते हैं। राजनीति का पूरा अर्थ बदल कर रख देते हैं, देश मैं आज भी कितने गरीब मध्यम वर्गीय या कुशल बिजनेसमैन अपनी मेहनत और लगन से

पैसे कमाता है और एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते टैक्स भरता है, यह सोच कर कि हमारे टैक्स से देश के विकास में काफी सहयोग होगा किंतु हमारे ही टैक्स से इन नेताओं की जेब भरी होती है, बड़े-बड़े सपने दिखाकर यह हमारे पीठ पर छुरा घोपतें हैं।

देश कहने को तो लोकतंत्र है, लेकिन ऐसे राजनीतिक विचार के कारण राजतंत्र जैसे माहौल में हम हैं, ऐसी भावना आज के समय आने लगी है, अगर यह बदला नहीं तो आने वाले समय में देश की जनता जागरूक होकर ऐसे नेताओं को विधायकों को नकार देगी, जिन्हें वोट देकर चुना गया है। सही समझ आ जाने पर उन्हें ही वापस उनकी जगह लौटा दिया जाएगा। हमारे देश का सिस्टम मजबूत होना बहुत ही आवश्यक है, हर विभाग के लोगों को अपना-अपना काम पूरी ईमानदारी के साथ करना होगा, किसी के दबाव में आकर नहीं। जिस दिन ऐसा होता है, उस दिन सही मायनों में देश तरक्की करेगा, क्योंकि इतिहास गवाह है, जिस देश में भ्रष्टाचार नहीं है, वह देश तरक्की की राहों में हमेशा बढ़ा है और वहाँ की जनता का जीवन खुशहाल है। देश में ऐसे ही खुशहाली के लिए एक परिपूर्ण सरकार की जरूरत है, एक इमानदार सरकार की जरूरत है, जिससे लोगों को यह उम्मीद मिले की उनका टैक्स सही कामों में लगाया जा रहा है। हर नेता बड़ी जिम्मेदारी से अपना काम निभा रहा है, लोगों को रोजगार मिल रहा है इस तरह के विकास की भारत को सख्त जरूरत है।

राजनीति का यह अर्थ नहीं कि धर्म के आधार पर लोगों का बंटवारा किया जाए। राजनीति का अर्थ है कि सभी को साथ लेकर आगे बढ़ा जाए, क्योंकि हम सभी देश के नागरिक हैं और एक समान है। धार्मिक पहनावा और धार्मिक परंपरा यह देश के विकास में बाधित ना हो, यह राजनीतिक दलों को समझना होगा। देश में अलग-अलग धर्मों के आधार पर लोग अपने पहनावे अपनी संस्कृति को प्राथमिकता देते हैं, ये उन तक सही है किंतु धर्म इंसानियत पर हावी होना नहीं चाहिए। धर्म से भी ऊपर इंसान होता है, इंसान ने ही धर्म बनाया है, धर्म तो केवल अपनी अपनी संस्कृति है, जो हमें एक दूसरे हमे जोड़ कर रखती हैं, ना कि लोगों को अलग, यह धर्म हमें कभी नहीं सिखाता कि लोगों में भेदभाव किया जाए, तो क्यों हम लोग किसी राजनेता के बहकावे में आकर आपस में ही लड़ने लग जाते हैं, यह देश की सबसे बड़ी समस्या है और अगर देश जात धर्म से ऊपर नहीं बढ़ा तो, यही राजनीतिक लोग धर्म का सहारा लेकर लोगों में दूरियां लाएंगे।

देश में हर 5 वर्ष बाद चुनाव आता है, जनता के पास सरकार के 5 वर्षों के कार्यकाल का पूरा लेखा-जोखा ज़हन में होता है, अगर जनता को लगता है कि यह सरकार हमारे लिए सोचती है, हमारे देश के बारे में सोचती है तो, आगे भी वोट के जरिए उनके सरकार बनाने में जनता पूरी तरह सहयोग करती है और यह देखा भी गया है। सरकार के देश के प्रति कामकाज को जनता ने सराहा है और उन्हें फिर से मौका भी दिया है और मौका उन्हि को मिलता है, जो देश और जनता की नजरों में

खरे उतरते हैं और उन्होंने अपने कामकाज के जरिए जनता को भरोसा दिलाया है कि आने वाले समय में वह पूरी तरह प्रतिबद्ध है। देश के विकास के लिए जब जनता इतना किसी पर विश्वास करती है तो, ऐसे में सरकारों का भी कर्तव्य बनता है कि 5 सालों में वह पूरी तरह देश के लोगों और देश के बारे में पूरी ईमानदारी के साथ विकास कार्यों पर ध्यान दें। जरूरी नहीं कि केंद्र सरकार की सत्ता हर राज्य में फैली हो कुछ राज्यों में अन्य दलों की भी सरकार होती है, जहाँ केंद्र की मदद पहुँचती भी है, किंतु कुछ राज्यों में ऐसा देखने मिलता है कि केंद्र द्वारा लागू योजना विफल होती है, वहाँ तक उस योजना का लाभ हर कोई नहीं उठा पाता और वहाँ की जनता केंद्र सरकार के प्रति अपनी नाराजगी जाहिर करती हैं। ऐसी स्थिति में जनता का जागरूक होना आवश्यक है, उन्हें समझना होगा कि किसी कारणवश ऐसा होता है कि उन तक सरकार द्वारा लाभ नहीं पहुँचता, अगर आप जागरुक रहेंगे तो, सरकार को मजबूरन किसी भी हाल में सुनना होगा, क्योंकि हम सभी के कारण उनका वजूद है।

आम जनता केवल विकास से मतलब रखती है, वे चाहते हैं कि उनके क्षेत्र में अच्छी शिक्षा, अच्छी स्वास्थ्य और और रोजगार जैसे परिपूर्ण व्यवस्था हो, जिससे उनका जीवन खुशहाल रहे, सही मायने में यही विकास है और सरकार को पहले इन सभी चीजों में ध्यान देने की आवश्यकता है, सड़क रक्षा अंतरिक्ष जैसे विकास कार्यों को बाद में भी देखा जा सकता है, लेकिन पहले 2 वर्ष शिक्षा स्वास्थ्य और रोजगार

जैसे विकास को प्राथमिकता देना जरूरी है, क्योंकि यह आम जनता के जीवन से जुड़ी हुई अहम कड़ी है और सही वक्त पर सही जगह हर चीज मौजूद होने से, उन्हें अपने क्षेत्र को छोड़कर कहीं और जाना नहीं पड़ेगा।

कुछ नेता इन्हीं लोगों को निशाना बनाते हुए, केवल चुनाव प्रचार करते हैं, अपने राज्य में किसी और का आना गलत है। यहाँ जबदस्ती लोगो को शहर में भरा जाता है, ऐसे नेता देश के संविधान तक को नहीं सोचते, जहाँ बताया गया है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी राज्य में जाकर बस सकता है, फिर भी कुछ लोग केवल पब्लिसिटी के लिए ऐसे लोगों को अपमानित कर राज्य छोड़ने पर मजबूर करते हैं, जबकि कोई भी व्यक्ति किसी भी देश में जाकर अपना गुजारा कर सकता है। क्योंकि यह देश एक है, यह देश किसी के बाप की जागीर नहीं, जहाँ लोग अपनी मनमानी करें और अपना हक जताने के लिए जबरन अपने राज्य से भगाते हैं, जो की पूरी तरह गलत है। कोई भी व्यक्ति अपने राज्यों को छोड़ दूसरे राज्य में शौक से नहीं जाता, अपनी मजबूरी के कारण जाता है, अपने और अपनों के परिवार को पालने और उनके भविष्य के लिए जाता है और ऐसा नहीं है कि वह दूसरे राज्य में बैठा रहता है, वहाँ वह अपने परिश्रम की बदौलत खाता है, अपने श्रम से अपने परिवार का पेट भरता है, अपने बच्चे के पढ़ाई लिखाई के लिए मेहनत करता है।

किसी के यहाँ नौकरी करने से सिर्फ उसका ही नहीं, बल्कि उन कंपनियों को भी फायदा होता है, उन कंपनियों का फायदा होना, उस राज्य के फायदा होने जैसा है। ऐसे में इन मजबूर लोगों का क्या कसूर? जो लोग इन्हें अपने फायदे के लिए, इन गरीबों को निशाना बनाकर अपनी राजनीतिक रोटियां सेकते हैं। इन्हें लगता है कि इनकी राजनीति किसी के समझ नहीं आती, लोगों को भड़का कर दो राज्यों के बीच झगड़ा लगाना, किसी को समझ नहीं आता, लेकिन यह पूरी तरह गलत सोचते हैं।

सभी समझते हैं और इसका परिणाम भी उन्हें समझ में आता है, जिस तरह से उनका व्यवहार रहा है, उसे वहाँ के लोगों ने ना पसंद किया है और स्थिति यह है कि वह अपने मकसद में पूरी तरह से नाकामयाब हुए। आज सत्ता के लालच में लोग क्या नहीं करने पर मजबूर हो जाते हैं, अपनों को ही लड़वा कर सत्ता हासिल करना, इनके जहन में इस कदर बस चुका है कि उन्हें यह ख्याल नहीं होता है कि उनकी ही पार्टी के लोग उन्हीं के राज्यों में हमेशा से हिंदुत्व और एकता की बात करते है और देश की एकता और अखंडता पर कुछ नेता खतरा बनकर उभरते हैं। ऐसे नेताओं को कभी हमारे बीच नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें चुनाव तक लड़ने का मौका नहीं मिलना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो, ऐसी सत्ता का निर्माण होगा जो कि आने वाले समय में देश के विभाजन का कारण बनता है।

लोगों को तो पहली बात यह समझ नहीं आता कि कौन सही है, और कौन गलत, दो दर्जन से ज्यादा राजनीतिक दल है, हमारे देश में जो कि अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग राज्य में अपने विचार और अपने कार्य प्रणाली अनुसार जनता के जहन में है, जिससे हर क्षेत्र के हिसाब से लोगों की सोच अलग हो जाती है, देश के माहौल देश की परेशानी लोग कई नजरिए से देखते हैं, इसका कारण यही है कि लोगों के विचार पूरी तरह भिन्न है, देश की समस्याओं पर लोग अपने अलग-अलग विचार रखते हैं, कोई सही कहता है, कोई गलत कहता है या कोई कुछ नहीं कहता, ऐसे में देश का बहुत बड़ा हिस्सा, केवल अपने विचारों की वजह से अलग और पिछड़ा हुआ रह जाता है, इस सभी समस्याओं का जड़, वहाँ के राजनीतिक दल होते हैं, जो कि समान विचार कभी नहीं रखते और उन्हीं लोगों के बोलने और कहने से जनता अपना मत बदलती है, क्या ऐसे में देश कभी यह सोचेगा कि सबका साथ सबका विकास से देश आगे बढ़ेगा।

किसी भी देश का विकास तभी संभव है, जब लोगों के विचार एक समान हो देश की उन्नति में उनके विचार काफी मायने रखते हैं, क्योंकि किसी भी कार्य को करने के लिए सबका साथ होना जरूरी है, देश में ऐसी स्थिति होनी चाहिए कि जो केंद्र में है उस सरकार की सत्ता सभी राज्य में होनी चाहिए, क्योंकि केंद्र में वही सरकार होती है, जो देश में अधिकतर लोगों कि पसंद होती है और अधिकतर लोगों की पसंद अगर सभी राज्यों में हो तो पूरे देश की प्रगति साथ में संभव है, लोगों के

समान विचार संभव है, सही मायने में लोकतंत्र उभरेगा हर फायदा हर लोगों तक पहुँचेगा, सभी की आवाज एक होगी क्योंकि विचार समान होंगे।

बदलाव से हर चीज संभव है, हमारे देश के इतिहास में बहुत कुछ बदला है, समय आने पर लोग बदलते ही हैं, राजनीतिकरण में कुछ ऐसे बदलाव की जरूरत है, जो देश की भलाई के लिए जरूरी है, हम सभी को राजनीतिक बदलाव की उम्मीद है, कोई भी नेता कोई भी राजनीतिक दल अपने शक्ति से नहीं, बल्कि लोगों के पसंद से सत्ता में हो, कोई भी विधायकों की कीमत ना हो, जिससे राजनीति फेरबदल की गुंजाइश रहे, एक देश एक सरकार अगर की जाए तो यह मुमकिन है कि देश की प्रगति 4 गुना अधिक होगी देश की अधिक जनसंख्या अगर किसी सरकार को चुनती है तो वह समय भी दूर नहीं कि बाकी लोगों की भी वह पसंद हो जाए। ऐसे में हमें विपक्ष की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, बल्कि उन विपक्ष दलो को सही समय का इंतजार करना होगा और समाज के प्रति अपने कार्य को दिखाना होगा, जिससे कि आने वाले समय में उन्हें भी मौका मिले।

या तो सभी राजनीतिक दल इस बात को समझे की शिक्षा रोजगार और स्वास्थ्य, इन सभी विकास कार्यों में हम सभी की भागीदारी होनी चाहिए, ताकि विकास और तेज गति से होगी, तब इस देश की राजनीति में बदलाव की जरूरत नहीं पड़ेगी। सभी लोग अपने क्षेत्र के अनुसार अपने दलों के साथ पूरी ईमानदारी से अपना काम करें ताकि हर

जनता तक उसका लाभ पहुँच सके और यही जनता चाहती भी है। सत्ता का लालच उन्हें होता है, जिन्हें लोगों के विकास से ज्यादा अपने विकास से मतलब होता है, केवल और केवल सत्ता के नशे में चूर रहते हैं, ऐसे राजनीतिक दलों को कभी स्वीकारा नहीं जा सकता, सत्ता केवल विकास के लिए होनी चाहिए, जिन्हें देश के प्रति कुछ करने की चाह हो और अपने मेहनत से देश की तकदीर बदल सके। इस घमंड में रहने वाले राजनीतिक दलों को सत्ता में आने के लिए हमेशा जनता द्वारा प्रोत्साहन मिलेगा, देश की प्रगति, देश का विकास, देश के लोग यह सभी राजनीतिक पार्टियों की जिम्मेदारी होती है और विकास से ही जनता खुश रहती है और यह काफी जरूरी बन चुका है कि देश में विकास और तेजी से हो, क्योंकि अन्य देशों के मुकाबले भारत काफी पीछे हैं। यहाँ राजनीति अच्छी भी है और भ्रष्ट भी जिससे देश के विकास को भारी मात्रा में नुकसान झेलना पड़ता है, यहाँ शिक्षा व्यवस्था ऐसी है कि गरीब बच्चे अपनी शिक्षा के लिए स्कूल और कॉलेज की फीस तो दूर जरूरी चीजें भी अपने लिए नहीं ले सकते, स्कूल की फीस इतनी होती है की पूरे परिवार में कोई एक कमाने वाला व्यक्ति अपने बच्चे की पढ़ाई के बारे में सोच भी नहीं सकता और बात की जाए सरकारी स्कूलों की तो वहाँ शिक्षा सही ढंग से नहीं ली जा सकती, क्योंकि कुछ लोग रिश्वत लेकर वहाँ ऐसे शिक्षकों की भर्ती करवाते हैं, जिन्हें केवल महीने की 1 तारीख याद होती है, जिस दिन तनखा का दिन होता है, बाकी दिन उन्हें बच्चों के भविष्य के बारे में चिंता नहीं रहती, बच्चों के लिए सही चीजें मुहैया

नहीं करवाई जाती, संगणक, खेलकूद और साहित्य जैसे शिक्षा से उन्हें वंचित रखा जाता है, जो आज के समय के अनुसार एक सरकारी स्कूल में पढ़ कर बच्चों का भविष्य उज्जवल नहीं हो सकता, ऐसे में सरकार या तो अच्छे स्कूलों की फीस कम कर दें या सरकारी स्कूलों की व्यवस्था ठीक कर दे, ताकि देश के बच्चों का भविष्य सुरक्षित रहे और शिक्षा का महत्व सभी लोगों तक पहुंचाना। यह सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए, क्योंकि शिक्षा के फायदे कई परिवार को आज भी नहीं पता, जो कि गॉव और अविकसित जगह पर रहते हैं। सरकार की जिम्मेदारी है कि उन तक शिक्षा का महत्व पहुंचाया जाए और हर बच्चो की शिक्षा के लिए स्कूल और कॉलेजों का निर्माण कराया जाए, जहाँ गरीब परिवार के बच्चों के भी शिक्षा मिल सके, यहाँ सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है की कैसे देश की साक्षरता दर को बढ़ाया जा सके, क्योंकि साक्षरता से ही देश का उज्जवल भविष्य है।

यही हाल अस्पतालों का भी है, जहाँ गरीब अपने स्वास्थ्य का उपचार नहीं करा सकता, क्योंकि प्राइवेट अस्पताल भारी फीस लेकर इलाज करते हैं, जहाँ एक गरीब नहीं करवा सकता। जिससे वह अपनी बीमारी से समझौता कर लेता है और अपना जीवन तकलीफ में बिताता है, अंत में ऐसा भी होता है कि कुछ लोग अपनी बीमारी के कारण अपनी जिंदगी से अलविदा कह देते हैं, ऐसे में सरकार को इसे गंभीरता से लेने की आवश्यकता है की देश के गरीबों तक स्वास्थ्य उपचार मुफ्त में मुहैया करवाई जाए। अस्पतालों का निर्माण करवाया जाए, जहाँ पर हर

गरीब बिना पैसे के इलाज करवा सकें, क्योंकि स्वस्थ जीवन बहुत जरूरी होता है। किसी भी व्यक्ति के लिए बच्चों के लिए बचपन से ही पढ़ाई के साथ-साथ खेल के क्षेत्र में भी रुचि बढ़ाने में सरकार को सहयोग करना चाहिए, जरूरी नहीं कोई सफल व्यक्ति पढ़ लिखकर ही सफल बनता है, अपने अनुभव और खास टैलेंट के बदौलत भी आगे बढ़ता है, शिक्षा के साथ-साथ खेल कूद और साहित्य जैसे चीजों पर सरकार ध्यान दें, तो हर छात्र चाहे गरीब हो या अमीर सभी उच्च शिक्षा को प्राप्त कर सकते हैं, जिससे आने वाले समय में वह अपनी रूचि के अनुसार अलग-अलग क्षेत्र में अपना भविष्य बना सके, और एक सफल व्यक्ति के रूप में देश के सामने उभर कर आ सके, हर माता-पिता को भी समझना होगा कि अपने बच्चों मैं किस तरह की रुचि है, उन्हें यह समझना चाहिए कि किस क्षेत्र में हमारा बच्चा जाना चाहता है, उसे उस क्षेत्र में आगे जाने के लिए प्रेरित करना होगा और सरकार की जिम्मेदारी बनती है की ऐसे होनहार विद्यार्थियों के लिए हर वो चीज़े मुहया कराया जाए, जिससे उन्हें आगे बढ़ने में आसानी हो।

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से जो भी देश स्वास्थ्य के क्षेत्र में बेहतर होता है, उस देश की प्रगति भी बेहतर होती है, क्योंकि स्वास्थ्य कारणों से कई लोग अपने जीवन से हार मान जाते हैं, स्वास्थ्य कारणों से कई लोग अपने कामकाज को छोड़ देते हैं, कई लोग स्वास्थ्य कारणों के कारण अपनों से दूर हो जाते हैं और कई बीमारियां तो ऐसी हो जाती है, जो कि फैलने की वजह से इस कदर नुकसान पहुंचाती है की जिससे देश

की अर्थव्यवस्था पर भी इसका असर दिखता है और ऐसे में सरकार को स्वास्थ्य के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध होना पड़ेगा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में विकास इस कदर बढ़ाना होगा कि हर देश का नागरिक गरीब अमीर अभी तक इसका लाभ पहुँचे।

देश में ऐसा भी होता है कि लोगों की योग्यता से पहले उनकी जात देखी जाती है, नौकरी जात के हिसाब से बाँटी जाती है, सरकारी नौकरी में पहले योग्यता नहीं, जात देखी जाती है, आरक्षण जैसी सोच को हमारे देश से खत्म करनी होगी। आरक्षण जैसे मुद्दे उठाने वाले लोग देश में पिछड़े हुए होते हैं, जो अपने पुराने सोच से और चल रहे हैं। समाज में पहले की तरह जातिवाद को बढ़ावा देते हैं, जिससे आज भी भारत में आरक्षण जैसी प्रथा चलती आ रही है, लोगों को यह समझ में आना चाहिए कि उन्हें आरक्षण कि नहीं अपनी योग्यता में सुधार लाने की आवश्यकता है। आप किसी के लिए योग्य है तो, वह आपको जरूर मिलेगा, उसके लिए आपको किसी भी आरक्षण के इंतजार में रहने की आवश्यकता नहीं, कुछ राजनीतिक दल इसी आरक्षण को बढ़ावा देने के लिए और अपने राजनीतिक फायदे के लिए लोगों को भड़का देते हैं और दंगे करवाते हैं, जिससे देश का माहौल खराब होता है और देश के युवा ज्यादातर आरक्षण पर निर्भर होने लग जाते हैं, आरक्षण युवाओं में गलत प्रभाव डालता है, उन्हें मेहनत और किसी चीज को सीखने की प्रति से ध्यान हटाया जाता है, क्योंकि वह निश्चिंत रहते हैं कि हमारे लिए आरक्षण तो है, भले हम उसके योग्य नहीं।

ऐसे सोच को खत्म करने की आवश्यकता है, युवाओं को उनकी योग्यता अनुसार नौकरी मिलनी चाहिए, चाहे वह किसी भी जात धर्म का हो, राजनीतिक दलों को धर्म से हटकर, सही राजनीति करने की जरूरत है, उन्हें समझना होगा कि ऐसे मुद्दों को निशाना बनाकर, बस अपने फायदे के लिए युवाओं को भटकाना, देश के लिए नुकसानदेह हो सकता है, क्योंकि स्थिति ऐसी हो गई है कि चाहे आप रेलवे की बात करें, फौजियों की बात करें या फिर अन्य गवर्नमेंट नौकरियों की वहाँ पर रिक्वायरमेंट आते ही ऐसा दर्शाया जाता है कि इतने प्रतिशत जाति के लोग नौकरियों के लिए अप्लाई कर सकते हैं, जो कि देखने में ही अजीब लगता है, वहाँ यह नहीं बताया जाता है कि यह सभी के लिए खुला है। यहाँ कोई भी अप्लाई कर सकता है और उन्हें उनकी योग्यता अनुसार नौकरी मिलेगी, यह सोच को खत्म करने की जरूरत है, जब तक यह सोच हमारे देश में रहेगी, तब तक हम लोगों में एकता की भावना नहीं ला सकते हैं, जाति और धर्म किसी के जीवन पर हावी ना हो, इसका ध्यान रखना चाहिए, फिर भी कुछ राजनीतिक दल आज भी इसे मुद्दा बनाकर, संसद में बहस करते हैं। लाइव टीवी पर लोगों के सामने इस पर बहस की जाती है, जाति और धर्म के अनुसार नेता चुने जाते हैं, जो कि सरासर गलत है और यह समाज को गलत संदेश देती है, जाति और धर्म पर पहली बात तो बात ही नहीं होनी चाहिए। जाति और धर्म केवल और केवल लोगों में फूट लाती है, लोगों में एक दूसरे के प्रति दूरियां बढ़ाती है, हमारा देश अपने एकता के लिए जाना जाता है, लेकिन अंदर ही

अंदर कुछ लोगों की वजह से एकता पर खतरा होने जैसा माहौल पैदा हो रहा है और इसे बदलने की सख्त जरूरत है।

हमने देखा होगा, कुछ राजनीतिक दलों में ऐसे भी नेता होते हैं, जिनका पहले का जीवन क्रिमिनल बैकग्राउंड से जुड़ा होता है और अपनी शक्ति और पैसे के दम पर राजनीति का रुख करते हैं और उसमें सफल भी होते हैं, ऐसे राजनेता क्या देश के लिए सही है? ऐसे राजनेताओं के हाथों में देश की बागडोर होना, खतरे से कम नहीं केवल इक्का-दुक्का नहीं बल्कि अलग अलग राजनीतिक दलों में कई लोग जो सत्ता में है और नहीं भी, कुछ विधायक हैं तो कुछ सांसद या फिर कोई मंत्री, ऐसे नेता बड़ी तादात में है, जो नेता बनने से पहले एक क्रिमिनल के रूप में देखे जाते थे और हम देखते भी हैं कि कई नेता जिनके संपर्क अंडरवर्ल्ड लोगों के साथ होते हैं, किसी को मरवाना हो किसी का काम करवाना हो तो यह नेता बड़े आसानी से अंडरवर्ल्ड के लोगों की सहायता से उसमें कामयाब होते हैं, यह लोग राजनीति में केवल और केवल शोहरत पाने के उद्देश्य से आते हैं, इन्हें पता होता है कि इनका संपर्क इतना तगड़ा है कि कोई इनका बाल भी बांका नहीं कर सकता, इन्हें लगता है कि लोगों में इनका डर है, जिसके दम पर वह कुछ भी कर सकते हैं।

डरा धमकाकर लोगों से वोट लिया जाता है और नेता बनने के बाद उन्हीं लोगों को ऐसे भुला दिया जाता है, जैसे कि उनके प्रति उनका कोई कर्तव्य ही नहीं है, जबकि उन्हें उस स्थान पर बिठाया ही इसलिए

जाता है कि वह लोगों की सेवा कर सके, किंतु जो व्यक्ति गलत कर्मों के लिए जाना जाता है, भला वह किसी के बारे में क्यों सोचे? ऐसे लोगों को हमें ही निकालना होगा हमें इन से डरने की जरूरत नहीं और इस डर को खत्म करने की जरूरत है। ऐसे नेता देश के विकास और देश की अर्थव्यवस्थाओं के लिए खतरा है, जो कि धीरे-धीरे दीमक की तरह हमारे देश को खोखला करते जाएँगे, यह धीरे-धीरे किसी राज्य में राज्य से केंद्र में और एक बड़े नेता के रूप में लोगों के सामने आ जाते हैं। एक बड़े पद पर रहकर यह क्या नहीं कर सकते, इनके हाथों में ऐसी ताकत देना देश के लिए काफी नुकसानदेह है।

कोई भी व्यक्ति जिसे एक आईपीएस ऑफिसर, डॉक्टर इंजीनियर या किसी भी क्षेत्र में आगे क्यूँ ना बढ़ना हो, उसे पहले उस चीज के लिए पढ़ना और लिखना पड़ता है, उसे उस चीज की ज्ञान हासिल करना पड़ता है, तब जाकर उसे उसकी योग्यता अनुसार नौकरी मिलती है, ऐसे ही नहीं उसे उस स्थान पर बैठाया जाता है, क्योंकि वह काम काफी जिम्मेदारी वाला होता है, उसके लिए ज्ञान का होना बहुत ही जरूरी है, तो फिर कैसे कुछ क्रिमिनल और सड़क छाप गुंडे भी राजनीति में प्रवेश कर जाते हैं और बिना किसी ज्ञान के उन्हें पद पर बिठाया जाता है, जिसकी ना तो उन्हें कोई जिम्मेदारी होती है और ना किसी कार्य का आभास, वह क्या देश की और लोगों की विकास के बारे में सोचेंगे।

हमें सब कुछ बदलने की जरूरत है, जो राजनीति में होता है, चाहे बात आप कर लो, राजनीति में बैठे कुछ भ्रष्ट नेताओं की या फिर उनके गलत कार्य प्रणाली की धर्म के नाम पर राजनीति करने वालों की या फिर केवल एक समुदाय के बारे में सोचने वालो सरकार की, इन सभी चीजों को बदलने की आवश्यकता है और यह तभी मुमकिन है, जब हम एक साथ हो, हम सब की आवाज बुलंद हो और भारत जैसे देश में जहाँ लोकतंत्र सभी देशों के मुकाबले काफी ज्यादा बड़ा हो, उस देश में लोगों की आवाज सुनी भी जाएगी और हालात भी बदलेंगे, जरूरत है सभी लोगों का एक साथ आना, अगर सभी लोग एक साथ आते हैं और हम सब का लक्ष्य केवल यही होता है कि हमें किसी चीज को बदलने की आवश्यकता है तो, हम उसमें कामयाब जरूर होंगे और यह पुस्तक लिखने का एकमात्र उद्देश्य यही है कि किसी भी तरह लोगों में इस बात का आभास दिलाया जाए कि हमारे देश में कई जगहों पर ऐसी राजनीति हमें देखने मिलती है, जो की पूरी तरह गलत है और वह जनता के पक्ष में नहीं होती, इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने इस बात पर जोर दिया है कि देश में चल रहे, गलत और सही के बीच का अंतर जनता को समझ में आ जाए।

यह पुस्तक किसी भी एक राजनीति दल का पक्ष नहीं रखता, यह पूरी तरह रिसर्च और लोगों के विचारधारा पर लिखी गई पुस्तक है और इस पुस्तक का उद्देश्य लोगों में बदलाव और देश की राजनीति में बदलाव लाना है और यह मुमकिन भी है, हमारे देश को आजाद हुए 70

साल के ऊपर हो चुके हैं, लेकिन फिर भी आजादी हमें अभी चाहिए, भ्रष्टाचार से, हमें आजादी चाहिए, उन नेताओं से जो केवल अपने बारे में सोचते हैं, हमें आजादी चाहिए, गलत सोच से, यह आज का भारत है और आज के भारत में केवल और केवल विकास करने वाले लोगों की जरूरत है, जो कि देश की राजनीति को पूरी तरह बदल कर रख दे।

बदलाव कौन नहीं चाहता, बदलाव हर वह व्यक्ति चाहता है, जिसे अपने और अपने लोगों और देश के प्रति प्यार है और इस बदलाव को वह लोग भी चाहते हैं, जो लोग ईमानदार होते हैं और पूरी ईमानदारी के साथ राजनीति में प्रवेश करते हैं और अपनी राजनीति के जरिए देश का विकास भी करते हैं, ऐसे लोग भी राजनीति को बदलने की ताकत रखते हैं, ऐसे लोगों का साथ हमें देना चाहिए और हम सब साथ मिलकर देश में भ्रष्ट राजनीति को दूर कर सकते हैं, ताकि आने वाले समय में हम पूरी तरह साफ और सूथरी राजनीति देख सकें। यह सब जिम्मेदारी हमारी है, अगर कुछ बदलना है तो उसे हमें ही सोचना होगा, कोई आपको इस बारे में समझाने नही आएगा, हमारा देश बाकी सभी देशों के मुकाबले इतना बड़ा लोकतांत्रिक देश है, जहाँ किसी ने अगर आवाज उठाई और उसके साथ लाखों लोग खड़े हो गए तो, उस आवाज को मजबूरन सरकार को सुनना होगा और यह बदलाव हमें ही लाना है, हमें जागरूक होना पड़ेगा अंदर ही अंदर हमें वह ज्वाला जगानी होगी, जिससे देश की राजनीति में बदलाव आ सकें।

लोकतंत्र की शक्ति का आभास तब तक नहीं होता, जब तक हम अपनी आवाज को बुलंद नहीं करेंगे, लोकतंत्र का अर्थ ही होता है कि हम अपनी आवाज को लोगों के बीच पेश करें, अपना विचार लोगों के सामने रख सकें, वह भी बिना किसी रोकटोक, इस लोकतंत्र का अर्थ तो लोगों को समझ में आता है, किंतु जब आवाज उठाने की बारी आती है तो, लोग कहीं ना कहीं दब जाते हैं। लोगों में यह भावना रहती है कि आवाज उठाने से या कोई आंदोलन करने से देश का भविष्य नहीं बदलता, वह भी आज के जमाने में, बल्कि यह पूरी तरह असत्य है, कोई एक व्यक्ति भी अगर आवाज उठाता है तो, उसके पीछे हजारों लोग खड़े हो जाएँगे। अगर वह सही चीज के लिए आवाज उठाया हो, क्योंकि सच में इतनी ताकत होती है की आपको कोई लीडर की जरूरत ही नहीं पड़ेगी, खुद के अंदर की भावनाओं को अपने सोच के जरिए लोगों के सामने रखिये, जिससे कि बदलाव संभव हो।

आज हमारा देश भले ही हर क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है, चाहे वह बात खेल की करे, अंतरिक्ष की करे या फिर सिनेमा जगत की, लेकिन भारत का हर व्यक्ती आगे नहीं बढ़ रहा है, हमारे देश के गरीब आगे नहीं बढ़ रहे, आज भी इतने गरीब है कि 1 दिन के खाने के लिए भी, उन्हें कई तरह के परेशानियों को उठाना पड़ता है। हर गरीब यह सोचता है कि ऐसे प्रगति का का क्या मतलब जो हमारा पेट ना भर सके और यह उनकी सोच सही भी है। अगर देश को सही मायने में तरक्की की ओर ले जाना है तो सभी को साथ लेकर जाना होगा। देश को हर क्षेत्र से फायदा तो हो

रहा है, लेकिन उस फायदे को आम जनता तक पहुँचने में इतनी देर क्यों हो रही है? उस फायदे से नौकरियां क्यों नहीं उपलब्ध कराई जा रही हैं,? केवल और केवल अपनी जेब भरने से देश का विकास नहीं होता, आप काम तो दिखा रहे हैं कि देश हमारा इतना आगे बढ़ रहा है, लेकिन यह भी छुपा रहे हैं कि हमारे देश मैं इतने गरीब है, जो आज भी भूखे सोते हैं, हमारे देश में नौकरियां नहीं है।

ऐसे में कोई, क्यों नहीं चाहेगा कि हमारे देश में बदलाव हो, क्यों नहीं लोग सोचेंगे कि हमारे देश की राजनीतिक व्यवस्था ठीक की जाए, क्यों नहीं लोग चाहेंगे कि हमारे देश में भ्रष्टाचार खत्म हो आवाज उठाने की जरूरत पड़ेगी ही क्यों, जब सब कुछ ठीक हो।

राजनीति यह एक ऐसा घेराव है, जहाँ देश के कई लोगों को इस घेराव में भय जैसा लगने लगता है, बिल्कुल ही राजनीति के प्रति उनके अंदर भय जैसा माहौल पनपने लगता है, यह कोई अपने आप आने वाली चीज नहीं है, बल्कि यह बीते कई सालों की राजनीतिक घटनाओं से कारण होता है, उन्हें अपनी आवाज उठाने के लिए भी 10 बार सोचना पड़ता है। अपनी जरूरतों और असामाजिक तत्वों के खिलाफ अपनी सोच व्यक्त करने के लिए भी डर लगने लगता है, क्योंकि ऐसे लोगों ने देखा है कि कोई भी सरकार के खिलाफ अपनी आवाज उठाता है या उनके विरुद्ध कुछ भी करता है तो, किस तरह उनकी आवाज दबाई जाती है, सिर्फ आवाज को नहीं बल्कि उन्हें जान भी

गंवानी पड़ जाती है। यह सब देख, हमारे युवा पीढ़ी इस कदर भय के वातावरण में जीने लगेंगे, जिससे की राजनीति, और भ्रष्ट लोगों से भर जाएगी, उसे रोक पाना किसी के बस की बात नहीं है।

लोकतांत्रिक देश में रहना, यह सिर्फ बातें बन गई हैं, यहाँ लोग केवल उस चीज के लिए आवाज उठाते हैं, जिसके मायने काफी कम होते हैं। आज जो कोई भी आंदोलन कर रहा है, किसी के विरोध में आवाज उठा रहा है, वह भी एक तरीके से राजनीतिक दायरे में आता है, यहाँ राजनीतिक सहयोग से ही कुछ लोग, यानी उनके कठपुतली बनकर सत्ता में बने सरकार के विरोध में अपनी आवाज उठाते है, उनके लिए कोई मुद्दा गंभीर नहीं होता, उनके लिए यह अहमियत रखता है कि कैसे वह सरकार गिर जाए, काफी कम सुनने मिलता है कि इसे इंसाफ दो या हमारी मांगे पूरी करो, बल्कि किसी की इंसाफ के आड़ में यह लोग मौजूदा सरकार में मंत्रियों के इस्तीफे की माँग करते हैं, ऐसे में किसी की कठपुतली बनकर विरोध करना लोकतंत्र के अपमान जैसा है।

यहाँ लोग भूल गए हैं कि लोकतंत्र के सही मायने क्या है, यहाँ असल मुद्दे पर कोई बात नहीं करता, क्योंकि उनकी बातें, उसी वक्त दबा दी जाती है, उन्हें इस कदर गायब किया जाता है, जैसे कि उस व्यक्ति का कभी इस जीवन में अस्तित्व ही नहीं था, अगर किसी भी राज से पर्दा उठने की शंका, अगर किसी राजनीतिक दल के मंत्री को हो गई तो, आप देखते होंगे कि किस कदर उन मुद्दों को दबाया जाता है और इसमें पूरा साथ भारतीय मीडिया देती है। इसे बदलने की जरूरत है, जब तक यह

चीज नही बदलेगी नहीं, तब तक भ्रष्ट राजनीति से छुटकारा, हमें कभी नहीं मिल पाएगा। अपनी भलाई और अपनी सुरक्षा के लिए यह लोग कभी नहीं देखते कि सामने वाला कौन है, कैसा है, बस अपने पर बात आई तो, सामने वाले की खैर नहीं, यह सोच इनकी काफी खतरनाक होती है, जिससे कि आज भी भारी मात्रा में लोग राजनीति से डरते हैं। हमारी युवा पीड़ी राजनीति में अपना कदम रखने से डरते हैं, उन्हें इस बात का डर रहता है कि सत्ता के लालच में कहीं जान ना गवानी पड़ जाए, उनकी सोच, उनके विचार सत्ता के लालच में खत्म हो जाते हैं, जिससे कि देश विरोधी भावना उत्पन्न होती है।

यहाँ हर कोई डरा हुआ है, कोई सोचता है कि मुस्लिमों वाली राजनीति चल रही है, कोई सोच रहा है यहाँ दलितों की राजनीति चल रही है, भारत में एक चीज काफी लोकप्रिय हैं, वह यह है कि यहाँ पर आसानी से लोगों का मन बदल दिया जाता है, उनके मन में नई बातें डाल दी जाती है और वह आसानी से उस बात को मान भी लेते हैं, दंगे करने पर उतारू हो जाते हैं, सामाजिक मुद्दों को धार्मिक मुद्दा बनाकर, इस कदर लोगों के मन में देश विरोधी भावनाएं डाली जाती है, जिससे की देश का माहौल पूरी तरह बिगड़ता है और अल्पसंख्यकों में, इस भय को अनुभव किया जा सकता है।

अगर आज भी यह सब भारत में होता है तो, हमें किस बात पर अभिमान करना कि हमारा देश एकता वाला देश है, जहाँ हम गर्व से

यह तो कह देते हैं कि हमारे देश की एकता और अखंडता विश्व में सबसे अलग है, हमारे देश में सभी धार्मिक लोग एक दूसरे के साथ भाई-चारे का माहौल बनाकर रहते हैं, लेकिन वही अपने ही घर में किस कदर अपने आप को उस एकता का दुश्मन बना लेते हैं, जो कि भारतीय सभ्यता का एकमात्र सिद्धांत है, हमारा देश जाना है, इसलिए गया है कि यहाँ पर अलग संस्कृति अलग धर्म के लोग भी एक साथ मिलकर हमेशा से रहते आ रहे है, किंतु ऐसी क्या आपदा आ गई कि लोग राजनीतिक फायदे के लिए देश विरोधी बातें करते हैं। देश में भय जैसा माहौल उत्पन्न कराते है, अपने काम और देश की सेवा कर सत्ता पाना और धर्म की राजनीति कर लोगों में भय डालकर सत्ता पाना, यह कभी भारतीय राजनीति का हिस्सा नहीं था, लेकिन पिछले कई सालों की राजनीति में हमें यह देखने मिला, लेकिन वही हम देखें तो पिछले 10 वर्षों में देश जात-पात और धर्म से हटकर विकास को महत्व देता है, क्योंकि राजनीति साफ-सुथरी है, अगर राजनीति साफ-सुथरी हो तो देश के लोगों का भी मन उतना ही साफ रहता है।

आज कई देश अपने लोगों के साथ मिलकर विकास को इस कदर अपने देश में लाते हैं, जो पूरे विश्व के लिए एक संदेश है कि कैसे अपनों का साथ और अपनों का विकास ही सही मायने में प्रगति है। आज हम देखते हैं कि विश्व में कई ऐसे देश है, जिन्होंने कम समय में अपने हालातों को कई महीनों में बेहतर किया है, जो देश हम से भी पीछे थे, वह आज हमारे बराबर है या हमसे भी आगे है, पर यह किसी

चमत्कार से नहीं होता, बल्कि किसी नेता के अंदर अपने देश के प्रति प्रेम और अपने देश के लोगों के बारे में भला सोचने से होता है, और जब जहाँ भी ऐसा हुआ है, उस देश ने हमेशा प्रगति देखी है, ऐसे देशों में धर्म के नाम पर राजनीति नहीं होती, धर्म से भी ऊपर किसी व्यक्ति का विकास होता है। सही मायने में आज के वक्त जिस के पास पैसा है, वही व्यक्ति समाज में अच्छा जीवन जी सकते हैं, बाकी केवल बोलने की बात होती है कि बिना शोहरत के जीवन में सुख और चैन है। असल में जो मेहनत करता है, उसे ही शोहरत नसीब होती है और जो नहीं करता, वह इसे बोलने वाले बात के साथ जीवन जीता है, लेकिन वह अंदर ही अंदर जानता है कि बिना शोहरत के मेरा जीवन कुछ नहीं।

मॉडर्न जमाने के साथ-साथ आज की राजनीति भी मॉडर्न हो गई है, लोग वर्चुअल रैलियां कर रहे हैं, किसी भी चीज का लोकार्पण वर्चुअल किया जाता है, जो कि काफी हद तक सही है। ऐसे ही कुछ-कुछ बदलाव राजनीति द्वारा अच्छे दिखे है, जिससे जनता के द्वारा भरे हुए टैक्स के पैसे का गलत इस्तेमाल नहीं होता, जिस तरह पिछले वर्षों में हमें देखने को मिला की लोग लाखों करोड़ों रुपए बस रैलियों और अपने राजनीतिक दल के विज्ञापन के लिए करते हैं। देश के हालात को समझना हर राजनीतिक दल और उस राजनीतिक दल के सभी मंत्रियों का कर्तव्य है, हालात समझकर, उस हालात का हल निकालना, जिससे कि देश में रह रहे हर नागरिक को किसी भी प्रकार की तकलीफ का सामना ना करना पड़े। कोई देश हो, कोई राज्य हो या कोई छोटा सा

कस्बा ही क्यों ना हो, वहाँ रह रहे हर एक नागरिक को समान अधिकार मिलना चाहिए, जो देश के संविधान ने हमें हमेशा बताया है। हर नागरिको तक सरकार द्वारा योजनाओं का लाभ पहुँचे, इसकी तसल्ली सरकार को हर वक्त करते रहनी चाहिए। जनता सरकार के कुर्सी का एक पैर होता है, जो लड़खड़ा गई तो उस सरकार को गिरने में ज्यादा वक्त नहीं लगता। जनता ने उस कुर्सी तक आप को बिठाया है तो, उस कुर्सी से गिराना भी यह जनता बखूबी जानती है।

आज देश की समस्या क्या है और इस समस्या को किस प्रकार कम किया जा सकता है, इस पर काफी विचार-विमर्श सरकार को करना होगा, केवल विदेश नीति और धार्मिक मुद्दों का निवारण करने से देश का विकास नहीं होता। हमें अपने देश में अपने लोगों के साथ मिलकर रोजगार और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों को गंभीरता से देखना होगा, जिससे देश का हर नागरिक अपने जीवन में खुशियाँ देख सकें, क्योंकि हर नागरिक यहाँ महँगाई से परेशान है, जो हमें पिछले कई वर्षों में देखने नहीं मिला, वह आज देखने मिल रहा है।

आप देखेंगे की पेट्रोल की कीमत आसमान छू रही हैं, रोजमर्रा की चीजों के भाव दुगनी तेजी से बढ़ रहे हैं, यहाँ तक की सामान्य मोबाइल रिचार्ज कराने के लिए भी कोई व्यक्ति 10 बार सोचता है, हां यह जरूर मान्य है कि कई देशों के मुकाबले भारत देश में रिचार्ज काफी सस्ते हैं, किंतु इसकी आदत हमें किसने डलवाई, हमारी सरकार ने और हमारी सरकार का कर्तव्य बनता है कि जिस मूल्य पर जो साधन हमें

उपलब्ध कराए थे, वह हमेशा उसी तरह बने रहे,, क्योंकि किसी भी वस्तु का मूल्य तो बढ़ जाता है किंतु एक व्यक्ति की आय बस उतनी ही रहती है, जिससे की देश में कई लोग ऐसे हैं, जो महँगाई से तंग आकर अपने जीवन में क्या करना है, वही भूल जाते हैं और अपने जीवन से हार मान जाते हैं। महँगाई कम करना, यह देश की सबसे बड़ी उपलब्धि होगी, जहाँ सभी नागरिक अपना जीवन चैन से बिता सकेंगे, हर कोई चाहता है कि उनके आमदनी में से कुछ पैसे वह बचत करके रखें, जिससे वे अपने भविष्य मे कुछ बेहतर कर सकें, किंतु महँगाई ने इस कदर दबोच कर रखा है कि जितनी आमदनी है, उससे ज्यादा तो खर्चे हो गए है, ऐसे में एक मिडिल क्लास व्यक्ति अपना जीवन नहीं चला पाता, अपना परिवार नहीं पाल पाता।

आज के युवा अपने सपनों को अपने अंदर बुनता है और जब समय आता है कि कुछ करें, तब वह सुविधा हमारे लिए उपलब्ध नहीं होती, जैसे कि रोजगार या कोई भी बिजनेस करने के लिए पर्याप्त धन। इस देश के युवाओं में इतने कौशल होने के बावजूद भी हमारे युवा दर-दर भटकते हैं, जब सब कुछ उन्हें मालूम होता है, कुछ करने का जज्बा होता है, तब समय आने पर वह जज्बा मानों कहीं गायब हो जाता है। इसमें ऐसे युवाओं की कोई गलती नहीं होती है तो, हमारे देश में सुविधा प्रदान करने वाले हमारी सरकार का कर्तव्य ही होता है कि हमारे युवा, जो देश की प्रगति के मुख्यधारा होतें है, उसे हर वह चीज मुहैया कराई

जाए, जिससे वह अपने सपने को जी सकें, इस देश के लिए कुछ कर सकें।

आज पढ़े-लिखे युवा भी ऐसे काम करते दिखाई दे रहे हैं, जो अनपढ़ लोगों का भी काम ना हो, अच्छी डिग्री प्राप्त हुआ, किसी कंपनी में वॉचमैन बनकर गेट के बाहर खड़े होते हैं, कोई युवा गोलगप्पे बेचता है, इंजीनियरिंग और डॉक्टरी मानों एक मजाक बनकर रह गया है लाखों की तादाद में इंजीनियरिंग और डॉक्टरी की डिग्री लेकर लोग बस घूमते दिख रहे हैं। कोई उनसे पूछता भी हो कि क्या करते हो? तो उनके जवाब से ही लोग हंस पड़ते हैं, समाज उन्हें ऐसे देखता है कि जैसे इंजीनियरिंग करने वाले लोग जीवन भर बेरोजगार ही रहेंगे, जिससे उनका ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भी मनोबल नीचे गिरेगा। कोई भी युवा उस क्षेत्र में रुचि नहीं दिखाएगा, कोई भी मां बाप अपने बच्चों के लिए सपने नहीं देखेगा कि मेरा बेटा बड़ा हो बनकर डॉक्टर, इंजीनियर बने, क्योंकि डॉक्टर तो बन ही जाएँगे, लेकिन क्या अस्पताल उतने उपलब्ध है?, इंजीनियरिंग की डिग्री तो प्राप्त हो जाएगी, क्या हमारे देश में ऐसे प्रोजेक्ट हैं, जो कि इंजीनियरिंग छात्रों की भर्ती करा सकें?, कई ऐसे सवाल है, जो हमें चुभते हैं, किंतु इस समस्या का समाधान केवल हमारी सरकार कर सकती है।

हमारे समाज को बदलाव की अत्यंत आवश्यकता है, जहाँ पर कई ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर गौर करना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए, जिस प्रकार से लोग आज धर्म के नाम पर एक दूसरे के साथ लड़ रहे हैं,

जिस प्रकार लोग बढ़ती दुनिया के साथ खुद को इतना ज्यादा बढ़ा रहे हैं कि वह अपनी संस्कृति और अपने स्वभाव से दूर होते जा रहे हैं, जो कि भारतीय सभ्यता का भाग नहीं है, ये सभी समस्याएं आज नहीं हमारे आने वाले भविष्य में हमें तकलीफ देंगे। जब कोई भी किसी के काम नहीं आएगा, किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के प्रति संवेदना ही नहीं बचेगी, ऐसे में राजनीति केवल और केवल समाज की भलाई के लिए होना चाहिए और हमारी संस्कृति और सभ्यता कैसे बचें, उस पर भी गौर करना चाहिए।

हर व्यक्ति आज अपने में लगा हुआ है, वह यह भूल जाता है कि उसके पीछे कई ऐसी बातें हैं, जिसे उसे साथ में लेकर चलना है, लेकिन इस भागदौड़ वाली जिंदगी में कहीं ना कहीं, वो समाज को पीछे छोड़ कर चला जाता है और इस प्रकार एक दूसरे के प्रति दूरियां, हमें देखने मिलती हैं, खासकर युवाओं में हमारे समाज के प्रति लगाव और हमारी संस्कृति के प्रति संवेदना कैसे रखनी चाहिए, इस बारे में उनके भीतर सोच डालनी चाहिए, जिससे हर व्यक्ति अपने समाज के साथ आगे बढ़े और इसके साथ ही हमारे देश की चली आ रही सांस्कृतिक परंपरा को भी साथ लेकर चलना होगा, इसका आभास आज के युवाओं को कराना होगा।

विकास हर किसी के जीवन में होना जरूरी है, विकास हर देश के लिए होना जरूरी है, विकास को हमें अपने अंदर लाना भी जरूरी है।

यहाँ सभी अलग-अलग तरीके के विकास है, जिसके अलग-अलग मायने हैं, हर तरीके का विकास अलग-अलग लोगों द्वारा किया जाता है। जैसे खुद के अंदर हम खुद ही विकास ला सकते हैं, जो कि मानसिक और वैचारिक रूप में होता है, देश का विकास राजनीतिक दलों का होता है, जो कि सत्ता के दम पर और सही सोच के जरिए देश की प्रगति करें, लेकिन यही सरकार आपके अंदर विकास नहीं कर सकती। जब तक आप खुद नहीं चाहेंगे, यह आपको खुद अपने भीतर लाना होगा। सरकार आपके लिए, हर वह सुख सुविधा प्रदान तो कर देगी, लेकिन उस सुख-सुविधा के लिए आपको अपने अंदर विकास लाना होगा। जिसके प्रयोग से आपका जीवन बेहतर हो, समाज के साथ चलना भी आपके लिए बहुत ही जरूरी है, अपने आपको समाज और वक्त से अलग रखने पर आप खुद से नहीं बल्कि अपनी सोच से भी दूर हो जाएँगे, जिससे आप अपने जीवन में काफी पीछे रह जाते हैं, ऐसे भी लोगों के लिए सरकार को कई तरह के कैंपेन चलाने पड़ेंगे, जिससे ऐसे व्यक्तियों में बदलाव लाया जा सके।

हमारी सरकार को इन सभी चीजों पर गौर देने की आवश्यकता है, ताकि हमारे देश की संस्कृति बची रहे। इसके अलावा हम देखें तो सरकार और भी ऐसे कार्य कर सकती है, जिससे आज के युवाओं में देश प्रेम की भावना डाल सकें, पिछले 50 वर्षों की राजनीति में हमें लोगों के अंदर से देश प्रेम की भावना कम होती दिखी है, लोग देश को बाद में पहले अपने विकास की सोचते हैं और इसी विकास की खोज में, वह

अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं, जिससे उन्हें और उनके आने वाले संतानों को कभी उस बात का आभास नहीं पड़ा, जो कि देश प्रेम के लिए बहुत ही आवश्यक चीज होती है, हमारे देश को कई स्वतंत्रता सेनानियों ने मिलकर आजाद किया है और यह आजादी हमें उनके लहू से मिली है, उस आजादी का मतलब यह था कि अगर हमारे देश पर कोई आँच आती है तो, उसके लिए हमें स्वयं खड़ा होना पड़ेगा, कोई भी राजनीतिक दल आपके बिना अधूरी है, उसे आपका साथ की हमेशा जरूरत होती है, चाहे बात करें अब सरकार बनाने की या उनके विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी कदम की, उन्हें हर हाल में आपका साथ चाहिए।

हर राजनीतिक दल की अपनी-अपनी विचारधारा होती है, और उनके अलग-अलग ऐसे मुद्दे होते हैं, जिन पर पूरी तरह से हम जनता का साथ चाहिए होता है, जैसे कि देश विरोधी सोच को कैसे मिटाया जाए, कैसे देश में हो रहे भ्रष्टाचार के खिलाफ सभी साथ मिलकर लड़े, और भ्रष्टाचार से भारत को मुक्त कैसे कराएं। ऐसे कई मुद्दे हमारे देश में चले आ रहे हैं, जिसमें जनता का पूरा साथ भी मिला है, उसी को देश प्रेम की भावना कहते हैं, लेकिन आज के समय में वह देश प्रेम की भावना नागरिकों के मन से निकल रही है, ऐसे में सरकार का फर्ज बनता है कि उन्हें इस बात का आभास दिलाना है कि देश सर्वोपरि है और देश से बढ़कर हमारे लिए कुछ नहीं। देश में चल रहे सभी बातों पर जनता का ध्यान होना चाहिए, जिससे उन्हें सही गलत का अनुभव

हो, अगर ऐसा नहीं होता है तो इसमें कई राजनीतिक दल भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते रहेंगे, हमारे देश में कई ऐसे नेता हुए हैं, जिन्होंने अपनी सोच के जरिए समाज को बदला है और समाज में एक नई क्रांति लाई है। ऐसे ही नेता देश को आगे ले जाते हैं, लेकिन हमारे देश की राजनीति आज तक किसी के समझ ही नहीं है, इसका कारण है, सत्ता के लालच में कई राजनीतिक दल ऐसे से कदम उठाते हैं, ऐसी-ऐसी हरकतें करते हैं, जिससे कि देश की राजनीति पूरी तरह बदल जाती है।

यहाँ सरकार को ध्यान देना चाहिए कि कहीं हमारा समाज और हमारे समाज के नवयुवक कहीं गलत दिशा में तो नहीं जा रहे हैं, क्योंकि ऐसा आभास हुआ है कि पिछले कई वर्षों में टेक्नोलॉजी के विकास से हर व्यक्ति इस से जुड़ चुका है, आज हर व्यक्ति स्मार्टफोन इस्तेमाल करता है और उनके इस्तेमाल से उनमें से अधिकतर नवयुवक गलत दिशा की ओर बढ़ते हैं। इसका मुख्य कारण है, कई ऐसी चीजें दिखाई जाती है, अलग-अलग माध्यमों के सहारे, जिससे की उनका ध्यान भटक जाता है और वह गलत दिशा की ओर बढ़ते हैं, चाहे आप बात करें, यूट्यूब की या कई बड़े-बड़े ओ.टी.टी चैनल्स की यह ऐसा माध्यम है, जहाँ पर कई अच्छी चीजें दिखाई जाती है तो, कई सारे ऐसी चीजें दिखाई जाती है, जो कि समाज को गलत संदेश देता है।

यहाँ लोग अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, ऐसे गलत कंटेंट दिखाए जाते हैं, जिससे युवा और देश के बच्चे गलत विचारों का समावेश अपने अंदर करते हैं और इसकी कोई सीमा नहीं होती, किसी

भी प्रकार से आपको बहुत सी ऐसी चीजें वहाँ उपलब्ध मिलती है, चाहे अब बात करें, नग्न दृश्य की या सेक्सुअल कंटेंट की जो कि सभी लोग देख सकते हैं और आज के जमाने में मात्र 13 से 14 साल की उम्र में भी बच्चों को स्मार्टफोन उनके माता-पिता मुहैया करवा देते हैं, जिससे बच्चे समय से पहले ही वह सारी बातें अपने अंदर में महसूस करने लगते हैं, जो बहुत ही गलत है, इस बारे में सरकार को बहुत ही ध्यान पूर्वक सोचना होगा और इन माध्यमों के सहारे गलत संदेश पहुँचे, इस पर रोक लगानी होगी, हमारा देश अध्यात्म और विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों से जना जाता है और इस प्रकार की अभद्र दृश्य और गलत विचार को फैलाने वाले कुछ लोगों पर पाबंदी लगाना, सरकार का काम है और इस पर सोचना बहुत ही जरूरी हो गया है।

इसके अलावा हम बात करें, पर्यावरण की तो पर्यावरण के बारे में भी सोचना सरकार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, हमारे पृथ्वी का संसाधन तेजी से खत्म हो रहा है, इस बढ़ती जनसंख्या पर रोक कैसे लगाया जाए, इसका आभास कराना, हर नागरिक तक पहुंचाना सरकार का अहम मुद्दा होना चाहिए। देश में भारी संख्या में लोग अपने पास वाहन रखते हैं, जिससे पेट्रोल और डीजल जैसे संसाधन तो खत्म हो रहे हैं और साथ ही पर्यावरण को भी भारी नुकसान हो रहा है, वही बात करें तो देश में लगभग 100 करोड़ से भी ज्यादा लोग स्मार्ट फोन यूज कर रहे हैं, उस फोन को बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का ही प्रयोग किया जाता है, जिससे इसकी कमी धीरे-धीरे समय आने पर महसूस होगी,

इतना ही नहीं बल्कि इसका प्रभाव पर्यावरण पर भी पड़ता है, और हमारे पशु-पक्षियों को भी इसका नुकसान झेलना पड़ता है, इतना ही नहीं और भी कई ऐसे बातें हैं, जिससे प्रकृति के संसाधन और हमारे पृथ्वी का पर्यावरण खतरे में आता है, जो कि हमारे पीढ़ी के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होगा और इस बारे में सरकारों को भी गंभीरता से सोचना होगा, जिससे इन सभी चीजों पर रोक लगे, सरकार को हमारे देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून को भी लाना होगा, जिससे हमारी आने वाली पीढी भी सुरक्षित रहे, इन सभी बातों का आभास एक समय पर सभी लोगों तक पहुंचाना काफी मुश्किल भरा तो हो सकता है, किंतु अगर सरकार एक मुहिम चलाकर जनता को जागरूक करें तो, मुमकिन है कि हमारा समाज हमारा देश और हमारी पृथ्वी सुरक्षित रहें।

यह किताब किसी भी एक राजनीतिक दल या किसी एक व्यक्ति का समर्थन नहीं करता, यह किताब लिखने से पहले लोगों की सोच और मौजूदा हालात का आँकलन करके लिखा गया है और इस किताब का लिखने का उद्देश्य केवल और केवल इतना है कि देश की राजनीतिक स्थिति और लोगों की राजनीति के विषय पर धारणा किस प्रकार होती है और उसके क्या मायने होते हैं, उस बात को बड़ी बारिकी से बताया गया है और देखा जाए तो इस किताब के माध्यम से समाज में कई तरह से बदलाव आ सकते हैं, लोगों में खुद को पहचानने की क्षमता और सही निर्णय लेने के लिए खुद के अंदर एक आत्मविश्वास लाना। इस किताब का मकसद है, यह केवल भारत में रह रहे आम नागरिकों

का ही नहीं, बल्कि राजनीति में ऐसे नेताओं के भी अंदर बदलाव लाना है, जिससे देश में शांति और प्रगति जैसा माहौल हो, जरूरी नहीं किताब के माध्यम से ही किसी के अंदर बदलाव लाया जा सके, एक ऐसी लहर एक ऐसे वातावरण की जरूरत है, जिससे लोगों में खुद-ब-खुद ऐसी भावना पैदा हो, हमारे देश में भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृति वाले लोग रहते हैं, हर किसी की अलग सोच है और इन सभी अलग सोच का मकसद एक होना चाहिए और वह मकसद यह होना चाहिए कि हम जिस देश में रह रहे हैं, वहाँ सुव्यवस्था बनी रहे।

किताब जिसे पढ़कर आप चीजों को बारिकी से अनुभव करते हैं, जो आप अपने अंदर सोचते हैं, कहीं ना कहीं वह चीज आपके मन में पहले से ही चलती रहती है, किसी भी लेखक के लिए एक किताब लिख देना कोई बड़ी बात नहीं, लेकिन किसी के अंदर बदलाव देखना, यह लेखक के लिए बहुत बड़ी बात होती है, जब लोग किताब पढ़ते हैं तो, खुद के अंदर झाँकने की कोशिश करते हैं, जिससे उनमें कई तरह के बदलाव को अनुभव किया जा सकता है, इसलिए जरूरी नहीं अपने अंदर बदलाव लाने के लिए आपको किताब की खोज करनी पड़े, खुद के अंदर झाँकने से ही आपको अपने अंदर की बातें पता चलती है और अपने जीवन में सही निर्णय लेते हैं, जिससे आप अपने हित के लिए कुछ सोचते हैं।

एक पंक्ति काफी मशहूर है की ""सोने की चिड़िया" वाले इस देश में हालात कुछ और है सभी धर्म अगर अपने अंदर झांके तो, बात कुछ और है", यह पंक्ति कहीं ना कहीं बहुत कुछ बयां करती है, जिस तरह के हालात हमारे देश में हैं उस हालात के हम खुद जिम्मेदार हैं, कुछ नेताओं के बहकावे में आकर हम किस तरह हिंदू-मुस्लिम की लड़ाई में सहभागी होते हैं, यह सिर्फ हम ही नहीं पूरा विश्व जानता है और ऐसे लोग हमें एक दूसरे से लड़वा कर खुद की कुर्सी को और चौड़ा करते जाते हैं, देश में रह रहे सभी नागरिकों का विकास अपने अंदर से होगा, तब खुद-ब-खुद भारत देश एक ऐसे मुकाम पर खड़ा होगा, जिसकी कल्पना कोई नहीं कर सकता, यह वक्त आने पर ही मालूम पड़ेगा।

गुलामी से आजाद होने में हमें कई साल लग गए, कहीं ना कहीं हम आज भी गुलाम है, हम अपनी ही सोच को कहीं न कहीं कैद करके रखे हैं, हमें अपने अंदर की क्षमता का बिल्कुल भी अंदाज नहीं है, पता नहीं बस किसी के दिखाएं, दृश्य को सच मान लेते हैं, किसी की बातों के बहकावे में आकर बहक जाते हैं, अपने ही रास्ते से भटक जाते हैं, हमें इन सभी जंजीरों को तोड़ कर आगे बढ़ना होगा। देश में हर क्षेत्र के लगभग सभी नेताओं में अधिकतर नेता भ्रष्ट हैं, जो कि अपने भ्रष्ट सोच से बिना डरे, बिना किसी की परवाह किए, बस अपना भला करते जातें है और इसकी कोई समय सीमा नहीं होती, जिससे समाज में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलने का

कारण हम ही लोग हैं, हम अगर दर्शक बनकर, ऐसे लोगों को बस देखते रहेंगे सुनते रहेंगे तो भ्रष्टाचार कभी खत्म नहीं होगा, हमें सही नेता चुनने का पूरा हक है और वह सही नेता कैसे चुना जाए, यह आप पर निर्भर है, आपको समझना होगा कि हम जिसे चुन रहे हैं, क्या वह भविष्य में हमारे लिए कुछ कर पाएगा?

बात चाहे सड़कों की हो, अस्पताल की हो या फिर शिक्षा का, यह जरूरत हर आम नागरिकों की है, इसके बिना जीवन ना के बराबर है। इन सभी प्राथमिक जरूरतों को सरकार किस तरह पूरा करें, यह सरकार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी होनी चाहिए। सरकार को अपने लिए फैसलों में इन बातों का ध्यान रखना चाहिए कि वह फैसला जनता के हित में हो, क्योंकि सरकार केवल जनता के लिए होती है, सरकार को अपने कार्यकाल के दौरान पहला 5 वर्ष इन्हीं जरूरतों को पूरा करने के लिए लगाना होगा, किसी भी सरकार में कोई अच्छा नेता, अगर अपने दिल से सोचता है कि मैं मेरे पद की जिम्मेदारी पूरी तरह निभाऊंगा और मेरा पूरा काम केवल और केवल जनता के लिए होगा तो इस देश की स्थिति ही कुछ और होगी केवल एक नेता के सोचने से ऐसा संभव नहीं है, भारत देश इतना बड़ा है कि यहाँ अनेकों मंत्री, अपना कार्यभार संभालते हैं, उनमें से कुछ मंत्री भ्रष्ट जरूर होते हैं, ऐसे ही मंत्रियों का मंत्रिमंडल में कोई जगह नहीं है, इस बात को राजनीतिक दल गंभीरता से लें, मंत्रिमंडल में वही नेता हो, जिसका जीवन बेदाग हो।

सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि अगर कोई नेता सही ढंग से देश के लिए कुछ कर रहा है तो, विपक्ष की चाल में उस नेता को अपना सर झुकाना पड़ता है, अगर नहीं झुका तो उसे झुकाया जाता है, क्योंकि यह भारत देश है और यहाँ पर अपनी शक्ति से लोग किसी भी प्रकार के हद तक गुजरने के लिए तैयार होते हैं। वह शक्ति, धन के बलबूते ज्यादा देखी जाती है, जहाँ आप पैसे फेंको सामने वाले दल के विधायक दौड़े-दौड़े आपके पास आते हैं, क्योंकि यह भारत देश है, यहाँ कपड़ों से ज्यादा सरकारे बदलती है, इन सभी बदलावों के लिए हम एक ऐसे नेता की जरूरत है, जो निडर हो साहसी हो और अपने देश के प्रति प्रेम रखता हो, सच तो यह है की ये सभी गुण लोगों को आज के मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में दिखती है और देश की लगभग आधे से ज्यादा आबादी, उन पर आँख बंद करके, भरोसा करते हैं, मोदी नाम सुनकर ही लोगों में उत्साह आ जाता है और लोग चाहते हैं कि यह उत्साह और के अंदर हमेशा बना रहे लोग सोचते हैं कि इतने वर्षों बाद राजनीति में इमानदारी और देश के प्रति प्रेम नेताओं के अंदर देखा गया है, जो कि समाज को पूरी तरह बदल सकता है, लोग यह भी सोचते हैं कि यह सरकार और 15-20 साल चल जाए तो इस देश का कायापलट हो सकता है और ऐसे सोच वालों की संख्या देश में लगभग 70% से ज्यादा है, देश में कई तरह के राजनीतिक दल है, कुछ राजनीतिक दलों ने तो इस देश की राजनीति पर मानों केवल राज किया है लोगों की सोच ऐसे राजनीतिक दलों के प्रति नकारात्मकता को दर्शाता है।

वक्त चाहे जैसा भी हो, लोग बदलाव चाहते, लोग दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहते हैं और उसके लिए उन्हें हर वह सुविधा का अभाव होता है, जिसे पूरा करने की जिम्मेदारी सरकार की होती है, अब चाहे वह खुद हो या जनता के आक्रोश द्वारा हो लोगों को यह बदलाव, किसी भी हाल में चाहिए, क्योंकि देश की जनता इस कदर खुद को समय के साथ ढाल चुकी है, जिससे समय के साथ-साथ उनकी ज़रूरतें भी बढ़ रही है और आने वाले समय में जब देश की जनता को ऐसा अनुभव होगा कि उनकी ही सरकार द्वारा, उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता या उनके द्वारा हमारे गॉंव, हमारे शहर का विकास नहीं हो रहा, तब यही जनता अपने अंदर की क्रोध को बाहर निकालेंगे। जिसके आक्रोश में पूरा देश हिल जाएगा, जिसकी समझ सरकार को होनी चाहिए, क्योंकि सरकार ने लोगों को डिजिटली जोड़ा है, जिससे देश की आधे से ज्यादा आबादी पूरे दुनिया में क्या चल रहा है और इस देश में क्या चल रहा है, यह भलीभांति समझती है और कहीं ना कहीं ऐसा अनुभव होता है कि अगर यह सरकार लोगों को डिजिटली जोड़ सकती है, इसका मतलब है कि भविष्य में इस सरकार द्वारा कुछ बड़ा देखने मिल सकता है जिससे देश का विकास संभव है।

हमारा भारत अलग-अलग विविधताओं वाला देश है, जहाँ पर भारत की सभ्यता पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध है, कई प्रसिद्ध हस्तियां प्रसिद्ध नेता भारत के मूल सिद्धांतों पर चलने का प्रयास करते हैं, जिससे उन्हें वह चीज अनुभव होता है, जो भारत में हमेशा से हमारे भारत

वासियों के अंदर रहा है, हमारा ही भारत है, जिन्होंने अपनी अद्भुत सोच से दुनिया को काफी कुछ दिया है, वह हमारा ही देश है, जिन्होंने गणित से लेकर अंतरिक्ष तक, भारत का नाम रोशन किया है और कई ऐसे जानकारी दुनिया को दी है, जो कि आज के समय में कोई भी नहीं कर पाता। जो लोग आज करते हैं, वह हम हजारों साल पहले कर चुके हैं, हमारे ऋषि-मुनि स्वास्थ्य और चिकित्सा में पहले ही कई उपचार ऐसे किए, जो आज के समय में स्वास्थ्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है, सर्जरी से लेकर ऑपरेशन तक भारत के मुनियों ने हजारों साल पहले ही दुनिया के सामने इसे रखा था।

भारत में आए, मुगल हो या अंग्रेज, जिन्होने कुछ ना कुछ साथ में, भारत से लेकर गए। कई ऐसी जानकारियां लेकर गए, जो कि पूरी दुनिया के लिए भविष्य में काम आने वाले थे, क्योंकि वह जानते थे, अगर कल बेहतर करना है तो, आज से ही कुछ करना होगा, अगर हमारा भारत किसी का गुलाम ना हुआ होता तो, हमारा भारत विश्व का सर्वशक्ति वाला भारत होता है। यह सभी मानते हैं, हमारे देश से विद्या और धन दोनों लूटे गए हैं, हमारे भारत की सभ्यता लोगों के मन से गायब होती जा रहीं हैं, उन्हें कभी भारत की विशेषता पता ही नहीं चली, जो काम मुगल और अंग्रेज कर रहे थे, वही काम आज हमारे नेता कर रहे हैं, अपने ही देश में रहकर, अपने देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं, कुछ नेता ऐसे ऐसो आराम वाली जिंदगी जी रहे हैं और हम बस दर्शक बनकर उस नजारे का आनंद लेते हैं।

राजनीतिक घेराव इस किताब के माध्यम से लेखक ने कई ऐसे मुद्दों पर प्रकाश डाला है, जो कि राजनीति और सामाजिक विचारों पर आधारित हैं। राजनीति देश की भलाई और समाज के लोग हमारे देश के साथ-साथ अपने और अपनी संस्कृति की रक्षा कैसे करें और उसका विकास किस प्रकार से करें। इसका इस पुस्तक में बारिकी से उल्लेख किया गया है, उस किताब के माध्यम से हर व्यक्ति अपने अंदर केवल यह चीज अनुभव करेगा कि हमारे देश में ऐसी क्या कमी है, जिससे हमारा देश आज भी वह चीज हासिल नहीं कर सका, जिस का हकदार हमारा भारत है, ऐसी क्या कमी है, जिससे हम आज भी रोजगार के लिए सरकार को कोस रहे हैं, ऐसी क्या कमी है, जिससे हम अपने शिक्षा और न्याय प्रणाली जैसे व्यवस्थाओं पर उंगली उठाते हैं, ऐसी क्या कमी है, जिससे हम आज भी धर्म के नाम पर लड़ रहे हैं और बढ़ते दुनिया के साथ खुद को समाज से पीछे छोड़ते आ रहे हैं।

इन सभी बातों से यह चीज सामने आती है कि कहीं ना कहीं हम भी गलत हैं और हमारे द्वारा चुने जाने वाले हमारी सरकार भी या तो हम गलत कर रहे हैं या तो हमारी सरकार गलत करती आ रही हैं। कहीं ना कहीं हम सो रहे हैं, लोकतंत्र होने का सही मतलब, आज हम अपने अंदर अनुभव नहीं कर रहे हैं और इस चीज का फायदा, कई राजनीतिक दलों ने उठाया है, पिछले कई वर्षों की राजनीति के दौरान हमने कई ऐसे घटनाओं को होते हुए देखा है, कई ऐसे मुद्दों पर बहस करते देखा है और सिर्फ देखा ही है, उसे कभी समझा नहीं है, अगर हम समझते तो हमारे

हालात ऐसे नहीं होते हैं। हमें हर हाल में जागरूक होना होगा, अगर हम जागरूक नहीं रहेंगे तो, हमारी स्थिति कभी नहीं बदलेगी। हमें अपनी सोच हमारे वोट के माध्यम से दिखना चाहिए, अगर हम खुद का और हमारे देश का विकास चाहते हैं तो, हमें हमारे वोट के जरिए, हमें ऐसा नेता चुनना होगा, जिससे देश की आर्थिक स्थिति और रोजगार जैसे मुद्दे आसानी से हल हो सके।

बदलना तो हर कोई चाहता है, लेकिन बदलाव हम खुद अपने अंदर रखने के लिए सक्षम नहीं है, यह हम सभी को मानना होगा की हमारे स्थिति के हम खुद जिम्मेदार हैं। आज भले ही हमारे देश में कई वर्षों से विकास हो रहा है, किंतु कहीं ना कहीं आज भी धर्मों वाली राजनीति हमें देखने मिल रही है, कुछ विपक्षी पार्टियां मिलकर धर्म की राजनीति करने में हमेशा आगे रहते हैं, दलित मुस्लिम ब्राह्मण जैसे शब्द हमारे जीवन में हमेशा रहेंगे और इस शब्द रहना गलत नहीं भले ही किसी की जाती हो, किसी का धर्म हो किंतु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि धर्म से पहले इंसान होता है, इंसानियत हमेशा आगे रहनी चाहिए और ऐसे राजनीतिक दलों को भी इस सिद्धांत पर चलना चाहिए कि राजनीतिक फायदे के लिए धर्मों का सहारा ना लेकर पूरी मानव जाति का कल्याण किया जा सके। जिससे देश आगे बढ़े, सत्ता के लालच में देश की जनता भी फंस जाती है, जिससे की समाज को एक गलत संदेश मिलता है और आने वाले हमारी युवा पीढ़ी भी इन्हीं संकेतों के सहारे अपना जीवन व्यतीत कर देंगे और इंसानियत से पहले

धर्म को प्राथमिकता देंगे, इस चीज के लिए बदलाव बहुत ही ज्यादा जरूरी है।